

मेरा दूसरा जन्म

लेखिका
फरहाना ताज



Published by
Madhu Dhama
(FarhanaTaj)

Banjara Hills, Hyderabad, Telangana, India

ISBN	: 978-93-84066-02-4
पुस्तक	: मेरा दूसरा जन्म : आत्मकथात्मक उपन्यास
लेखिका	: फरहाना ताज
सर्वाधिकार	: लेखिकाधीन
उर्दू संस्करण	: 2006 (संक्षिप्त मात्र 64 पृष्ठ)
हिन्दी संस्करण	: प्रथम - फरवरी 2015 (परिवर्धित संस्करण 168 पृष्ठ) : द्वितीय - फरवरी 2015, तृतीय - मार्च 2015, चतुर्थ - अप्रैल 2015, पंचम - जून 2015 : दशम - जनवरी 2017 (परिवर्धित-संशोधित 192 पृष्ठ)
मूल्य	: Hard Cover Rs. 251, Paper Back Rs. 151
प्रकाशक	: Madhu Dhama (Farhana Taj) Banjara Hills, Hyderabad, Telangana, India
प्रकाशन सहयोग	: Son of Aryawart (मेरी कहानी पर आधारित अंग्रेजी, हिन्दी फीचर फिल्म)
वेबसाइट	: sonofaryawart.in
ई-मेल	: info@sonofaryawart.in : sonofaryawart@gmail.com
ब्लॉग	: sonofaryawart.blogspot.com
यू-ट्यूब	: Son Of Aryawart
मुद्रक	: Goel Enterprises, Shahdara Delhi-32

Mera Doosra Janm

BY FARHANA TAJ (An Autobiographical Novel)

मेरा दूसरा जन्म



05 सितंबर 1980 को आंध्र प्रदेश (अब तेलंगाना) के हैदराबाद के एक प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार में जन्मीं बेगम फरहाना ताज की आस्था पवित्र वेदों में है। स्वामी दयानंद सरस्वती का अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद इन्होंने वैदिक धर्म अंगीकार किया और अपना नया नाम मधु धामा रखा।

नोट :

निश्चित रूप से तथ्यों, चित्रों और तमाम घटनाओं का सावधानी के साथ पता लगाया गया है, और कोई भी गलती न तो इरादतन और न ही जानबूझकर होगी। पारिवारिक किस्से-कहानियों, डायरियों, पुस्तकों, अखबारों और निजी साक्षात्कार एवं आपबीती घटनाओं के आधार पर लिखी गई यह पुस्तक किसी भी धर्म संप्रदाय या व्यक्ति विशेष को निशाना बनाने के मकसद से नहीं लिखी गई है, वरन एक कटु ऐतिहासिक सचाई से दुनिया को रू-ब-रू कराना है। इसलिए इसमें प्रमाणों के लिए अखबार एवं पुस्तकादि के संदर्भ भी दिए गए हैं। वैदिक धर्म अंगीकार करने वाली सार्वजनिक की जा रही इस नायिका के जन्म का और बाद में अंगीकार किया गया नया नाम वास्तविक है। इस कथा की नायिका से संबद्ध एक-दो पात्र अपने नाम सार्वजनिक नहीं करना चाहते थे, इसलिए वहाँ पर काल्पनिक नाम का सहारा लिया गया है, लेकिन इससे घटना को काल्पनिक न माना जाए। फिर भी इसे केवल सत्य घटनाओं पर आधारित एक उपन्यास ही माना जाए।

चेतावनी :

सभी चित्रों, लेखन सामग्री और प्रकाशन के संपूर्ण अधिकार सुरक्षित हैं, इसलिए लेखिका या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसका कहीं भी किसी भी भाषा में पुनः प्रकाशन या फिल्मांकन नहीं किया जा सकता।

फरहाना ताज की अन्य पुस्तकें :

घर वापसी (फरहाना ताज की आत्मकथा) (11 भाषाओं में).....	151 रुपए
वेदों में विज्ञान.....	151 रुपए
हिन्दी साहित्य का गौरवशाली इतिहास.....	180 रुपए
वेद वृक्ष की छाँव तले.....	151 रुपए
दर-दर की ठोकरें और घर वापसी.....	151 रुपए
भारत में मुस्लिम और अंग्रेज लुटेरे.....	151 रुपए
महर्षि दयानंद (सचित्र) (हिन्दी एवं उर्दू में उपलब्ध).....	51 रुपए
चतुर्दशी का चंदामामा (स.प्र. का 14वां समुल्लास) हिन्दी-उर्दू	51 रुपए
फरहाना ताज द्वारा प्रकाशित (11 भाषाओं में) सत्यार्थ प्रकाश....	100 रुपए

मेरे परिवार वाले कभी सरधना की बेगम समरू की रियासत में अच्छे पदों पर थे। मैं अपने परिवार के बारे में बताने से पहले बेगम समरू के बारे में कुछ बताना आवश्यक समझती हूँ। उत्तर प्रदेश जो कभी संयुक्त प्रांत के नाम से प्रसिद्ध था, उसमें मेरठ के नजदीक एक छोटा सा कस्बा है सरधना, जिसकी साँसों में बेनजीर खूबसूरती की मलिका बेगम समरू की रूह आज भी बसती है। बेगम समरू, यानी फरजाना, यानी जेबुन्निसा जो दिल्ली के चावड़ी बाजार के एक कोठे से निकल कर दौलत, ताक़त और शोहरत की बुलंदियों तक पहुँची और मुगलकालीन इतिहास का एक बेहद दिलचस्प पन्ना बन गईं। इस छोटे से कस्बे की 18 वीं और 19 वीं सदी की इमारतें, टूटी-फूटी सड़कें और आबोहवा अपने दामन में इतिहास का वही पन्ना समेटे हुए हैं।

फरजाना की माँ चावड़ी बाजार में तवायफ थी, जिसे बाद में मेरठ के करीब कोताना के असदखान ने अपनी रखेल बना लिया था। फरजाना का जन्म कोताना में ही 1753 में हुआ। इसके सात साल बाद ही असद की मौत हो गई और माँ एवं बेटी को दिल्ली लौटना पड़ा। दोनों कुछ दिन कश्मीरी गेट के निकट रहने के बाद जामा मस्जिद इलाके में बस गईं। उसी साल फरजाना को चावड़ी बाजार की एक तवायफ खानम जान के सुपुर्द कर उसकी माँ इस दुनिया से रुखसत हो गई। खानम जान के कोठे पर ही 1767 में फरजाना की मुलाकात भाड़े की सेना चलाने वाले वाल्टर रेनहार्ट सोम्ब्रे से हुई। उम्र में फरजाना से तीस साल बड़ा रेनहार्ट इस कमसिन सुंदरता पर फिदा हो गया। दोनों के दिल मिले और फरजाना चाँदनी चौक की रौनक को पीछे छोड़ अपने आशिक के साथ एक ऐसे लंबे सफ़र पर निकल पड़ी, जिसकी मंजिल का उसे कोई अंदाज़ा नहीं था। दोनों

लखनऊ, रोहिलखंड, आगरा, भरतपुर और डीग होते हुए आखिर में सरधना पहुँच गए। जर्मनी का रेनहार्ट 1754 में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ भारत आया था। उसकी फौज भारी रकम मिलने पर किसी के लिए भी काम करने को तैयार रहती थी। मुगल बादशाह शाह आलम के कहने पर उसने सहारनपुर के रोहिल्ला लड़ाके जाबिता खान को भी शिकस्त दी।



फरजाना

इससे खुश होकर शाह आलम ने दोआब में एक बड़ी जागीर रेनहार्ट के नाम कर दी और फिर वह सरधना में ही बस गया। लेकिन इसके पाँच साल बाद ही रेनहार्ट दुनिया से कूच कर गया और 18 यूरोपीय अफसरों और 4000 सैनिकों की उसकी फौज फरजाना के हाथों में आ गई।

शौहर के इंतकाल के तीन साल बाद फरजाना ने ईसाइयत कबूल कर ली और जोहाना नोबिलिस सोम्ब्रे बन गई। बाद में सोम्ब्रे का सोम्बर हुआ और फिर फरजाना बन गई बेगम समरू। लड़ाई के मैदान से कूटनीति के अखाड़े तक बेगम समरू की तूती बोलती थी और हालात खिलाफ होने के बावजूद वह सन् 1837 में अपनी मौत होने तक सरधना की जागीर पर काबिज रही। उसने शाह आलम की मदद कर उसका दिल जीत लिया और उसकी मुँहबोली बेटी बन गई। हुआ यह कि बघेल सिंह की अगुवाई में 30,000 सिखों ने 1783 में दिल्ली पर हमला बोल दिया और उस जगह तक पहुँच गए, जिसे अब तीस हजारी के नाम से जाना जाता है। तब बेगम समरू ने ही शाह आलम और सिखों के बीच सुलह कराई और बघेल कीमती तोहफों का खज़ाना लेकर लौट गया।

चार साल बाद नजफ कुली खान की बगावत को नाकाम करने में

भी बेगम समरू ने शाह आलम की मदद की। इसके बाद शाह आलम ने सरधना की जागीर पर रेनहार्ट की पहली बीवी के बेटे नवाब जफरयाब खान के दावे को खारिज कर दिया और बेगम समरू जायदाद की इस जंग में भी कामयाब रही। बेगम समरू की आशिकमिजाजी के भी कई किस्से मशहूर हैं, मगर उनका कोई पुख्ता ऐतिहासिक आधार नहीं मिलता। उसके दीवानों में फ्रांस के ली वसाउ और आयरलैंड के जार्ज थामस का खूब जिक्र आता है। बेगम समरू को अपनी ही फौज के अफसर ली वसाउ से 1793 में निकाह करने के बाद सैनिकों की बगावत का सामना करना पड़ा। बागी सैनिकों से घिर जाने पर वसाउ ने अपने सिर में गोली मार ली। बेगम समरू ने भी खंजर घोंप कर खुदकुशी की कोशिश की, मगर वह इसमें कामयाब नहीं हुई।

सन् 1803 में बेगम समरू ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की मुख्तारी कबूल कर ली और अपनी जागीर और अकूत जायदाद दोनों को ही बचाने में सफल रही। अब उसकी दिलचस्पी स्थापत्य की ओर हुई और उसने कई शानदार इमारतें बनवाईं। दिल्ली के चाँदनी चौक में मुगल बादशाह अकबर शाह से मिली जमीन पर उसने एक बेहद खूबसूरत हवेली बनवाई, जिसमें अब बिजली के सामान का एशिया का सबसे बड़ा बाजार भागीरथ पैलेस है। मगर उसे याद किया जाता है, सरधना के चर्च ऑफ लेडी ऑफ ग्रेसस और आसपास की इमारतों के लिए, जिनमें रोमन और मुगल स्थापत्य एक-दूसरे के आगोश में गुंथे हुए हैं।

सरधना की हर सड़क गिरजाघर तक जाती है। किसी से पूछने के लिए रुको इससे पहले ही लोग हाथ के इशारे से उस तक का रास्ता बता देते हैं। आखिर उनके कस्बे की पहचान जो इससे जुड़ी है। सैकड़ों पॉवरलूम की कभी नहीं रुकने वाली धकधक के साथ यह गिरजाघर भी उनके दिलों में हमेशा के लिए समाया हुआ है।

उत्तर भारत के इस सबसे बड़े गिरजाघर को बनाने में लगभग 11 साल और चार लाख रुपए लगे और यह 1822 में बन कर तैयार हुआ। इसके आर्किटेक्ट इटली के अंतोनियो रेगेलिनी थे और इसमें रोम के सेंट पीटर्स के अलावा मुगल स्थापत्य की छाप साफ दिखाई देती है। पहले यह

गिरजाघर कैथेड्रल था, मगर 1961 में इसे पोप से माइनर बेसिलिका का दर्जा मिल गया। इसे बनाने के लिए जिस जगह से मिट्टी निकाली गई, वहाँ दो सुंदर तालाब बन गए हैं। अहाते के गेट से गिरजाघर की दूरी तकरीबन 100 मीटर है। रास्ता आम के बगीचे को चीरता हुआ गुजरता है। इसके दोनों तरफ ईसा मसीह की सलीब यात्रा के 14 मुकामों को सफेद मूर्तियों के जरिए दिखाया गया है। रास्ता अपने दोनों हाथ फैलाए ईसा मसीह की एक मूर्ति के सामने जाकर खत्म होता है। लेकिन गिरजाघर का मुख्य द्वार इसके सामने नहीं है। इस दरवाजे तक पहुँचने के लिए दाहिनी ओर मुड़ कर जाना होता है।

गिरजाघर को सामने से कुछ फासले से देखने पर ही उसकी मुकम्मल खूबसूरती का अहसास होता है। लगता है जैसे बेगम समरू का सादगी से भरा अभिजात हुस्न आँखों के सामने बिखरा पड़ा हो। सामने का बरामदा 18 खंभों पर टिका हुआ है। छत पर बने तीन गुंबदों में बीच वाला बड़ा है और उसके आजूबाजू वाले छोटे। पीछे से दो मीनारें आसमान में सूराख करने के लिए उचक रही हैं। गुंबदों और मीनारों पर लगे धातु के गोले और क्रास इतने साल बीत जाने के बावजूद सूरज की रोशनी में चेहरे पर सुनहरा आईना चमकाते हैं।

अंदर घुसते ही ठीक सामने एक बड़ा चबूतरा है, जिस पर मदर मैरी अपने शिशु को गोद में लिए हैं। इसके नीचे सलीब पर ईसा मसीह की मूर्ति है। चबूतरा और उसके आसपास का हिस्सा राजस्थान से लाए गए संगमरमर से बना है। उस पर रंगीन पत्थरों से फूल उकेरे गए हैं। दोनों तरफ दो और चबूतरे हैं, जिनमें से एक पर लेडी ऑफ ग्रेसिस और दूसरे पर ईसा मसीह की मूर्ति है। लकड़ी पर चुनींदा रंगों से बनी लेडी ऑफ ग्रेसिस की मूर्ति इटली से लाकर 1857 में इस गिरजाघर में लगाई गई थी।

इन चबूतरों पर गुंबदों के रोशनदानों से छन कर आती सूरज की रोशनी में मूर्तियाँ और मेहराबों की पच्चीकारी चमक उठती है। गिरजाघर में संगमरमर और रंगीन पत्थरों के बेहतरीन इस्तेमाल को देख कर अचानक ही ताजमहल आँखों के सामने कौंध उठता है। बड़े चबूतरे की बाईं ओर बेगम समरू की कब्र है, जिस पर 8 फीट का संगमरमर का

स्मारक है, जिसे इटली के मशहूर मूर्तिकार अदामो तादोलीनी ने बनाया था। इसकी चोटी पर बेगम समरू खास मुस्लिम अंदाज में बैठी हैं। उसके नीचे बेगम के सौतेले नाती और वारिस डेविड आक्टरलोनी डाइस सोम्ब्रे और तीन सलाहकारों की मूर्तियाँ हैं। सबसे नीचे खड़ी छह मूर्तियाँ निडरता, ज्ञान, तसल्ली और संपन्नता की प्रतीक हैं। ईसाई बनने के बाद भी बेगम समरू तमाम जिंदगी अपनी इस्लामी जड़ों से नाता नहीं तोड़ सकी। जिस्म पर दिल्ली की नजाकत ओढ़े हिन्दुस्तान की इस पहली ईसाई जागीरदार का दिल किसी सूफी फकीर की तरह था। क्रिसमस के मौके पर सरधना में होने वाले तीन दिनों के जश्न में भोज के अलावा नाचगाना, आतिशबाजी और मुशायरा भी शामिल रहता था। फरसू के नाम से लिखने वाले फ्रांज गोटलिएब कोहेन समेत उसकी फौज के तीन यूरोपीय कमांडर तो उर्दू में शायरी भी करने लगे थे।

बेगम समरू की जागीर में हिंदू, मुस्लिम और ईसाई के बीच कोई फर्क नहीं था। क्रिसमस के अलावा ईद, दशहरा, दिवाली और होली का त्यौहार भी धूमधाम से मनाया जाता था। सरधना का गिरजाघर अब भी मजहबों के बीच भाईचारे का उसका पैगाम देता है। इसमें हर मजहब के लोग लेडी ऑफ ग्रेसस की मूर्ति के आगे सिर झुका कर मन्नत माँगने आते हैं। गिरजाघर की बगल में जिस इमारत में कभी बिशप रहा करते थे, वह अब लड़कियों का स्कूल है। अहाते के ठीक सामने बने बेगम के पुराने महल में अब सेंट जोस सेमीनरी चलती है। यह महल रेनहार्ट को सरधना की जागीर मिलने से पहले का है। बेगम समरू सरधना आने से लेकर अपने इंतकाल के कुछ पहले तक इसी महल में रही। उसने अपने लिए जो नया महल बनवाना शुरू किया था, वह उसके गुजरने से एक साल पहले ही तैयार हो सका। मुगल शैली में बने पुराने महल का बरामदा काफी शानदार है। वक्त के साथ की गई तब्दीलियों के बावजूद इस महल के पुराने वैभव को महसूस किया जा सकता है। महल के तहखाने में कमरे बने हैं, जिनमें गर्मी के दिनों में बेगम और उसका परिवार रहा करता था। लेकिन अब सरधना में जमीन में पानी का स्तर बढ़ जाने की वजह से इनका इस्तेमाल नहीं किया जाता। मॉनसून में इन कमरों में पानी भर जाता

है और सीलन तो समूचे साल ही बनी रहती है। नए महल में अब इंटर कॉलेज चलता है। यूनानी शैली में बने इस महल में बेगम के गुसलखाने खासतौर से देखने लायक हैं। इनकी संगमरमर की दीवारों पर नफीस पच्चीकारी है। लेडी फारेस्टर अस्पताल और अंतोन कोठी बेगम से सीधे तौर पर रिश्ता नहीं रखने के बावजूद उनकी यादों से जुड़े हैं। अस्पताल को डाइस की बीवी ने बेगम समरू के धन से बनवाया था और रेगेलिनी के बंगले अंतोन कोठी का इस्तेमाल चर्च से जुड़े लोगों की रिहाइश के लिए किया जाता है। सरधना की रूह तक उतरने के लिए इन सबके अलावा कैथोलिक कब्रगाह पर भी एक नजर डालना आवश्यक है। इसमें रेनहार्ट और रेगेलिनी के परिवारवालों के अलावा बेगम का दूसरा शौहर वसाउ भी दफन है। नजदीक ही कर्नल जान रेमी सालेउर की कब्र भी है, जिसने 1795 में सैनिकों की बगावत के दौरान बेगम समरू का साथ दिया था। बेगम के खानदान के लोगों की कब्रों पर बने मकबरो को देख कर लगता है कि किसी जमाने में वे बहुत ही खूबसूरत रहे होंगे, मगर अब उनकी हालत एकदम खस्ता है।

कब्रों के अंदर केवल मुर्दे नहीं सोते, बल्कि जिंदगियों से जुड़ी कई जिंदा कहानियाँ भी दफन होती हैं। लेकिन इन कब्रों में से ज्यादातर पर लिखी इबारत को पढ़ पाना अब मुमकिन नहीं है। इन टूटी-फूटी कब्रों के बीच से गुजरते हुए जिंदगी की नश्वरता का आभास होता है।¹ इस सचाई से रूबरू कराने के लिए ही मेरी कहानी बेगम समरू की मौत से ही शुरू होती है।

1836 बेगम समरू की मौत के बाद अंग्रेजों के खिलाफ सरधना और उसके आसपास के गाँवों में क्रान्ति की मशाल जलाने वाले लोगों में मेरे प्रपितामह रहमत नूर रिज़वी भी एक थे। यह क्रान्ति 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से ठीक 21 साल पहले शुरू हुई थी और 21 साल तक ही इसकी चिंगारियाँ सुलगती रही। संयुक्त प्रांत के बाघप्रस्थ (बागपत क्षेत्र) में इस क्रान्ति ने सबसे उग्र रूप धारण किया था।²

1. बेगमों की ऐतिहासिक प्रेम कथाएँ, तेजपाल सिंह धामा, सूर्य भारती प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ 132

2. सरधना का इतिहास, महेद्र नारायण शर्मा, पृष्ठ 45

बेगम के राजस्व मंत्री जो मेरे ही पूर्वज थे, उन्होंने यहाँ के किसानों के साथ बड़ा अन्याय किया। यह क्षेत्र बेगम समरू की मृत्यु के बाद सन् 1836 में अंग्रेजों के अधीन आ गया। अंग्रेज अधिकारी प्लाउड ने जमीन का बंदोबस्त करते समय किसानों के साथ हुए अत्याचार को कुछ सुधारा, परन्तु मालगुजारी देना बढ़ा दिया। पैदावार अच्छी थी। जाट किसान मेहनती थे, सो बढ़ी हुई मालगुजारी भी देकर खेती करते रहे। खेती के बंदोबस्त और बढ़ी मालगुजारी से किसानों में भारी असंतोष था, जिसने 1857 की क्रान्ति के समय आग में घी का काम किया। शाहमल बिजरौल गाँव के एक साधारण, परन्तु आज़ादी के समर्थक क्रान्तिकारी किसान थे। वे मेरठ और दिल्ली समेत आसपास के इलाके में बेहद लोकप्रिय थे। शाहमल का गाँव बिजरौल काफी बड़ा गाँव था। सन् 1857 की क्रान्ति के समय इस गाँव में दो पट्टियाँ थी। उस समय शाहमल एक पट्टी का नेतृत्व करते थे। बिजरौल में उसके भागीदार थे चौधरी शीश राम और अन्य जिन्होंने शाहमल की क्रान्तिकारी कार्रवाइयों का साथ नहीं दिया, दूसरी पट्टी में 4 थोक थी। इन्होंने भी साथ नहीं दिया था, इसलिए उनकी जमीन जब्त होने से बच गई थी।

शाहमल की क्रान्ति प्रारंभ में स्थानीय स्तर की थी, परन्तु समय पाकर विस्तार पकड़ती गई। आस-पास के लम्बरदार विशेष तौर पर बड़ौत के लम्बरदार शौन सिंह और बुध सिंह और जौहरी, जफरवाद और जोट के लम्बरदार बदन और गुलाम भी विद्रोही सेना में अपनी-अपनी जगह पर आ जमे। शाहमल के मुख्य सिपहसलार बगुता और सज्जा थे और जाटों के दो बड़े गाँव बावली और बड़ौत अपनी जनसंख्या और रसद की तादाद के सहारे शाहमल के केंद्र बन गए। 10 मई को मेरठ से शुरू विद्रोह की लपटें इलाके में फैल गई। शाहमल ने जहानपुर के गूर्जरों को साथ लेकर बड़ौत तहसील पर चढ़ाई कर दी। उन्होंने तहसील के खजाने को लूट कर उसकी अमानत को बरबाद कर दिया। बंजारा सौदागरों की लूट से खेती की उपज की कमी को पूरा कर लिया। मई और जून में आस-पास के गाँवों में उनकी धाक जम गई। फिर मेरठ से छूटे हुए कैदियों ने उनकी फौज को

और बढ़ा दिया। उनके प्रभुत्व और नेतृत्व को देख कर दिल्ली दरबार में उसे सूबेदारी दी। 12 व 13 मई 1857 को बाबा शाहमल ने साथियों समेत बंजारा व्यापारियों पर आक्रमण कर काफी संपत्ति कब्जे में ले ली और बड़ौत तहसील और पुलिस चौकी पर हमला बोल कर तोड़फोड़ व लूटपाट की।



बिजरोल में शाहमल की प्रतिमा

दिल्ली के क्रांतिकारियों को उन्होंने बड़ी मदद की। क्रांति के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण की भावना ने जल्दी ही उनको क्रान्तिवीरों का सूबेदार बना दिया। शाहमल ने बिलोचपुरा के एक बलूची नवीबख्श के पुत्र अल्लादिया को अपना दूत बनाकर दिल्ली भेजा, ताकि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए मदद व सैनिक मिल सकें। बागपत के थानेदार वजीर खाँ ने भी इसी उद्देश्य से सम्राट बहादुरशाह को अर्जी भेजी। बागपत के नूर खाँ के पुत्र मेहताब खाँ से भी उनका सम्पर्क था। इन सभी ने शाहमल को बादशाह के सामने पेश करते हुए कहा कि वह क्रान्तिकारियों के लिए बहुत सहायक हो सकते हैं और ऐसा ही हुआ, शाहमल ने न केवल अंग्रेजों के संचार साधनों को ठप किया, बल्कि अपने इलाके को दिल्ली के क्रान्तिवीरों के लिए आपूर्ति क्षेत्र में बदल दिया।

अपनी बढ़ती फौज की ताकत से उन्होंने बागपत के नजदीक यमुना पर बने पुल को नष्ट कर दिया। उनकी इन सफलताओं से उन्हें 84 गाँवों का आधिपत्य मिल गया। उसे आज तक देश खाप की चौरासी कह कर पुकारा जाता है। वह एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में संगठित कर लिया गया और इस प्रकार वह जमुना के बाएँ किनारे का राजा बन बैठा, जिससे कि दिल्ली की उभरती फौजों को रसद जाना कतई बंद हो गया और मेरठ के क्रान्तिकारियों को मदद पहुँचती रही। इस प्रकार वह एक छोटे किसान से बड़े क्षेत्र के अधिपति बन गए।

कुछ अंग्रेजों जिनमें हैवेट, फारेस्ट ग्रांन्हीर, वॉटसन कोर्रेट, गफ और थॉमस प्रमुख थे, को यूरोपियन फ्रासू जो बेगम समरू का दरबारी कवि भी था, ने अपने गाँव हरचंदपुर में शरण दे दी। इसका पता चलते ही शाहमल ने निरपत सिंह व लाजराम जाट के साथ फ्रासू के हाथ पैर बांधकर काफी पिटाई की और बतौर सजा उसके घर को लूट लिया। बनाली के महाजन ने काफी रुपया देकर उसकी जान बचायी। मेरठ से दिल्ली जाते हुए डनलप, विलियम्स और ट्रम्बल ने भी फ्रासू की रक्षा की। फ्रासू को उसके पड़ोस के गाँव सुन्हैड़ा के लोगों ने बताया कि इस्माइल, रामभाई और जासूदी के नेतृत्व में अनेक गाँव अंग्रेजों के विरुद्ध खड़े हो गए हैं। शाहमल के प्रयत्नों से हिंदू व मुसलमान एक साथ मिलकर लड़े और हरचंदपुर, ननवा काजिम, नानूहन, सरखलान, बिजरौल, जौहड़ी, बिजवाड़ा, पूठ, धनौरा, बुढ़ैरा, पोईस, गुराना, नंगला, गुलाब बड़ौली, बलि बनाली (निम्बाली), बागू, सन्तोखपुर, हिलवाड़ी, बड़ौत, खेकड़ा, औसख, नादिर असलत और असलत खर्मास गाँव के लोगों ने उनके नेतृत्व में संगठित होकर क्रांति का बिगुल बजाया।

कुछ बेदखल हुए जमींदारों ने जब शाहमल का साथ छोड़कर अंग्रेज अफसर डनलप की फौज का साथ दिया, तो शाहमल ने 300 सिपाही लेकर बसौड़ गाँव पर कब्जा कर लिया। जब अंग्रेजी फौज ने गाँव का घेरा डाला तो शाहमल उससे पहले गाँव छोड़ चुका था। अंग्रेज फौज ने बचे सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया और 8000 मन गेहूँ जब्त कर लिया। इलाके में शाहमल के दबदबे का इस बात से पता लगता है कि अंग्रेजों को इस अनाज को मोल लेने के लिए किसान नहीं मिले और न ही किसी व्यापारी ने बोली लगाई। गाँव वालों को सेना ने बाहर निकाल दिया पर दिल्ली से आये दो गाजी एक मस्जिद में मोर्चा लेकर लड़ते रहे और सेना नाकामयाब रही। शाहमल ने यमुना नहर पर सिंचाई विभाग के बंगले को मुख्यालय बना लिया था और अपनी गुप्तचर सेना कायम कर ली। हमले की पूर्व सूचना मिलने पर एक बार उन्होंने 129 अंग्रेजी सैनिकों की हालत खराब कर दी थी। पगड़ी बाँधने की प्रथा व्यक्ति को आदर देने की प्रथा ही नहीं थी, बल्कि उन्हें नेतृत्व प्रदान करने की संज्ञा भी थी।

शाहमल ने इस प्रथा का पूरा उपयोग किया। शाहमल बसौड़ गाँव से भाग कर निकलने के बाद दूसरे गाँवों में गया और करीब 50 गाँवों की नई फौज बनाकर मैदान में उतर पड़ा। दिल्ली दरबार और शाहमल की आपस में उल्लेखित संधि थी। अंग्रेजों ने समझ लिया कि दिल्ली की मुगल सत्ता को बर्बाद करना है, तो बाबा शाहमल की शक्ति को नष्ट करना आवश्यक है। उन्होंने शाहमल को जिन्दा या मुर्दा उसका सर काटकर लाने वाले के लिए 10000 रुपये इनाम घोषित किया। डनलप जो कि अंग्रेजी फौज का नेतृत्व कर रहा था, को शाहमल की फौजों के सामने से भागना पड़ा। छपरा गाँव के त्यागियों, बसोद के जादूगर और बिचपुरी के गूर्जरी ने भी शाहमल के नेतृत्व में क्रांति में पूरी शिरकत की। अम्हेड़ा के गूर्जरी ने बड़ौत व बागपत की लूट व एक महत्वपूर्ण पुल को नष्ट करने में हिस्सा लिया। सिसरौली के जाटों ने शाहमल के सहयोगी सूरजमल की मदद की, जबकि दाढ़ी वाले सिख ने क्रान्तिकारी किसानों का नेतृत्व किया।

जुलाई 1857 में क्रान्तिकारी नेता शाहमल को पकड़ने के लिए अंग्रेजी सेना संकल्पबद्ध हुई पर लगभग 7 हजार सैनिकों, सशस्त्र किसानों व जमींदारों ने डटकर मुकाबला किया। शाहमल के भतीजे भगता के हमले से बाल-बाल बचकर सेना का नेतृत्व कर रहा डनलप भाग खड़ा हुआ और भगता ने उसे बड़ौत तक खदेड़ा। इस समय शाहमल के साथ 2000 शक्तिशाली किसान मौजूद थे। गुरिल्ला युद्ध प्रणाली में विशेष महारत हासिल करने वाले शाहमल और उनके अनुयायियों का बड़ौत के दक्षिण के एक बाग में खाकी रिसाला से आमने-सामने घमासान युद्ध हुआ।

डनलप शाहमल के भतीजे भगता के हाथों से बाल-बाल बचकर भागा, परन्तु शाहमल जो अपने घोड़े पर एक अंगरक्षक के साथ लड़ रहा था, फिरंगियों के बीच घिर गया। उसने अपनी तलवार के वो करतब दिखाए कि फिरंगी दंग रह गए। तलवार के गिर जाने पर शाहमल अपने भाले से दुश्मनों पर वार करता रहा। इस दौर में उसकी पगड़ी खुल गई और घोड़े के पैरों में फँस गई, जिसका फायदा उठाकर एक फिरंगी सवार ने उसे घोड़े से गिरा दिया। अंग्रेज अफसर पारकर, जो शाहमल को पहचानता था, ने शाहमल के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करवा दिए और उसका

सर काट कर एक भाले के ऊपर टँगवा दिया। फिरंगियों के लिए यह सबसे बड़ी विजय पताका थी। डनलप ने अपने कागज़ात पर लिखा है कि अंग्रेजों के खाकी रिशाले के एक भाले पर अंग्रेजी झंडा था और दूसरे भाले पर शाहमल का सर टाँगकर पूरे इलाके में परेड करवाई गई। चौरासी गाँवों के देश की किसान सेना ने फिर भी हार नहीं मानी और शाहमल के सर को वापिस लेने के लिए सूरजमल और भगता स्थान-स्थान पर फिरंगियों पर हमला करते रहे, इसमें राजपूतों और गूर्जरो ने भी बढ़-चढ़ कर साथ दिया। शाहमल के गाँव वाले सालों तक युद्ध चलाते रहे।

21 जुलाई 1857 को तार द्वारा अंग्रेज उच्चाधिकारियों को सूचना दी गई कि मेरठ से आयी फौजों के विरुद्ध लड़ते हुए शाहमल अपने 6000 साथियों सहित मारा गया। शाहमल का सिर काट लिया गया और सार्वजनिक रूप से इसकी प्रदर्शनी लगाई गई। पर इस बलिदान ने क्रान्ति को और मजबूत किया तथा 23 अगस्त 1857 को शाहमल के पौत्र लिज्जामल जाट ने बड़ौत क्षेत्र में पुनः जंग की शुरुआत कर दी। अंग्रेजों ने इसे कुचलने के लिए खाकी रिसाला भेजा, जिसने पाँचली बुजुर्ग, नंगला और फुपरा में कार्रवाई कर क्रान्तिकारियों का दमन कर दिया। लिज्जामल को बंदी बना कर साथियों सहित, जिनकी संख्या 32 बताई जाती है, को फाँसी दे दी गई। शाहमल मैदान में काम आया, परन्तु उसकी जगाई क्रान्ति के बीज बड़ौत के आस-पास प्रस्फुटित होते रहे। बिजौरौल गाँव में शाहमल का एक छोटा सा स्मारक बना है, जो देश को उनके बलिदान की याद दिलाता रहता है।¹

3

तोमर शिरोमणि बाबा शाहमल के बलिदान के बाद दाहिम्म (धामा) गौत्र के जाटों ने फिरंगियों के दाँत खट्टे करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी। इतिहास में दाहिम्माओं की भूमिका² बड़ी ही गौरवशाली रही है। अपनी बात आगे बढ़ाने से पहले मैं आपको दाहिमाओं के बारे में भी थोड़ा

1. मंगल पांडे, अवधेश कुमार चौबे, धीरज पाकेट बुक्स, मेरठ

2. पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता, तेजपाल सिंह धामा, पृष्ठ 124

बताना चाहती हूँ। दरअसल महर्षि पौलस्त्य और दधिमाता की संतान दाहिम्म के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। राजस्थान के जोधपुर जिले के गोठ और मांगलोद के बीच आज भी दाहिम्माओं की आदि माता दधिमाता का पावन मंदिर है। इस कारण यह क्षेत्र दधिमति क्षेत्र कहा जाता है। इसी वंश के वीर पुरुष कैमास को पृथ्वीराज का सेनापति होने का गौरव प्राप्त हुआ। पृथ्वीराज ने किसी कारणवश कैमास को मृत्यु दंड दे दिया था, तब उसके परिवार वाले पहले बयाना और फिर दक्षिण दिशा में चले गए थे। लेकिन जब पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी का अंतिम युद्ध हुआ, तो कैमास के परिजनों ने इन्द्रप्रस्थ का रुख किया और स्त्री व बालकों को छोड़कर परिवार के समस्त पुरुष पृथ्वीराज की सेना में भरती हो गए। पृथ्वीराज को बंदी बनाए जाने के बाद इन्हें भी बंदी बना लिया गया और एक टुकड़ी के साथ गुलाम बनाने के लिए विदेश ले जाया जा रहा था, तब सिकंदरपुर नामक खेड़े में दाहिमाओं ने विद्रोह करके बहुत से मुस्लिम आक्रान्ताओं को मार गिराया। सिकंदरपुर की आबादी भी मुस्लिम थी, वह खेड़ा भी तहस-नहस कर दिया गया और फिर दाहिमा वहाँ से यमुना के किनारे भयंकर वनों में चले गए। वे जंगल उन दिनों बेहटा के नाम से प्रसिद्ध थे। उनमें शेर आदि भी रहते थे। बेहटा के जंगल में दाहिमाओं का मुख्य कर्म कृषि, फलोत्पादन एवं गोपालन था। एक बार दाहिमाओं का मुखिया अपनी गऊओं को चराता हुआ रास्ता भटक गया और बहुत दूर निकल गया। उसके पास बहुत ही उत्तम नस्ल की गऊएँ थी। एक खेड़े के कुछ लोगों ने दाहिमाओं के मुखिया को मारकर सैनी वाले कुएँ में डाल दिया और उसकी गऊओं को अपने कब्जे में कर दिया। उस ग्वाले के साथ एक कुत्ता भी आया था। उस कुत्ते ने अपने स्वामी को बचाने के लिए बहुत प्रयास किया, लेकिन सफल न हो सका। अंत में कुत्ता किसी तरह बेहटा के जंगलों में पहुँचा और वहाँ एक समझदार व्यक्ति की धोती पकड़कर खींचने लगा। कई लोगों ने इस घटना को देखा और मुखिया के घर न लौटने की चर्चा तो हो ही रही थी, इसलिए वह समझ गया कि यह कुत्ता मुखिया के बारे में अवश्य ही कुछ जानता है। लोग इकट्ठा हुए और उस कुत्ते के साथ चल दिए। सैनी खेड़े में सैनी वाले कुएँ पर कुत्ता उन्हें ले आया, तो उन्हें अपना मुखिया कुएँ में मरा हुआ मिला।

दाहिमा तब तो बेहटा वापस चले गए, लेकिन फिर पूरी तैयारी के साथ आए, वहाँ आसपास सात खेड़े थे। सातों खेड़ों की सारी आबादी को मार गिराया, लेकिन एक ब्राह्मण परिवार छोड़ा था। रूद्ध, ददवाड़िया और मुंडाला तीन सगे भाई थे, उन्होंने यहीं रहने का निर्णय लिया तो, सूम, धाती आदि वीरों ने भी यहीं डेरा डाल लिया और सात खेड़ों को नष्ट करने के स्थान पर एक नए नगर खेकड़ा को बसाया।

खैर! बात चल रही थी बाबा शाहमल के बलिदान के बाद की। तो बाबा शाहमल के बलिदान के बाद खेकड़ा के चौधरी सूरज मल ने यहाँ की पट्टी रूद्ध के मुखिया चौधरी साहिब सिंह के साथ मिलकर बागियों का नेतृत्व कर फिरंगियों के दाँत खट्टे कर दिए थे। बागियों ने अंग्रेज अफसरों की पत्नियों को बंधक बनाकर खेतों में काम कराया था। साहिब सिंह आंग्ल औरतों को बंधक बनाने के विरोध में थे, इसलिए उन्होंने इस कार्य में उनका साथ नहीं दिया, लेकिन कई गौरों को मौत के घाट उतार दिया। नारी की प्रतिष्ठा के प्रश्न पर साहिब सिंह दाहिम्म ने क्रान्ति के लिए अपना अलग ही रास्ता चुना था। लेकिन सूरजमल अंग्रेजों का नामोनिशान मिटाना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने अंग्रेज औरतों को भी बंधक बनाया। खेकड़ा के बीबीसर तालाब पर उन्होंने बंधक बनाई गयी ब्रिटिश अफसरों की पत्नियों से खेतों पर काम कराया और इसका कड़ा विरोध करने पर एक दर्जन से अधिक अंग्रेज सैनिकों को मार डाला। तत्पश्चात अंग्रेजी अफसरों ने योजनाबद्ध ढंग से हमला कर सूरजमल समेत इनके कुनबे के सुरता, हरसा, राजे और भरता समेत 13 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। इनकी जमीन, मकान आदि कुर्क कर सभी को बागी घोषित करते हुए फाँसी की सजा सुनाई गई। चौधरी सूरज मल खेकड़ा की पट्टी चक्रसैनपुर के रहने वाले किसान थे। उनका सोलह परिवार का बड़ा कुनबा था, जिसके वह मुखिया थे।

इसी गाँव के महारम पहलवान उन दिनों देशभर में कुश्ती के कारण बड़े ही प्रसिद्ध थे। इन क्रान्तिकारियों को फाँसी देने से पूर्व महारम पहलवान को अंग्रेजों के गायब दो बच्चे मिल गए। दरअसल इन बच्चों को साहिब सिंह ने मारने नहीं दिया था, क्योंकि उनकी आयु बहुत छोटी

थी। इन्हीं बच्चों को महारम ने वापस लौटाने के एवज में सभी की फाँसी की सजा माफ़ करने की माँग की। अंग्रेज अफसरों ने अन्य सभी की फाँसी तो माफ कर दी, लेकिन सूरजमल की मौत की सज़ा माफ करने को इंकार कर दिया। पट्टी चक्रसैनपुर एवं रूद्ध की काफी भूमि अंग्रेजों ने अनाधिकार चेष्टा करके मुंडालों को बच्चे लौटाने की एवज में प्रदान कर दी। साहब सिंह को छोड़ दिया गया, क्योंकि उसने मासूम बच्चों को मौत के घाट नहीं उतारा था।

4

‘खलक खुदा का! मुल्क बादशाह का!!

राज महारानी लक्ष्मीबाई का!!!’

1857 में यही नारा गूँजा था सारे भारत में, क्योंकि देश अंग्रेजों की गुलामी से पिंड छुड़ाने के लिए बेचैन हो उठा था। मेरे प्रपितामह रहमत नूर रिज़वी के परिवार वाले समरू बेगम के शासन में काफी प्रताड़ित हुए थे। इसलिए प्रपितामह समरू बेगम के शासन के समाप्त होने के बाद रियासत सरधना में एक मुस्लिम शासन कायम करना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने 1857 में किशोर अवस्था में ही इस क्रांति का शंखनाद किया था। लेकिन नूर रिज़वी साहब को न तो मुल्क बादशाह का पसंद था और न ही राज महारानी लक्ष्मीबाई का, वे तो सरधना के आसपास बेगम समरू की करीब 20 साल पहले ही मृत हो चुकी रियासत की जगह एक नई रियासत की नींव डालकर नए राजवंश का सूर्य उदय करना चाहते थे। उन्होंने इसी गर्ज से क्रांति में भाग लिया था।

क्रांति को सफल बनाने के लिए देशभर में एक गुप्त संगठन कायम किया गया। महीनों पहले आजादी की लड़ाई का बुलावा दूतों द्वारा हर जगह भेजा गया। एक अन्य क्रान्तिकारी अज़ीमुल्ला खाँ ने दिल्ली के बादशाह को भी इस सम्बन्ध में कई पत्र लिखे।

अवध के नवाब के वज़ीर अली नक़ी खाँ को दूत के रूप में अज़ीमुल्ला खाँ ने फ़ौजी छावनियों में भेजा। उन दिनों मूलतः गुजरात में जन्मा एक साधु भी क्रान्ति का प्रचार कर रहा था। उनकी प्रेरणा से हिन्दू सिपाहियों



अपने लश्कर के साथ नूर रिजवी साहब

व अधिकारियों ने गंगाजल लेकर क्रान्ति करने का प्रण लिया। मुसलमानों ने कुरान हाथ में उठाकर प्रतिज्ञाएँ कीं।

पूरे देश में इतनी बड़ी क्रान्ति के लिए अजीमुल्ला ने धन इकट्ठा करना शुरू कर दिया। लोग जगह-जगह इस काम के लिए धन जमा करने लगे। मेरे प्रपितामह ने भी क्रान्ति की सफलता के लिए काफी धन इकट्ठा किया, यहाँ तक कि उन्होंने अपनी बेगम साहिबा के गहने भी बेच डाले थे, क्योंकि वे चाहते थे कि यह क्रान्ति हर हाल में सफल हो और वे एक नई रियासत के मालिक बन जाएँ।

उनके जैसे ही कई अन्य क्रान्तिकारी भी थे, जो केवल स्वार्थसिद्धि के लिए इस योजना को सफल बनाने हेतु जीतोड़ मेहनत कर रहे थे और इस योजना के लिए ज़रूरत से ज़्यादा धन इकट्ठा कर लिया गया था। क्रान्ति के पाँच मुख्य केन्द्र बनाए गए, दिल्ली, बिठूर, कोलकाता, लखनऊ और सतारा। अंग्रेजों की नाक के नीचे खुले तौर पर ज़ोरों के साथ युद्ध की तैयारियाँ होती रहीं और अंग्रेजों को आखिर तक इसका पता न चला। अजीमुल्ला ख़ाँ ने गुप्तचरों का सही चुनाव भी करना ज़रूरी समझा। ये लोग अंग्रेजों की गतिविधि की सूचनाएँ रोज़ केन्द्रों को देते रहते। धीरे-धीरे और भी छोटे केन्द्र बनाए गए, क्योंकि काम इतना ज़्यादा बढ़ गया था

कि और केन्द्र खोलना बहुत ज़रूरी था। उसने सरकारी कर्मचारियों को भी क्रान्ति के लिए तैयार कर लिया। बावर्ची, भिश्ती, थाने के सिपाही, दरोगा तथा अन्य नौकरों को अपने पक्ष में कर लिया गया। थानों में ऐसा कोई काम करने वाला बाक़ी न बचा, जो स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लेने के लिए प्रतिज्ञा से बंधा न हो। 31 मई, 1857 को रविवार के दिन क्रान्ति शुरू करने का ऐलान जारी हो गया था। हर केन्द्र के मुख्य नेताओं को तथा पलटन के बड़े देशी अधिकारियों को यह आदेश पहुँचा दिया गया था। लेकिन मेरठ में एक घटना घट गई थी। एक साधु, जो बाद में दयानंद सरस्वती¹ के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिसने आर्य समाज नामक संगठन बनाया, वह उन दिनों लोगों को प्याऊ पर पानी पिलाया करता था। एक दिन कुछ सैनिक जब प्याऊ पर पानी पीने आए तो उस साधु ने उन्हें पानी पिलाने से मना कर दिया।

“हम तुम्हें पानी नहीं पिला सकते!”

“हम अछूत नहीं, हम तो ब्राह्मण हैं।”

“तुम ब्राह्मण नहीं हो सकते, तुम तो अछूतों के अछूत हो!”

“क्या मतलब?” मंगल पांडे² नामक सैनिक ने पूछ ही लिया था।

“तुम लोग गाय की चर्बी वाले कारतूस मुँह से काटते हो।”

“क्या?” सुनकर अवाक् रह गया था मंगल पांडे।

यह बात चारों ओर फैल गई और सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूस का बहिष्कार कर दिया। मेरठ में लगभग 85 सिपाहियों ने कारतूस को स्पर्श करने से भी इंकार कर दिया, फलस्वरूप उनका कोर्ट मार्शल हुआ। नौ मई के दिन उन्हें तोपखाने के आमने-सामने खड़ा किया गया। वहीं पर गोरी फौज भी शस्त्र से लैस होकर खड़ी थी। देशभक्त भारतीय सिपाहियों की वर्दियाँ उतरवा ली गई और हथकड़ी बेड़ियाँ डालकर जेल की अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया। कहते हैं, शेष भारतीय सिपाहियों को भी अपने धर्मनिष्ठ भाइयों की दुर्दशा का सिंहावलोकन करने के लिए बुला लिया गया था।

1. देखें, 1857 की क्रांति और मेरठ, आचार्य दीपांकर

2. मंगल पांडे, अवधेश कुमार चौबे, आर. आर. प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली, पृष्ठ 32

एक भाई अपनी आँखों के सामने दूसरे भाई की दुर्दशा का विदारक नाटक कब तक देख सकता है! आखिर इस संसार में कोई भी आदमी अमर बनकर थोड़े ही आया है। जब सबों को एक न एक दिन जाना ही है, तो फिर अन्याय को सहन करने से क्या लाभ? देशभक्त सिपाहियों के लिए उत्सर्गत्योहार से बढ़कर दूसरा त्योहार है ही कौन। दस मई को मेरठ में सिपाही विद्रोह का बिगुल फूँका गया। भारतीय सिपाहियों ने गोरी पल्टन को गाजर-मूली की तरह काट गिराया। चारों तरफ हाहाकार मच गया। सभी गीदड़ की तरह इधर से उधर प्राणरक्षा के लिए भागने लगे। चूँकि सबसे पहले दिल्ली छावनी को सूचना दे दी गई थी, अतः दूसरे दिन मेरठ वाले तमाम सिपाही दिल्ली के लिए कूच कर गए।

संन्यासी दयानंद रानी झाँसी, तात्याँ टोपे, नाना साहब इत्यादि सभी से संपर्क बनाए हुए थे। महारानी लक्ष्मीबाई को एक-एक मिनट की सूचना मिल रही थी। तात्याँ टोपे, नाना साहब और राव साहब आदि को फुर्सत कहाँ। वे ही लोग तो एक दूसरी छावनी के बीच सूत्र स्थापित करने का काम कर रहे थे। महारानी को थोड़ी तकलीफ अवश्य हुई, क्योंकि समय से पहले विस्फोट हो गया था। फिर भी दिन दूनी रात चौगुनी इनकी सेना-शक्ति में वृद्धि हो रही थी। सिर्फ झाँसी में ही नहीं, सारे भारत में इनके कर्मठ जासूस भ्रमण कर रहे थे। चूँकि गुप्त रूप से विद्रोह की तैयारी दो दिन पहले से ही हो रही थी, अतः उसके शुभारम्भ में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं हुई। निश्चित समय पर मेरठ के भारतीय सैनिक दिल्ली पहुँच गए और विप्लव का बिगुल फूँक दिया गया।

‘हर हर महादेव!’

‘अल्ला हो अकबर!’ के नारों से दिल्ली का वातावरण गूँज उठा। कितने अंग्रेज अफसर भारतवासियों की गोली के शिकार हुए, इसका लेखा-जोखा प्रस्तुत करना असम्भव नहीं, तो सम्भव भी नहीं है। अंग्रेजी फौज को पीछे हटना पड़ा। युद्धोपरान्त विजय की दुंदुभि बजाई गई। बात की बात में दुर्दम्य अंग्रेजी शासन का पतन हुआ, मेरठ और दिल्ली की सम्मिलित भारतीय फौज ने बहादुर शाह को भारत का सम्राट घोषित किया।

21 तोपों की सलामी दी गई।

दिल्ली किले पर अधिकार प्राप्त करने के बाद उत्तरी भारत के कोने-कोने में सिपाही-विद्रोह की आग भड़क उठी। शाहमल की वीरता की गाथा हम शुरु में ही सुना चुके हैं। प्रपितामह को नवाब बनने का सपना दिन में ही पूरा होता दिखाई देने लगा था।

कानपुर की छावनी में भी विद्रोह भड़क चुका था। 31 मई के बाद विद्रोह का भीषण कार्यक्रम कुछ दिनों के लिए ठप्प हो गया। अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों की इस युद्ध-नीति को नहीं समझा। उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि अब विद्रोह की आग पूर्णतः बुझ गई; किन्तु ऐसी बात नहीं आग और अधिक सुलगती ही जा रही थी।

4 जून 1857 ई. के दिन की बात है। नाना साहब की आज्ञा हुई।

फायर आरम्भ हुआ : एक! दो!! तीन!!!

तीन फायर के बाद अंग्रेजों में हलचल मच गई। ‘बारह बजे, रात में किधर जायें। कहाँ भागें! कैसे भागें!’ अंग्रेजी फौज एवं अफसरों को आत्मसमर्पण करना पड़ा। अधिकांश अंग्रेज भारतीय सैनिकों की तलवार के शिकार हुए। सुबह होते-होते खजाना एवं शस्त्रागार पर क्रांतिकारियों का अधिकार हो गया। नाना साहब राजा घोषित किए गये। ‘नाना साहब जिन्दाबाद’ के नारों से आकाश गूँज उठा। झाँसी की छावनी इस आग से कैसे बची रह सकती थी। नवाब अली बहादुर, पीरू अली एवं सदाशिवराव ने 31 मई की सूचना लगभग पन्द्रह दिन पूर्व ही स्कीन एवं गार्डन को दे दी थी। अतः 31 मई का सामना करने के लिए वे लोग पहले से ही तैयार थे। महारानी को सिर्फ उनकी तैयारी की सूचना ही नहीं मिली थी, बल्कि मोतीबाई के द्वारा युद्ध-योजना का मानचित्र भी मिल चुका था। अतः महारानी ने अपने गुप्तचर के द्वारा झाँसी की छावनी में भारतीय सिपाहियों को सूचना भेज दी कि ‘झाँसी की छावनी में 31 मई को विद्रोह न करें। चार जून तक किसी तरह धैर्य से काम लें।’

जो समझदार सिपाही थे, वे तो रानी की नीति को समझ गए, किन्तु जो नासमझ थे, उन्हें रानी का विचार अच्छा नहीं लगा। फिर भी वे कुछ कर नहीं सके, क्योंकि उनकी संख्या बहुत कम थी।

जब 31 मई को कोई भी अशुभ घटना नहीं घटी तो अंग्रेजों को पूरा विश्वास हो गया कि झाँसी में सिपाही विद्रोह नहीं होगा। किन्तु 1 जून की रात में स्कीन को खबर मिली कि कुछ ठाकुरों ने कोंच पर अप्रत्यक्ष रूप से धावा बोल दिया है। अतः उसने कोंच की रक्षा की तैयारी कर ली जैसा कि उसने कोंच के सम्बन्ध में गवर्नर के पास पत्र भी लिखा था :

‘रात को मुझे खबर मिली कि कुछ ठाकुर लोग कोंच पर धावा करने वाले हैं। मैंने तुरन्त डनलप को सूचित किया। सवेरे ही कुछ फौज गाँव की रक्षा के लिए भेज दी। फौज के पहुँचते ही ठाकुरों का विचार बदल गया। इधर-उधर भले ही विद्रोह फैला हो, परन्तु यहाँ के लोग हमसे कभी नहीं बिगड़ेंगे।’

4 जून, 1857 ई. को झाँसी में सिपाही-विद्रोह के लक्षण प्रकट हुए। गुरबख्शासिंह नाम का एक हवलदार था। वह कुछ सैनिकों को लेकर ‘स्टार-फोर्ट’ चला गया। इस ‘फोर्ट’ का निर्माण कम्पनी सरकार ने स्वयं किया था। इसकी बनावट इतनी अच्छी थी कि लोगों ने इसे ‘तारा-गढ़’ कहना प्रारम्भ कर दिया था। गुरबख्शासिंह अपने सैनिकों के साथ अकस्मात् इस गढ़ में प्रवेश कर गए और वहाँ पर जितने शस्त्र एवं रुपये-पैसे थे, उठवाकर ले आए। बाद में तो यह क्रांति और तीव्र होती चली गई और लेकिन जितनी गति से तीव्र हुई, उतनी ही गति से इसे अंग्रेजों ने कुचल दिया।

5

बहादुरशाह जफर के बेटों को तोप से उड़ा दिया गया। निहत्थी महारानी लक्ष्मीबाई को भी बलिदान देना पड़ा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक नया जाट साम्राज्य स्थापित करने वाले बाबा शाहमल भी बलिदानी हो गए। इतिहास की इस बेरूखीपूर्ण अंगड़ाई से मेरे प्रपितामह के तो सारे सपने ही चकनाचूर हो गये। सपने ही चकनाचूर नहीं हुए, वरन् अंग्रेजों ने उन्हें जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए उनके सिर पर भारी भरकम इनाम भी रख दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रपितामह रिज्वी संयुक्त प्रांत छोड़कर किसी अज्ञात स्थान पर चले गए और फिर दक्षिण भारत के लातूर में

जाकर बस गए। कालांतर में उन्होंने हैदराबाद के निज़ाम की चाकरी कर ली और चूँकि अंग्रेजों व निज़ाम के संबंध अच्छे थे तो उन्हें न केवल माफ किया गया, वरन् उन्हें अहमदनगर जिले में चाँद पाटिल जिसे नवाब का खिताब भी दिया गया था, उनके सहायक के रूप में रखवा दिया गया। निज़ाम ने उन्हें दरअसल चाँद पाटिल के पास इसलिए छोड़ा था कि चाँद पाटिल नरम प्रकृति का आदमी था और वह लोगों से अच्छी तरह लगान नहीं वसूल पाता था। लेकिन प्रपितामह ऐसे नहीं थे, उनकी रगों में तो बाबर जैसे शहंशाहों की तरह का खून सरपट दौड़ा करता था। बहुत जल्द ही उन्होंने चाँद पाटिल के सारे कामकाज पर अधिकार कर लिया था। चाँद पाटिल के जिम्मे बस एक ही काम रहा था और वह था नए-नए घोड़ों की सवारी करना। ठीक यही शौक तो प्रपितामह को भी था, दरअसल नए-नए घोड़े चाँद पाटिल खरीदता और उनकी सवारी करने का लुत्फ प्रपितामह उठाया करते थे। हाँ चाँद पाटिल का एक और भी काम था और वह था घोड़ों के खरीदने के अलावा उन्हें जंगल में ले जाना और प्रशिक्षण देना। कभी-कभी चाँद पाटिल और प्रपितामह दोनों मिलकर घुड़सवारी पर जाया करते थे। घुड़सवारी करना वीरों को शोभा तो देता ही है और फिर मेरे प्रपितामह तो न केवल वीर थे, वरन् एक नया साम्राज्य भी स्थापित करने का सपना देखते थे। भले ही उनका वह सपना पूरा न हुआ हो, वे नवाब चाँद पाटिल की पनाहगाह में रहते हुए जागीरदार तो बन ही गए थे। लेकिन वे नौकर-चाकरों से जागीरदार कहलवाना पसंद नहीं करते थे, इसलिए खादिम उन्हें भी नवाब साहब कहकर पुकारते थे। भले ही नवाब की चाकरी में थे, लेकिन जागीरदारी भी किसी नवाबी से कम न थी। एक दिन वे चाँद पाटिल के साथ घुड़सवारी करते-करते बहुत दूर निकल गए। सच पूछिए तो रास्ता भटक गए थे वे। वे जंगलों में भटकते हुए बहुत दूर निकल चुके थे और जब थक गए तो घोड़े से उतर कर वे और चाँद पाटिल दोनों ही एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे और घोड़े को घास चरने के लिए छोड़ दिया। प्रपितामह की आँख लग गई और उनका घोड़ा और चाँद पाटिल की घोड़ी चरते-चरते उनसे दूर होते चले गए। प्रपितामह की जब आँखें खुली तो घोड़े और घोड़ी को पास न देखकर बड़े चिंतित हो गए और अपने हमसफर पशुओं की खोज में निकल

पड़े। उन्होंने जब एक बहुत ऊँचे पेड़ पर चढ़कर देखा तो उन्हें एक खेड़ा नजर आया अर्थात् कच्चे मकानों से बना हुआ कोई गाँव था। वह पेड़ से उतरकर उस गाँव की ओर चल पड़े। उस गाँव का नाम था शिरड़ी। प्रपितामह और चाँद पाटिल ने जैसे ही उस गाँव में प्रवेश किया तो उन्होंने वहाँ एक चतुर युवक को लोगों से घिरा देखा। कोई बीस वर्ष की उम्र होगी उसकी। एक तरुण, स्वस्थ, फुर्तीला तथा अति सुंदर युवक नीम के वृक्ष के नीचे समाधि में लीन दिखाई पड़ा। उसे सर्दी-गर्मी की जरा भी चिंता नहीं थी। इतनी कम उम्र में उस युवक को अति कठिन तपस्या करते देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। लोगों का कहना था कि दिन में वह साधक किसी से भेंट नहीं करता और रात में निर्भय होकर एकांत में घूमता है। गाँव के लोग जिज्ञासावश उससे पूछते थे कि आप कौन हैं और उसका कहाँ से आगमन हुआ है? उस नवयुवक के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लोग उसकी तरफ सहज ही आकर्षित हो जाते थे। वह सदा नीम के पेड़ के नीचे बैठा रहता था। यद्यपि वह देखने में नवयुवक लगता था तथापि उसका आचरण फकीरों के सदृश था। लेकिन उसको लेकर लोगों में विरोधाभास था। कई लोग उसे संत मानते थे, तो कई लोगों की दृष्टि में वह ऐसा मुस्लिम था, जिसका मकसद साम दाम दंड भेद की नीति अपनाकर लोगों का धर्म भ्रष्ट करना था। प्रपितामह और चाँद पाटिल दोनों ही बहुत परेशान थे और उनका चेहरा पसीने से तर हो गया था। उन्होंने भीड़ देखी और अपने पग रोक दिए। प्रपितामह ने भी उस युवक को देखा जो मौन बैठा था। किसी भी व्यक्ति के प्रश्न का कोई जवाब उसने नहीं दिया था, लोग आपस में कई तरह की बातें कर रहे थे। तभी चाँद पाटिल ने भीड़ की तरफ़ देखकर प्रश्न किया, “क्या इधर सफेद रंग का घोड़ा और काले रंग की घोड़ी किसी ने देखे हैं।”

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, फिर उन्होंने अपना प्रश्न आगे बढ़ाया, “मैं जागीरदार हूँ और हमारे एक घोड़ा और घोड़ी दोनों लापता हैं। अरबी नस्ल के सुंदर पशु हैं।”

भीड़ में से कई व्यक्तियों का स्वर एक साथ आया, “नहीं हमने नहीं देखा।”

जो युवक अब तक मौन बैठा था और किसी की बात का उत्तर नहीं दे रहा था, अचानक बोल पड़ा, “पशु भूखे थे, कहीं चर रहे होंगे।”

“यह तो हम भी जानते हैं!”

“और हम इससे भी आगे जानते हैं!”

“आप इससे आगे क्या जानते हैं?” प्रपितामह ने प्रश्न किया था।

“आपके घोड़े को भी बुलवा सकते हैं।”

प्रपितामह और चाँद पाटिल जो अब तक घोड़े के लिए बहुत परेशान थे, उन्होंने पूछा, “तुम बुलवा सकते हो क्या?”

“क्यों नहीं बुलवा सकता, यहीं बुलवा दूँ क्या?” उस युवक ने कहा।

“यदि बुलवा दो, तो बड़ी कृपा होगी।” प्रपितामह ने विनम्रता के साथ कहा।

युवक ने आसमान की ओर देखा और जोर से कहा सबका मालिक एक। उसी समय सामने से एक घोड़ा चलता हुआ आया। भीड़ यह सब देखकर दंग रह गई घोड़े की पहचान एकदम वैसी ही थी, जैसी उसे प्रपितामह ने बताई थी। अब प्रपितामह के मन में जिज्ञासा पैदा हुई, “यह तो आ गया मगर घोड़ी?”

“वह भी रास्ते में मिल जाएगी।”

“अच्छी बात है।” उन्होंने युवक की ओर देखा और कहा, “महानुभाव आप कौन हैं? कहाँ से आए हैं?”

“क्या आप जानते हो कि आप कौन हो और कहाँ से आए हैं?” युवक ने प्रश्न का उत्तर प्रश्न में बदल दिया।

प्रपितामह ने उत्तर में बताया, “मैं मूलतः संयुक्त प्रांत का रहने वाला हूँ, लेकिन पास के ही गाँव में चाँद पाटिल की सेवा में रहते हुए इनकी जागीरदारी में हाथ बँटाया करता हूँ। और चाँद पाटिल के बारे में तो क्या कहूँ!”

“इनके बारे में हम जानते हैं।”

“क्या जानते हैं आप इनके बारे में?”

“निज़ाम हैदराबाद एवं अंग्रेजों ने इनकी वीरता से खुश होकर इन्हें नवाब की उपाधि दी है और एक बड़ी जागीर भी, जिसकी देखभाल तुम

करते हो और गरीब किसानों को परेशान करते हुए लगान वसूली करते हो।”

“हमारे बारे में आपको किसी ने गलत बहका दिया है।”

“किसी ने बहका दिया...” एक लंबी साँस लेकर उन्होंने फिर कहा, “यह बात तो तुम जानते हो बस! इससे आगे तुम क्या ये सभी लोग भी नहीं जानते हैं कि वे कौन हैं? और कहाँ से आए हैं? और कहाँ जाएँगे लाखों लोगों में कोई एक जानता होगा कि वह कौन है?”

सारी भीड़ उसकी बातों से प्रभावित हो रही थी। युवक मुस्करा रहा था। सभी इस बात को सुन कर सच को स्वीकार कर रहे थे। प्रपितामह ने उस युवक को अपने साथ अपने घर ले जाने की बहुत मिन्नतें की, लेकिन युवक ने कहा कि हम यहीं ठीक हैं और खुश हैं। बाद में प्रपितामह ने उस युवक के बारे में एक दस्तावेज में लिखा था - वह युवक और कोई नहीं इस्लाम का एक प्रचारक था, जिसका मकसद काफिरों को अपना प्रशंसक बनाकर उन्हें अल्लाह की राह पर चलाना था।

शिरड़ी छोटा सा गाँव था। घर-घर में चर्चा उस छलिया युवक की हो रही थी। पुराने मन्दिर में नीम के नीचे बैठा युवक कोई सिद्ध पुरुष है। कोई पहुँचा हुआ सन्त है। कोई चमत्कारी पुरुष है। सारे गाँव में यही चर्चा थी। सभी उसको देखने मन्दिर की ओर आने लगे। जय-जयकार करने लगे। हिन्दू उस मुस्लिम सूफ़ी के छलावे में पूरी तरह फँस चुके थे।

कुछ समय शिरड़ी में रहकर वह तरुण फकीर किसी से कुछ कहे बिना वहाँ से चला गया और चाँद पाटिल को अतिथि सेवा करने का अवसर दिया। यह प्रपितामह की एक चाल थी, उन्होंने ही उस फकीर को वहाँ बुलाया था, ताकि चाँद पाटिल यदि उस पर श्रद्धा रखेंगे, तो सैकड़ों हिन्दुओं का आराध्य बनने और इस्लाम का उत्थान करने से उसे भला फिर कौन रोक सकता था। इसी दौरान चाँद पाटिल के बेटे का विवाह तय हो गया तो वह युवक भी विवाह में बाराती बना और बारात चली थी शिरड़ी गाँव। इस प्रकार कई वर्ष बाद चाँद पाटिल की बारात के साथ वह युवा पुनः शिरड़ी पहुँचा। बारात तो अपने ठिकाने चली गई लेकिन वह युवक बारात से बिछुड़ गया और खंडोबा के मंदिर में जा पहुँचा। उस समय

मंदिर का पुजारी म्हालसापति था। उस चतुर तरुण ने मंदिर में प्रवेश करते ही जोर से कहा, “सबका मालिक एक।”

तभी मंदिर के पुजारी का ध्यान उसकी ओर गया, तो वह अचानक ही स्वागत करते हुए बोल पड़ा, “आओ साईं।” पुजारी उसे मंदिर में ही बनी कुटिया में ले गया और चटाई बिछा दी। उधर चाँद पाटिल के बेटे की शादी हो चुकी थी, बारात विदा होने के लिए तैयार थी, लेकिन चाँद पाटिल तो उस तरुण को ही खोज रहा था, क्योंकि वह उसके आकर्षण एवं बातों में फँस चुका था। जब बारात विदा होने लगी तो चाँद पाटिल ने अपने अन्य बारातियों से कहा, “तुम जाओ, मुझे अभी यहाँ कुछ काम है।” इतना कहकर वह उस तरुण को खोजने लगा, जिसे मंदिर के पुजारी ने साईं नाम दिया था। अंततः पाटिल ने उस तरुण को खोज ही लिया, “चलिए साईं।” उसने भी यही कहा था।

“चलना तो एक दिन सबको है, जो आता है उसे चलना पड़ता है।”

“मैं उस चलने की बात नहीं, मैं तो घर चलने की बात कर रहा हूँ।”

“घर... किसका घर? मनुष्य का तो अपना यह शरीर भी नहीं होता। यह भी मिट्टी का बना हुआ है, एक दिन आत्मा इसे भी त्याग कर चली जाती है और मिट्टी का यह शरीर मिट्टी में मिल जाता है। यह शरीर तो फिर भी कुछ समय के लिए जीवित हो उठता है, लेकिन घर-हवेली तो ईंट और गारे की होती है, वे तो पहले से ही मृत हैं। फिर कहाँ चलूँ।”

“यदि आप नहीं चलेंगे तो मैं भी नहीं चलूँगा।”

“ठीक बात है, जैसी आपकी इच्छा!”

तरुण फकीर का नाम साईं बाबा पड़ गया और सदा-सदा के लिए शिरड़ी में बस गया। वे कौन थे? कुछ लोगों के अनुसार, ये सब प्रश्न अनुत्तरित हैं। लेकिन प्रपितामह ने उन्हें मुस्लिम लिखा है, जो अपने हाथ की सफाई को चमत्कार बता लोगों को बहकाते थे।

6

चाँद पाटिल भी साईं बाबा के भक्त हो गए और नवाबी या यूँ कहें कि जागीरदारी अपने पुत्र के कंधों पर डाल दी। यहीं से प्रपितामह का प्रभाव

बढ़ा और सच पूछिए तो असली जागीरदार अब प्रपितामह ही हो गए थे। एक तरफ प्रपितामह का प्रभाव बढ़ता जा रहा था, तो दूसरी तरफ साई बाबा भी प्रसिद्ध होते जा रहे थे। वे लोगों को यही शिक्षा और सन्देश देते थे कि जाति, धर्म, समुदाय, आदि व्यर्थ की बातों में ना पड़कर आपसी मतभेद भुलाकर आपस में प्रेम और सद्भावाना से रहना चाहिए, क्योंकि अल्लाह मलिक एक है।



प्रपितामह बाएं से दूसरे पीछे

श्रद्धा और सबूरी का उनका मंत्र था। उन्होंने एक बार प्रपितामह से भी कहा था, “श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवन-यापन करते हुए सबूरी (सब्र) के साथ जीवन व्यतीत करो, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुमने भक्त चाँद पाटिल की जागीरदारी पर अपना अधिकार जमा लिया है।”

“ऐसी कोई बात नहीं साई” उन्होंने जवाब दिया, “जहाँ तक चाँद पाटिल का सवाल है वे तो आपके भक्त हो गए हैं, लेकिन मैं आज तक नहीं जान पाया कि आपने उन्हें अब तक मुसलमान क्यों नहीं बनाया।”

“वे अब हिन्दू से अधिक मुस्लिमों को हृदय से लगाते हैं, उन्हें अपना भाई मानते हैं, क्या यह अल्लाह के सिद्धांतों पर ईमान लाना नहीं है।”

“हाँ है तो सही, लेकिन...”

“लेकिन-वेकिन कुछ नहीं” साई बाबा ने कहा था, “जाति, धर्म-पंथ, भेद-भाव आदि सब बातें अल्लाह ने नहीं बल्कि इंसानों द्वारा बनायी गयी हैं खुदा की नजर में न तो कोई उच्च है और न ही कोई निम्न इसलिए जो काम खुदा को भी पसंद नहीं है, वह मनुष्यों को तो करना ही नहीं चाहिए।¹ और मैं बंदों को खुदा का सही मार्ग बताता हूँ।”

1. साई बाबा : जीवनी और भजनावली, संशोधित संस्करण मधु धामा, हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ 56

साई बाबा : एक सूफी फकीर, पृष्ठ 45

“मतलब?”

“मेरे कहने का सीधा-सादा मतलब है कि जात-पाँत, धर्म, समाज आदि मिथ्या बातों में न पड़ कर अल्लाह मालिक एक मानते हुए आपस में प्रेमपूर्वक रहकर मनुष्य को जीवन व्यतीत करना चाहिए।”

“क्या शेर और गाय एक घाट पर पानी पी सकते हैं? बाबा आप सीधे-सीधे लोगों को कलमा पढ़ाकर उनका खतना क्यों नहीं करवाते?”

“क्यों नहीं पी सकते? मैं तो साफ-साफ कहता हूँ कि लोगों के विचार बदलने हैं, तो सभी के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए। गरीबों और लाचारों की यथासम्भव मदद करनी चाहिए, गरीब और बेरोजगार लोग धर्म या मजहब की राह पर चल ही नहीं सकते। उनके पास इतना वक्त ही कहाँ होता है कि वे धर्म-कर्म निभा सकें। इसलिए लाचारों की मदद करता हूँ, आप जैसे लोगों से धन लेकर...ताकि उनका विश्वास पहले मुझ पर हो, और फिर अल्लाह पर आस्था पक्की हो जाए।”

साई बाबा जो हमेशा ही यही कोशिश करते रहे कि जनमानस के हृदयपटल में से समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का नाश हो और सभी प्रेमपूर्वक रह कर जीवन का आनंद लें, लेकिन वो किन परम्पराओं को कुरीतियाँ मानते थे, यह जानना आवश्यक है। दरअसल वे हिन्दुओं की परम्पराओं पर चोट करते थे, लेकिन इस्लामिक परम्पराओं पर या तो मौन रहते थे या फिर उनका समर्थन करते थे। यहीं कुछ लोग उन्हें संदेह की दृष्टि से देखने लगे थे और जो लोग उनसे शंका समाधान चाहते थे तो कोई उत्तर न बनता देख उन्हें कह देते थे : ‘सबका मालिक एक’।

7

प्रपितामह का जीवन मस्ती से गुजरता गया। प्रपितामह में एक बुरी आदत थी और वह थी कि वे औरतों कपड़ों की तरह बदलते थे। यहाँ तक कि उन्होंने साठ साल की आयु में भी एक ऐसी युवती से जबर्दस्ती विवाह रचाया था, जिसके हिन्दू पिता प्रपितामह का कर्ज चुकाने में नाकामयाब रहे थे। लेकिन लव जिहाद की शिकार जब वह औरत पेट से थी, तो उन्हें तलाक़ दे दिया गया और लातूर की हवेली और कुछ धन उन्हें मिला, ताकि

वह अपनी शेष जिंदगी आराम से गुजार सके, क्योंकि प्रपितामह उन्हें तलाक़ देने के बाद यह भी नहीं चाहते थे कि जो औरत उनके बच्चे की माँ बनने वाली है, वह तलाक़ के बाद किसी और से निकाह पड़े। खैर उस पीड़िता ने 1902 में लातूर की हवेली में मेरे पड़दादा को जन्म दिया। पड़दादा का नाम रखा गया सय्यद अहमद ख़ान रिज़वी। वे भी बचपन से ही कम महत्वाकांक्षी नहीं थे। जिस तरह प्रपितामह शहंशाह बनने का स्वप्न देखा करते थे, ऐसा ही सपना पड़दादा ने भी एक दिन देखा था।

8

वास्तव में साईं बाबा एक सूफी संत थे। ये हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्ला अलैह की विचारधारा से प्रभावित थे। मोइनुद्दीन चिश्ती ने 12वीं शताब्दी में अजमेर में चिश्ती पंथ की शुरुआत की थी और दिल्ली से अजमेर की यात्रा के दौरान इन्होंने 1200 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था, जिनमें से इन्होंने 700 शूद्र वर्ण के लोगों को ही मुस्लिम बना दिया था। लेकिन दुर्भाग्य आज हिन्दू उनकी कब्र पर जाकर उन्हें पूजते हैं। ये संत हमेशा खुदा से अपने भक्तों को दुःख दर्द दूर करके उनके जीवन को खुशियों से भरने की दुआ माँगते थे। भारत तो अंधविश्वासियों का देश रहा है, फिर हम ऐसे हजरतों के बहकाए में भला कैसे न आएँगे! सूफ़ियों ने भोली जनता को किस पर प्रकार बहकाया है, यह इतिहास जानता है, इस पर एक दृष्टि डालना आवश्यक है¹ :

1. हजरत नाथडोली (1096 वि. सं. मृत्यु) ने मदुरै व तिरुचिरापल्ली में गरीबों को आर्थिक मदद देकर इस्लाम का प्रचार किया, वे वास्तव में एक तुर्की शहजादे थे।
2. सैयद इब्राहिम शहीद (1225 वि. सं. मृत्यु) ने हुक्मरान के जोर पर हजारों हिन्दुओं को आर्य धर्म से वंचित किया।
3. खलीफा बाबा फखरुद्दीन (1225 वि. सं. मृत्यु) ने पेनूकोंडा के हिन्दू राजा को मुसलमान बनाया और फिर उसकी प्रजा को।
4. हजरत अली बादशाह ने मदुरै में इस्लाम का प्रचार किया।

1. मुसलमानों का भारत, क्यूम खॉं, पृष्ठ 54, हमारी विरासत, तेजपाल सिंह धामा, पृष्ठ 203

5. नूरुद्दीन सतागर ने गुजरात के कम्बोजों, कोरियों और खारवाहों को इस्लाम में दीक्षित किया।
6. फरीदुद्दीन गंजशकर ने पंजाब की ग्यारह अछूत कही जाने वाली जातियों को इस्लाम में दीक्षित किया।
7. पंद्रहवीं शताब्दी में जब बंगाल के राजा कंस के बेटे जटमल ने इस्लाम कबूल किया, तो उन्होंने बहुत से हिन्दुओं को तलवार के बलबूते इस्लाम कबूल करवाया।
8. हजरत निजामुद्दीन के खलीफा शेख अखी सिराजुद्दीन और उनके खलीफा शेख अलाउल हक ने बंगाल में उन हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, जो निम्न जाति के समझे जाते थे।¹
9. सिलहट में शेख शहाबुद्दीन सहरवर्दी के मुरिद और हजरत बहाउद्दीन जकारिया मुलतानी के पीर भाई शेख जलालुद्दीन तबरेजी ने सैकड़ों बहिष्कृत हिन्दुओं को मुसलमान बनाया।
10. नौ गजा पीर व भूमियाओं ने न जानें कितने लोगों को आर्य धर्म से वंचित किया। दुःख की बात है कि आज हिन्दू ही भूमिया व नौ गजा पीर की कब्र पूजा करते हैं। दरअसल मुस्लिम काल में भूमिया एक पद होता था किसानों से उगाही वसूलने का...जो किसान उगाही नहीं दे पाता था दबंग भूमिया सरेआम उसकी बेटी या बहू से दुष्कर्म करता था और लोग दुष्कर्म कर रहे ऐसे बलात्कारी से लड़ने की बजाय भय के कारण दुष्कर्म करने के दौरान उसके ऊपर बड़ी चादर डाल देते थे, जो उन दिनों नौ गज की बनती थी। बाद में ऐसे भूमियाओं की मौत के बाद उनकी कब्र पर भी चादर चढ़ाने की परम्परा शुरू हुई। एक बार बयाना के काजी मुगीसुद्दीन से अलाउद्दीन खिलजी ने पूछा, “हिन्दुओं को हमें किस प्रकार नजराना देना चाहिए?” काजी ने उत्तर दिया, “अगर अधिकारी उनसे चाँदी माँगे तो उन्हें सोना देना चाहिए”..यदि भूमिया हिन्दू किसान के मुँह में थूकना चाहे तो उसे बिना किसी हिचकिचाहट के अपना मुँह खोल लेना चाहिए।² उनकी बेटियों एवं

1. इस्लाम मुसलमान और गैर मुस्लिम - अल्लामा यूसुफ करजावी व अबू मसऊद अजहर नदवी, प्रकाशक मधुर संदेश संगम, नई दिल्ली-25, संस्करण 1997, पृष्ठ 28

2. तारीख-ए-फिरोजशाही, जियाउद्दीन बरनी, भारत का इतिहास भाग 3, इलियट एंड डाउसन, पृष्ठ 185

3. वहीं, और राजपूतों की गौरवगाथा, राजेंद्र सिंह बीदासर, पृष्ठ 97 पर भी देखें

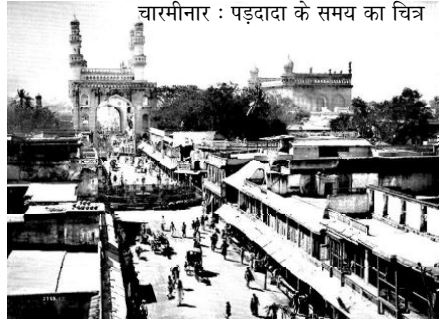
बहुओं को अपनी....इत्यादि बातें तो इतिहास के प्रसिद्ध ग्रंथों में लिखी हैं, जिन्हें स्कूली किताबों तक में पढ़ाया जाता है।

हम पुनः साई बाबा की बात पर आते हैं। दुःख-दर्द मिटाने के नाम पर अपने पंथ का प्रचार करना इन सूफ़ी संतों का उद्देश्य होता है, यही काम साई बाबा का भी था। उन्होंने भी न जाने कितने वेद धर्म के मानने वालों को अपना शिष्य बनाकर उन्हें उनके मूल धर्म से हमेशा के लिए वंचित कर दिया। एक-दो चमत्कार भी ये लोग दिखा देते हैं, लेकिन उसके पीछे अवश्य ही कोई न कोई वैज्ञानिक कारण रहता होगा, ऐसा मेरा मानना है। साई बाबा के पास 786 अंकों से अंकित एक ईंट थी, जिसे वे हमेशा अपने साथ रखते थे। बाबा उस पर हाथ टिकाकर बैठते थे और रात में सोते समय उस ईंट को तकिये की तरह अपने सिर के नीचे रखते थे। एक दिन मसजिद की सफाई करते समय एक भक्त के हाथ से गिरकर वह ईंट टूट गई। द्वारकामाई में उपस्थित भक्तगण स्तब्ध रह गए। साई बाबा ने भिक्षा से लौटकर जब उस टूटी हुई ईंट को देखा तो वे मुस्कुराकर बोले, “यह ईंट मेरी जीवनसंगिनी थी। अब यह टूट गई है तो समझ लो कि मेरा समय भी पूरा हो गया। मैं द्वारकामाई मस्जिद में रहते-रहते उकता गया हूँ। मैं बूटी के वाड़े में जाऊँगा जहाँ ऊँचे लोग मेरी देखभाल करेंगे।” विक्रम संवत् 1975 की विजयादशमी के दिन साई बाबा की मौत हो गई और बूटी साहिब द्वारा बनवाया गया कान्हा का वाड़ा (भवन) बन गया उनकी पावन दरगाह। मुरलीधर श्रीकृष्ण के विग्रह की जगह साई बाबा की कब्र ने ले ली और कालांतर में वहाँ पर मूर्ति स्थापित हुई और उन्हें पूजना शुरू कर दिया। प्रपितामह पर उनकी शिक्षा का कितना प्रभाव पड़ा



यह अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जो किसान कर अदा नहीं कर पाते थे, प्रपितामह उन्हें हल में बैल की जगह जुतवा देते थे।

महत्वाकांक्षी पड़दादा सय्यद अहमद क़ासिम रिज़वी ने कुल मिलाकर सात निकाह पढ़े और सातों बेगम ही हिन्दू परिवार से थी। निज़ाम सरकार उस्मान अली के वे काफी वफ़ादार बन गए थे। इसलिए चाँद पाटिल के परिवार की सेवादारी



या यूँ कहें कि लगान वसूल कर निज़ाम के खज़ाने में जमा करने की अपेक्षा अब वे सीधे उन लोगों के मुखिया बन बैठे थे, जो खुद निज़ाम के लिए लगान वसूला करते थे। प्रपितामह की तरह निर्धन किसानों पर वे भी बहुत अत्याचार करते थे। पड़दादा की तीसरी बेगम शहनाज (शाहकौर) थी, जिससे मेरे दादा ने जन्म लिया। कम उम्र में ही उन्होंने भी हिन्दू युवतियों से कई निकाह पढ़ डाले थे। लेकिन एक दुःखद घटना घटी, पड़दादा ने एक निकाह अधिक उम्र में पढ़ा था। वह बुजुर्ग आदमी थे और पड़दादी किशोरी। मेरे दादा ने इस बात का बहुत विरोध किया और झगड़ पड़े थे उनसे...लेकिन पड़दादा को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने दादा सय्यद अहमद रहमान रिज़वी (बचपन का नाम रहीम) को न केवल घर से बेघर किया, वरन अपनी जायदाद से भी बेदखल कर दिया।

10

राजा, अग्नि, गुरु और स्त्री : इनका सेवन मध्य अवस्था से करना चाहिए, क्योंकि ये अत्यंत समीप होने पर विनाश का कारण बन जाते हैं और दूर रहने पर फल नहीं देते। यह बात उस दृष्टांत से सिद्ध होती है, जिसे मैं अब आपको सुनाने जा रही हूँ : चारमीनार के शहर में रहने वाली बहुत खूबसूरत थी मेरी पड़दादी। परदानशीं होने के बावजूद भी लोगों में चर्चा का विषय बनी रहती थी। सुंदरता की इतनी अति थी कि जो ठीक नहीं कही जा सकती। अत्यधिक सुंदरता के कारण ही तो रावण ने सीता का

अपहरण किया था। कहते हैं कि उनके पति तो भगवान थे, फिर भी एक कामुक राक्षस सीता का हरण करके ले गया था, फिर मेरी पड़दादी नूरजहाँ के शौहर यानी कि मेरे पड़दादा क़ासिम रिज़वी तो कोई फरिश्ते या ईशदूत नहीं थे। इसलिए जाहिर था मेरी पड़दादी पर बुरी नियत रखने वालों की कमी नहीं थी। कोई पराया इनसान पड़दादी पर बुरी नजर रखता था या नहीं, यह तो मुझे नहीं पता, हाँ इतना अवश्य पता है कि उन पर सबसे अधिक बुरी नियत तो निज़ाम सरकार ही रखते थे। निज़ाम सरकार भी रावण जैसे ही कामुक और पक्के लव जिहादी थे। इतने कामुक कि अश्लील फोटों का एक बड़ा संग्रह तक उन्होंने जमा कर रखा था। इन तस्वीरों को जमा करने के लिए बूढ़े निज़ाम सरकार ने अपने मेहमानखाने की दीवारों और छतों में खुफिया कैमरे लगवा रखे थे, जो उन कमरों में होने वाली एक-एक हरकत की तस्वीरें खींचते रहते थे। महल के मेहमानखाने के बाथरूम में आईने के पीछे भी एक कैमरा लगवा रखा था।



मोहम्मद कुली

यह कैमरा हिन्दुस्तान की बड़ी से बड़ी हस्तियों की तस्वीरें निज़ाम सरकार के शौचालय में निवृत्त होने की मुद्रा में लेता रहता था। पक्के लव जिहादी निज़ाम हैदराबाद के विषय में आज भी अनेक कहानियाँ सुनी जा सकती हैं। इसी संदर्भ में हैदराबाद ऐसा नगरद्वय है, जिसका सबसे पहला नाम भागमती के नाम पर भागनगर रखा गया और बाद में भाग्यलक्ष्मी के नाम पर भाग्यनगर।

गोलकोंडा के पाँचवें कुतुबशाही मोहम्मद कुली (शा.1580-1612) ने भागमती नामक हिन्दू कन्या से लव जिहाद की नीति पर चलते हुए पाणिग्रहण किया था और उनके नाम पर इस क्षेत्र का नाम भागनगर रख

1. Dominique Lapierre & Larry Collins ने 'Freedom at Midnight' में लिखा है : The Nizam of Hyderabad combined his passions for photography & pornography to amass what was believed to be the most extensive collection of pornographic photographs in India. To assemble it, the ageing Nizam had disguised in the walls and ceilings of his guests' quarters automatic cameras that faithfully recorded all that went on in them. He had even installed a camera behind the mirror in his palace's guest bathroom. The camera's harvest, a portrait gallery of the great and near-great of India relieving themselves on the Nizam's toilet, had pride of place in his collection.

दिया था। जर्मन विद्वान जान पीपर तक ने इस बात का उल्लेख किया है। ‘भाग्यनगर दर्पण’ नामक पुस्तक में भी भाग्यलक्ष्मी के विषय में पढ़ने को मिल सकता है। छठवें निज़ाम महबूब अली ख़ान ने प्रेयसी भाग्यलक्ष्मी के नाम पर हैदराबाद का नाम भाग्यनगर कर दिया था। महबूब अली ख़ान की लव जिहाद ही कथा



महबूब अली व भाग्यलक्ष्मी

‘भाग्यनगर का कैदी’ में लिखी गई है, चलो अपनी कहानी आगे बढ़ाने से पहले लव जिहाद की यह कथा भी पढ़ ली जाए :

“भाग्यलक्ष्मी! नेनु नीकु चाला प्रेमचेस्ता।”¹ उस युवक ने बड़ी ही आशा भरी दृष्टि से पूछा।

“निजम ने राजा!” भाग्यलक्ष्मी ने कहा, “अय्यो रामा! नाकू चाला सिगू ओस्तुनई।”²

“हाय, इतनी शरम!”

“और बेरशरम हो जाऊँ क्या?” भाग्यलक्ष्मी ने कहा, “लड़की विवाह से पहले ही तो शरमाती और उसके बाद तो...।”

“वर जीवनभर पछताता है,” युवक ने कहा, “लेकिन मैं ऐसा लड़का नहीं कि विवाह के बाद जीवनभर पछताऊँ!”

“तुम कोई निज़ाम हो क्या?”

“और नहीं तो क्या?” उस युवक ने कहा, “मैं निज़ाम ही तो हूँ।”

“क्या?” भाग्यलक्ष्मी की आँखें आश्चर्य से फटी-की-फटी रह गई, “नुव्वु निजम चेपतुन्नावा?”³

“खुदा कसम!”

1. तेलुगू संवाद का अर्थ है : भाग्यलक्ष्मी क्या तुम मुझे बहुत प्रेम करती हो।

2. हे भगवान! शरम के मारे मैं मर जाऊँ।

3. क्या तुम सच कहते हो।

“खुदा कसम?” भाग्यलक्ष्मी ने कहा, “अर्थात् तुम म्लेच्छ हो, तुमने मुझसे प्रेम करके मेरा धर्म भ्रष्ट किया?”

“एक शहंशाह ने तुमसे प्रेम किया और तुम कहती हो कि तुम्हारा धर्म भ्रष्ट हो गया,” उस युवक ने कहा, “तुम्हें तो गर्व होना चाहिए कि तुम्हें उसने चाहा है, जिसको पाने के लिए हैदराबाद रियासत की लाखों हसीनाएँ दिन में भी सपने देखा करती हैं।”

“देखा करती होंगी, लेकिन मैं उनमें से नहीं हूँ। मैं एक आर्य कन्या हूँ और आर्य कन्या अपने शरीर, मन और प्रेम से ज्यादा धर्म को महत्व देती हैं।”

“ओह! समझा। लेकिन मेरी प्रियतमा प्रेम के आगे धर्म को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि जहाँ प्रेम है, धर्म की कल्पना भी वहीं संभव है।”

“धर्म कोई कल्पना नहीं, वह तो शाश्वत सत्य है।”

“तो क्या तुम मुझसे निकाह नहीं पढ़ोगी?”

“निकाह और तुमसे?” भाग्यलक्ष्मी ने कहा, “यदि तुम हिन्दू होते तो तुमसे विवाह अवश्य कर लेती, लेकिन अब संभव नहीं।” फिर उसने क्रोध में कहा, “तुमने मुझसे धोखा किया है।”

“कैसा धोखा?”

“तुमने अपना धर्म छिपाकर मेरे साथ विश्वासघात किया है।”

“भाग्यलक्ष्मी, प्रेम करने वालों का कोई धर्म नहीं होता, प्रेम तो अपने आप में एक धर्म है।”

“अपनी दार्शनिकता अपने पास रखो और आइंदा मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करना।”

“मगर भाग्यलक्ष्मी, मैं तुम्हारे बिना जिंदा नहीं रह सकता।”

“अच्छा ही होगा!”

“क्या धर्म को तुम प्रेम से बढ़कर समझती हो?”

“हाँ, धर्म के आगे मेरे लिए प्रेम कुछ नहीं, प्रेम तो मिट्टी की इस काया से किया जाता है। यह काया तो नश्वर है, लेकिन धर्म तो मेरी आत्मा में जन्म-जन्मांतर के संस्कारों से पोषित है, इसलिए इसे त्यागा नहीं जा सकता।”

“एक बात कहूँ भाग्यलक्ष्मी?”

“मैं तुमसे अब कोई बात नहीं करना चाहती।”

“लेकिन मेरी बात सुनो तो,” उसने फिर कहा, “यदि मैं हिन्दू धर्म अपना लूँ, तो क्या तुम मुझसे तब विवाह कर लोगी।”

“किसी मुसलमान को हिन्दू नहीं बनाया जा सकता।”

“क्यों नहीं बनाया जा सकता,” उसने पूछा, “जब हिन्दू को मुसलमान बनाया जा सकता है, तो मुस्लिम को हिन्दू क्यों नहीं बनाया जा सकता?”

“इसका जवाब मेरे पास नहीं है?”

“तो किसके पास है?”

“काशी के पंडितों के पास।”

“ठीक है तो मैं काशी के पंडितों के पास जाकर ही पूछूँगा कि मैं मुसलमान से हिन्दू कैसे बन सकता हूँ।”

“जाओ पूछो और यदि उन्होंने तुम्हें हिन्दू बना दिया, तो मैं तुमसे विवाह अवश्य कर लूँगी।”

भाग्यलक्ष्मी का यह प्रेमी हैदराबाद रियासत का छह वाँ निज़ाम था। हैदराबाद राज्य की बुनियाद मीर क्रमरुद्दीन अली खाँ ने डाली थी, जो मुगल बादशाह के दिए खिताब आसफ़जाह के नाम से मशहूर थे। उनके वालिद गाज़ीउद्दीन खाँ औरंगज़ेब की फ़ौज़ में सिपहसालार थे। वे अपने को पैगम्बर हजरत मुहम्मद के ससुर ख़लीफ़ा अबू बकर के ख़ानदान का बतलाते थे। मुगल बादशाह औरंगज़ेब की वर्षों तक सेवा करके, युद्ध और राजनीतिक कुशलता में समान रूप से नाम और यश कमाने के बाद, सन् 1713 में आसफ़जाह को दक्खिणी इलाक़े का सूबेदार तैनात किया गया। उनको निज़ाम-उल-मुल्क का खिताब दिया गया, जो उनके वंश का परंपरागत खिताब बन गया।

मुगल सल्तनत का जब पतन का दौर शुरू हुआ तो आसफ़जाह ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया, इससे मुगल शहंशाह का खून खौल उठा और उन्होंने उसका दमन करने के लिए खानदेश के सूबेदार मुबारिज़ खाँ को पोशीदा तौर पर हुक्म जारी किया कि नवाब आसफ़जाह

को फ़ौजी ताक़त से दबाया जाए। बरार के बुलडाना जिले में शाकरखेल्डा के मैदान में सन् 1724 में भयंकर लड़ाई हुई, जिसमें मुबारिज़ खाँ मारा गया, इस प्रकार आसफ़जाह जंग जीतकर एक स्वतंत्र शासक बन गया और उसने बरार को सल्तनत में मिला लिया तथा हैदराबाद को राजधानी बनाया। निज़ाम की राज्य-सीमा में एक बहुत दूर तक फैला हुआ पठार था, जिसकी औसत ऊँचाई समुद्र-तल से 1250 फ़ीट है, उस पठार के बीच-बीच में पहाड़ियाँ हैं, जो 2500 फ़ीट से लेकर 3500 फ़ीट तक ऊँची हैं। तत्कालीन राज्य का कुल 80,000 वर्ग मील का क्षेत्रफल, इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के सम्मिलित क्षेत्रफल से भी अधिक था। इस प्रकार मुग़लों का हाकिम एक विशाल भू-भाग का भाग्य निर्माता बन गया। निज़ाम का अर्थ है : हाकिम, जो मुग़लों के ज़माने में हैदराबाद का सूबेदार हुआ करता था। मुग़ल साम्राज्य के ख़ात्मे के बाद, निज़ाम ने, जो स्वतन्त्र हो चुके थे, ईस्ट इंडिया कम्पनी से सुलह कर ली। बाद में जब भारत में ब्रिटिश सत्ता स्थापित हो गई, तब देश के अन्य राजा-महाराजाओं की तरह निज़ाम भी ग्रेट ब्रिटेन के सम्राट् के अधीन हो गए। हैदराबाद का छह वाँ निज़ाम एक हिन्दू युवती भाग्यलक्ष्मी से बेहद प्रेम करता था। वह उससे प्रतिदिन अवश्य मिलता था। वर्षा के दिनों में अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए उसने बाढ़ के जल से लबालब मूसी नदी को न जाने तैर कर कितनी बार पार किया था। प्रेमिका के लिए अपनी जान को खतरे में डालने वाला निज़ाम भाग्यलक्ष्मी को हर कीमत पर अपनी बेगम बनाना चाहता था, पर भाग्यलक्ष्मी को जब पता चला कि उसका प्रेमी हिन्दू नहीं मुसलमान है, तो उसका प्रेम घृणा में बदल गया। परंतु फिर भी उसने कह दिया कि यदि काशी के पंडितों ने निज़ाम को हिन्दू बना दिया तो वह उससे विवाह अवश्य कर लेगी।

निज़ाम ने काशी के सबसे बड़े पंडित आत्माराम (स्वामी विशुद्धानंद) से अपने को शुद्ध करके हिन्दू बनाने की याचना की, “बिरहमन देव, मैं हिन्दू बनना चाहता हूँ।”

“मगर आप तो मुसलमान हैं।”

“जी हाँ।”

“आप हिन्दू क्यों बनना चाहते हैं?”

“दरअसल, मैं एक हिन्दू युवती से विवाह करना चाहता हूँ। उसकी शर्त है कि वह मुझसे विवाह तभी कर सकती है, जब मैं हिन्दू बन जाऊँ।”

“क्या तुम जीवन भर हिन्दू ही रहोगे?”

“अरे पंडित यह तो बस शादी के लिए प्रमाण पत्र चाहिए, बाद में तो निकाह पढ़ ही लूँगा और कल्मा पढ़कर पुनः मुसलमान हो जाऊँगा, क्योंकि सच्चा मजहब तो इस्लाम ही है।”

“फिर तो इस तरह कोई भी तुम्हें हिन्दू होने का मिथ्या प्रमाण पत्र नहीं दे सकता।”

“बताइए कितना धन लगे?”

“धर्म को धन से नहीं खरीदा सकता।”

“तो फिर?”

“ठीक है तुम्हारी समझ में ऐसे नहीं आएगा, एक गधा ले आओ।”

निज़ाम कहीं से एक गधा ले आया। पंडित निज़ाम व गधे को लेकर गंगा तट पर पहुँचा। वहाँ जाकर उसने निज़ाम को आज्ञा दी, “गधे को लेकर गंगा में स्नान कराओ और स्वयं भी करो।”

“जो आज्ञा बिरहमन।”

निज़ाम गधे को गंगा जी में स्नान कराने लगा तथा स्वयं भी स्नान करने लगा। जब बहुत देर हो गई तो उसने पूछा, “बिरहमन देव, क्या मेरे शुद्धिकरण की प्रक्रिया समाप्त हो गई।”

“नहीं?”

“कितना समय लगेगा?”

“जब तक गधा स्नान करते-करते बैल नहीं बन जाता, तब तक तुम्हारा शुद्धिकरण नहीं हो सकता।”

“देव, क्या गधा गंगा जी में नहाने से बैल बन जाएगा?”

“क्यों नहीं बन सकता?”

“यह तो असंभव है?”

“मूर्ख म्लेच्छ, जब गंगा में नहाने से गधा बैल नहीं बन सकता, तो एक मुसलमान गंगा में नहाने से हिन्दू कैसे बन सकता है?”

“तो क्या मेरा शुद्धि संस्कार संभव नहीं।”

“नहीं कदाचित नहीं।”

और इस प्रकार काशी के पंडितों से निराश होकर निज़ाम वापस हैदराबाद लौट आया।

जब भाग्यलक्ष्मी को पता चला कि निज़ाम को काशी के पंडितों ने हिन्दू बनाने से इंकार कर दिया और व्यवस्था दी है कि कोई भी मुसलमान हिन्दू नहीं बन सकता, तो उसने निज़ाम से न केवल विवाह करने से इंकार कर दिया, बल्कि उससे मिलने से भी मना कर दिया। जब यह बात भाग्यलक्ष्मी के घरवालों को पता चली तो उन्होंने यह सोचकर कि कहीं निज़ाम उनकी बेटी का अपहरण न कर ले, जल्दबाजी में एक मारवाड़ी युवक व्योमेश से उसका विवाह कर दिया। जब निज़ाम को भाग्यलक्ष्मी के विवाह का समाचार मिला तो वह बहुत दुःखी हुआ, लेकिन उसने विवाह में अमूल्य उपहार अपनी ओर से भेजे। निज़ाम अत्यंत दुःखित रहने लगा। निज़ाम ने उसे भुलाने की भरसक कोशिश की, लेकिन वह उसे भुला नहीं पाया। उसने अपनी राजधानी हैदराबाद का नाम भाग्यनगर कर दिया, ताकि इसी नाम के सहारे उसका गम थोड़ा कम हो सके, लेकिन कुछ न हुआ, उल्टा मुसलमानों के भारी विरोध का सामना करना पड़ा। निज़ाम के सलाहकारों ने एक के बाद एक कई हिन्दू युवतियों से निज़ाम की शादी करवाई, लेकिन वह तो अपना दिल भाग्यलक्ष्मी को दे चुके थे।

भाग्यलक्ष्मी के वियोग में निज़ाम बड़ा ही उदार व्यक्ति बन गया था। उन्होंने अपनी रियासत को हमेशा खुशहाल रखा। वे रियाया की हालत सुधारने और उसका जीवन सुखी बनाने के लिए शासन में नए सुधार लाने की कोशिश करते थे।

कालांतर में चिहम पुत्री भाग्यलक्ष्मी ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उमेश रखा गया। उधर, निज़ाम के भी कई निकाह हो चुके थे और वह भी अब तक दो बच्चों का पिता बन चुका था। निज़ाम के दोनों शहजादों का नाम सलावत जाह और बसावत जाह रखा गया था। भरी-पूरी गृहस्थी होने के बाद भी निज़ाम भाग्यलक्ष्मी को भुला नहीं पाया था। इसलिए उसने एक दिन अपने प्रधानमंत्री को आदेश दिया, “हम भाग्यलक्ष्मी को भुला नहीं सकते, क्या ऐसा कोई रास्ता नहीं जिससे हमें

भाग्यलक्ष्मी मिल जाए? और हम सुकून से जी सकें!...”

“है क्यों नहीं हिज हाइनेस!”

“क्या है ऐसा रास्ता?”

“आप तो भाग्यनगर के शहंशाह हैं, भाग्य-विधाता हैं। भाग्यनगर की हर वस्तु, हर संपत्ति और हर नागरिक पर आपका अधिकार है।”

“हाँ, तुम सही कहते हो, अपनी रियाया पर हमारा तो पूरा अधिकार बनता ही है।”

“तो फिर देर किस बात की है, व्योमेश पर दबाव डालें कि वह भाग्यलक्ष्मी को तलाक दे दें और फिर आप उससे निकाह पढ़ लें।”

“आपने वजा फरमाया।”

और फिर व्योमेश पर भाग्यलक्ष्मी को तलाक दिलवाने के लिए दबाव कैसे डलवाया जाए? वे इसकी योजना बनाने लगे।

और एक दिन की बात है।

“राजा प्रजा की इज्जत-आबरू का रक्षक होता है,” आँखों से शोले भड़काते हुए व्योमेश ने निज़ाम के प्रधानमंत्री से पूछा, “यदि भक्षक नहीं, फिर निज़ाम ने ऐसा आदेश क्यों दिया?”

“भाग्यलक्ष्मी के वियोग में उनकी देह सूखकर काँटा हो गई है और उन्होंने चारपायी पकड़ ली है,” प्रधानमंत्री ने सहज होकर कहा, “यह निर्णय निज़ाम का नहीं, मंत्रिमंडल का है कि आपको भाग्यलक्ष्मी को तलाक देना होगा और उसके बाद निज़ाम उनसे निकाह पढ़कर उन्हें अपनी बेगम बनाएँगे।”

“यह असंभव है, हिन्दू धर्म में धर्मपत्नी को अर्धांगिनी कहा जाता है और हमारे यहाँ विवाह विच्छेद का प्रावधान नहीं है, बल्कि पति मर जाए तो उसके साथ सती होने या जौहर की व्यवस्था अवश्य है।”

“सती स्त्री के साथ ही तो सात जन्मों तक साथ का प्रावधान है,” फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा, “परंतु भाग्यलक्ष्मी आपसे विवाह से पहले निज़ाम को प्रेम करती थी और उमेश आपका नहीं बल्कि हिज हाइनेस का खून...।”

“क्या?” व्योमेश का खून खौल उठा, “म्लेच्छ तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मेरी पत्नी के चरित्र पर लाँछन लगाते हो?”

“लौछन नहीं यह सच्चाई है, खुद भाग्यलक्ष्मी से पूछ लो।”

व्योमेश खामोश हो गया, फिर थोड़ा सहज होकर बोला, “विवाह से पहले भाग्यलक्ष्मी का चरित्र कैसा भी रहा हो, लेकिन मेरे साथ सात फेरे लेकर वह मेरी धर्मपत्नी बन गई है, इसलिए इज्जत के साथ उसके संग जीवन निर्वाह करना अब मेरा धर्म है।”

“नहीं, तुम भाग्यलक्ष्मी के साथ आगे जीवन निर्वाह नहीं कर सकते, तुम्हें उसे तलाक देना ही होगा।”

“लेकिन हिन्दू धर्म में तलाक देने की व्यवस्था नहीं है।”

“तो फिर इस्लामी व्यवस्था के अनुसार तलाक दे दो।”

“वाह! विवाह हिन्दू पद्धति से किया और तलाक मुस्लिम पद्धति से देकर अपने शरीर के आधे अंग को काटकर फेंक दूँ। क्या आधा शरीर काटकर कोई जीवित रह सकता है?”

“अब तक हमने शराफत से काम लिया,” प्रधानमंत्री गरम हो गए, “आप जानते ही हैं कि हमने न जाने अब तक कितनी हिन्दू युवतियों को उठाकर हरम में पहुँचाया है। बड़े निज़ाम की तीन हजार बेगमें थीं और उनमें से ढाई हजार हिन्दू युवतियाँ थीं, जिनका अपहरण करने के बाद उनसे निकाह पढ़ाया गया था।”

“तो आपका इशारा...।”

“हाँ हमें शक्ति का इस्तेमाल करना होगा।”

“ठीक है, मुझे कल तक सोच-विचार का समय चाहिए।”

“कल तक सोच-विचार का समय नहीं, भाग्यलक्ष्मी को तलाक का वक्त देते हैं,” और फिर प्रधानमंत्री ने भाग्यलक्ष्मी के पुत्र उमेश को, जो वहीं खड़ा था, सिपाहियों को उसे हिरासत में लेने का संकेत किया और व्योमेश को कहा, “जब तक तुम भाग्यलक्ष्मी को तलाक नहीं दे देते, तब तक उमेश हमारी देखरेख में रहेगा।”

“इतना जुल्म न कीजिए।” वह गिड़गिड़ाया।

और निज़ाम की पलटन व्योमेश के घर से चली गई। थोड़ी ही देर में यह बात सारे हैदराबाद में फैल गई। बदनामी के भय और धर्म की रक्षा के लिए व्योमेश और भाग्यलक्ष्मी ने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ

आत्महत्या कर ली। लेकिन बालक उमेश बच गया था, क्योंकि निज़ाम के आदेश से उसे प्रधानमंत्री अपने साथ लेकर राजमहल में चला आया था।

और फिर एक तरफ तो भाग्यलक्ष्मी की श्मशान यात्रा निकली और दूसरी तरफ ईद के मौके पर निज़ाम की शोभायात्रा। दोनों यात्राओं में कितना अंतर था।

भाग्यलक्ष्मी का लड़का शक्ल-सूरत में मारवाड़ी व्योमेश से ही मिलता-जुलता था। परंतु वह लड़का महल में लाया गया और उसे निज़ाम का बेटा करार दिया गया। उसका नाम उमेश से उस्मान रख दिया गया। उमेश उस समय इतना छोटा था कि वह ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया, निज़ाम को ही अपना बाप समझने लगा। लेकिन ज्यों-ज्यों वह लड़का बड़ा होता गया, त्यों-त्यों उसकी चाल-ढाल और सूरत मारवाड़ी व्योमेश से मिलती गई। वैसी ही, पैसा जोड़ने की आदत उसमें आती गई।¹

उस्मान की मारवाड़ी जैसी आदतें सुधारने में नाकामयाब होने पर निज़ाम ने भारत सरकार को शिकायत लिखी, “उस्मान उनका नहीं है, बल्कि उनके दोनों सगे बेटे, जो सलावत जाह और बसावत जाह हैं, उनकी कानूनन ब्याहता बीवियों से पैदा हैं, इसलिए वे दोनों ही तख्त के असली वारिस हैं।”

भारत सरकार की ओर से पत्र आया, “समय आने पर आपकी शिकायत पर गौर फरमाया जाएगा।”

सलावत जाह और बसावत जाह की शक्ल-सूरत व चाल-ढाल निज़ाम जैसी थी। उस्मान अली, जो बचपन से ही चालाक था, इस तजवीज़ का पता पा गया और उसी दिन से दुआ माँगने लगा कि उसका यह नकली बाप मर जाए। अचानक निज़ाम बीमार पड़े और कुछ दिनों बाद मर गए,

-
1. दीवान जरमनी दास, जो 1895 में पंजाब में पैदा हुए और कपूरथला व पटियाला में मिनिस्टर रहे उन्होंने भी उस्मान अली को मारवाड़ी की संतान ही लिखा है। उन्होंने लिखा है : Besides his many queens, the father had a liaison with a women of ill repute who was the mistress of a Marwari banker. This women gave birth to a boy who resembled the Marwari. It was alleged by the collaterals that this boy was brought to the Palace and declared the son of the Nizam. As the boy grew up, he had the character and resmblance of the Marwari, and likewise his habits of hoarding money.

-Diwan Jarmani Dass, "Maharajas"
Orient Paperbacks, Delhi, 1971

परन्तु वह लड़का जिसकी किस्मत में निज़ाम बनना लिखा था, उनकी बीमारी में उन्हें देखने तक न गया और मरते वक़्त भी उनके करीब मौजूद न था। बल्कि वह दरबारियों को घूस देकर उन्हें अपने पक्ष में करने में व्यस्त था। रिश्वत के बल पर अंततः उस्मान ने सभी दरबारियों का विश्वास पा लिया और दरबारियों ने उसे ही गद्दी का असली वारिस स्वीकार किया। उस्मान ने ब्रिटिश अधिकारियों को भी भारी-भरकम रिश्वतें दी थी, इसलिए वह उनका भी वफ़ादार बन गया था।¹

ब्रिटिश सरकार के वफ़ादार दोस्त, लेफ़्टीनेन्ट जनरल हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस आसफ़जाह, मुज़फ़्फर-उल-मुल्क, निज़ाम-उल-मुल्क, निज़ामुद्दौला सर मीर उस्मान अली ख़ाँ बहादुर, फ़तेहजंग, जी. सी. एस. आई. जी. बी. ई, सन् 1911 में सातवें निज़ाम के रूप में हैदराबाद के तख़्त पर रौनक-अफ़रोज हुए। जब उस्मान अली तख़्त पर बैठे, तब फौरन ही उन्होंने शाही खानदान के सभी लोगों को महल से निकाल बाहर किया। उनमें से कुछ तो सड़कों पर भीख माँगते फिरने लगे। परन्तु सलावत जाह और बसावत जाह ने हिम्मत नहीं हारी² और वे ब्रिटिश अधिकारियों की मदद से इंग्लैंड के शासक एडवर्ड सप्तम के समक्ष उपस्थित हुए और उनसे प्रत्यक्ष मिलकर अपील की, “शहंशाह-ए-जहाँ! हैदराबाद का राज्य हमको दिया जाए, क्योंकि निज़ाम के जायज बेटे हम ही हैं और उस्मान अली ख़ाँ ज़बर्दस्ती तख़्त पर क़ाबिज है, जब कि वह हमारे पिता की संतान नहीं है।” अपने अधिकार के लिए संघर्ष करने में कोई बुराई नहीं है, वरन् यह तो व्यक्ति का धर्म होता है। उन्होंने भी अधिकार पाने के लिए आवाज उठाई तो वे सही पथ पर ही थे।

“आप कैसे कह सकते हैं, उस्मान आपके पिता की न तो संतान हैं और न ही आपका भाई है?”

1. महाराजा, दीवान ज़रमनी दास, हिंद पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 132

2. दीवान ज़रमनी दास लिखते हैं : When Osman Ali succeeded to the throne, he turned out of the palace all members of the royal family and some of them actually became street beggars. Salabat Jah and Basabat Jah appealed to the British Government to restore to them the kingdom of Hyderabad saying that they were the legitimate sons of the Nizam and that Osman Ali was a usurper and not the son of the Nizam.

“उसे तो महल में कैद करके लाया गया था! वह हैदराबाद की रियासत का वारिस नहीं बल्कि कैदी है।”¹

“हैदराबाद का वारिस नहीं कैदी है उस्मान, उसे कैद करके महल में लाया गया,” एडवर्ड थोड़ा मुस्कराया, “बरखुरदारों, किसी मुजरिम को कैद करके कारागार में ले जाया जाता है, महल में नहीं।”

दोनों शहजादे आगे कुछ सफाई नहीं दे पाये। शहजादे तो चले गए, लेकिन एडवर्ड कुछ सोच-विचार में पड़ गया और उसने गुप्तचर विभाग से सच्चाई की तह तक जाने के लिए आदेश जारी कर दिए।

उस्मान अली की खुशकिस्मती और दोनों शहजादों की बदकिस्मती से, इंग्लैंड के बादशाह एडवर्ड सप्तम, जिसने मामले की पूरी रिपोर्ट तैयार करने के लिए अधिकारियों को आदेश दे दिया था और जो सलावत जाह और बसावत जाह को तख्त का असली वारिस मान कर उनके हक में फैसला देने वाले थे, वे अचानक ही मर गए। बादशाह के मरने से उस्मान अली को काफ़ी मौक़ा मिल गया और उन्होंने सोने की ईंटों व झिलमलाते जवाहरात की मदद से ऐसी तरकीबें लगाईं कि उन भाईयों की अपील खारिज कर दी गई और वे हैदराबाद रियासत के जायज़ व एकछत्र शासक बन बैठे।

और यही एक छत्र शासक आज जो रक्त से हिन्दू था, वह हिन्दू लड़कियों को ही हवस का शिकार बनाने लगा था। मेरी पड़दादी इन्हीं निज़ाम उस्मान अली के महल में जाती रहती थी, क्योंकि मेरे पड़दादा हैदराबाद में एक पाक रसूल जैसी हैसियत रखते थे। इसका कारण था उनका जेहादी होना यानी कि काफ़िरों को पाक इस्लाम मजहब कबूल करवाना। इस काम के लिए पड़दादा ने हैदराबाद में सन् 1926 में

1. وہ حیدرآباد سلطنت کا اصلی وارث نہیں ہے بلکہ ایک غیدی ہے۔

تورخ نظام شاہی

'The Last Nizam' نامک अपनी पुस्तक में John Zubrzycki ने भी लिखा है कि सलावत जाह ही वास्तविक उत्तराधिकारी था। उन्होंने लिखा है कि In late August 1911, Rahat Begum was stalking Mahboob Ali Khan through the corridors of the Purani Haveli insisting that her son Salabat Jah should be the next Nizam on the grounds that she was his legal wife.

- 'The Last Nizam', page 107

मजलिस-ए-इत्तेहाद-उल-मुसलमीन नामक संगठन स्थापित किया गया था, जिसका उद्देश्य निज़ाम सरकार के समर्थन में मुसलमानों को संगठित करना और काफिर हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करके पाक मुस्लिम हुकूमत में काफिर हिन्दू बहुमत को घटाना था। धीरे-धीरे यह संगठन बहुत शक्तिशाली हो गया तथा अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त होकर स्वतंत्र मुस्लिम राज्य बनाने के स्वप्न देखने लगा। पड़दादा कासिम 1944 में इत्तेहाद के सर्वेसर्वा नेता बने थे। पड़दादा कासिम ने नाज़ी पद्धति पर शत्रुओं पर एकाएक आक्रमण करने वाला सैनिक दस्ता खड़ा किया था, जिसके सदस्य रज़ाकार कहलाते थे। इसकी सैनिक कवायद और परेड हैदराबाद में हरदिन होती थी। निज़ाम को कासिम साहब से डर लगता था, क्योंकि पड़दादा कासिम रिज़वी निज़ामशाही का विस्तार दिल्ली के लाल किले तक करने का सपना देखा करते थे। खैर! अब हम अपनी असली बात पर ही आते हैं। पड़दादा कासिम और पड़दादी दोनों को यह तो पता था कि निज़ाम सरकार बहुत कामुक हैं, लेकिन अश्लील तस्वीर खींचने वाले कैमरों के बारे में उन्हें कतई मालूमात नहीं था। लेकिन अंग्रेज़ इस बारे में सबकुछ जानते थे, इसलिए निज़ाम सरकार की फाइल में सबसे ताज़ा रिपोर्ट रेजिडेंट की इन कोशिशों के बारे में थी कि निज़ाम सरकार के बेटे और वारिस का सेक्स जीवन ऐसा हो जो भावी निज़ाम को शोभा दे।

पूरी सावधानी बरतते हुए रेजिडेंट साहब ने निज़ाम सरकार से बातों ही बातों में जिक्र किया, “हिज हाइनेस, मेरे कानों तक कुछ इस तरह की खबरें उड़ती-उड़ती पहुँची हैं कि नौजवान शहजादे मुकर्रम जाह के शौक के दायरे में शहजादियाँ नहीं आती हैं।”

“क्या बकते हो?” भड़क उठे थे निज़ाम सरकार।

“हम बक नहीं रहे ठीक कह रहे हैं।”

“ओह!” फिर उन्होंने एक नौकर से कहा, “शहजादे मुकर्रम को तुरंत हमारे सामने पेश किया जाए।”

पड़दादी भी उस दिन महल में गई थी। पड़दादी के साथ उस दिन उनकी एक गुजराती सहेली की नाबालिग बेटी रुकमणि बेन भी थी। अचानक ही निज़ाम सरकार की नज़र रुकमणि बेन पर पड़ गई, तो उस

शैतान निज़ाम ने फरमान जारी कर दिया, “इस लौंडी को पकड़कर ले आओ।”

पड़दादी ने रुकमणि बेन को बचाने की बहुत कोशिश की, लेकिन निज़ाम सरकार के सामने बेवश थीं। उसी समय निज़ाम सरकार का नालायक बेटा भी आ गया था।

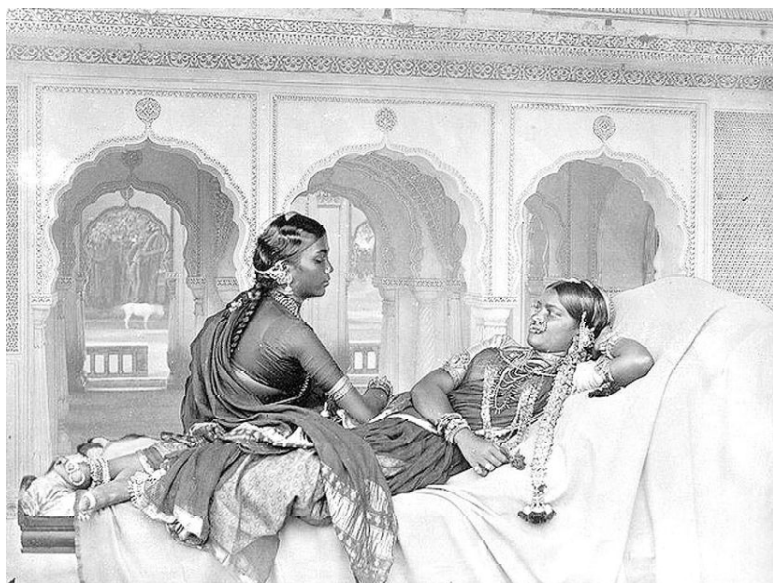
रेजिडेंट साहब और मेरी पड़दादी के लाख मना करने पर भी निज़ाम सरकार उस्मान अली ने अपने बेटे को मजबूर किया, “शहजादे तुम अभी इसी समय फौरन सबके सामने इस बात को झूठ साबित करो कि तुम खानदान का सिलसिला आगे चलाने के लिए आमादा नहीं हो।”¹

“मगर अब्बा हुज़ूर, इन सबके सामने....?”

“ओह! माफ करें यहाँ हमारे कई खास मेहमान भी हैं यदि उन्हें शर्म आती हो तो वे हमारी बेगम महल-ए-मुबारक के साथ अतिथिखाने में चले जाएँ। पड़दादी भी क्या करतीं, वे भी बेबस थीं, इसलिए महल-ए-मुबारक के साथ चली गई। और बेचारी रुकमणि बेन जो बाद में रुकैया बानो बन गई थी, उसको छोड़ गई अकेली, ताकि शैतान उसकी नथ तोड़ सके। रुकमणि बेन की अस्मत् से खेलने के लिए शहजादे ने एक-एक करके सारे वस्त्र उतार दिए। रुकमणि बेन तो अभी नाबालिग थी, उसे तो मासिक धर्म भी शुरू नहीं हुआ था। कन्या से किशोरी नहीं बनी थी लेकिन आदम और हव्वा के उस शैतान वंशज ने उस नाबालिगा पर ऐसा कहर ढाया कि वह काम पर्दे के पीछे भी शोभा नहीं दे सकता था। क्षणभर में ही रुकमणि बेन की चीख महल में गूँज उठी थी। अक्षत योनि से खून की गंगा बह चली थी। बेहोश होकर गिर पड़ी थी रुकमणि बेन। बाद में जब यह मामला तूल पकड़ गया तो निज़ाम सरकार ने शब्बीर हसन खाँ के साथ

1. The most recent report in the Nizam's file dealt with the British Resident's efforts to make certain that the sexual proclivities of his son and heir were those befitting a future Nizam. As tactfully as he could, the worthy gentleman alluded to certain report reaching his ears which indicated the young prince's tastes did not encompass princesses. The Nizam summoned his son. Then he ordered into their presence a particularly attractive inmate of his harem. Over the embarrassed protest of the Resident, he instructed his son to give an immediate and public refutation of the dastardly insinuation that he might not be inclined to continue the family line.

- 'Freedom at Midnight', page 192



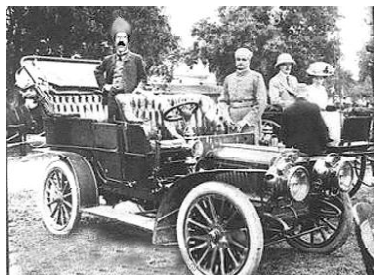
रुकैया बानो लेटी हुई एवं नीचे नर्गिस के साथ जोश मलीहाबादी

रुकैया बानो (रुकमणि बेन) का तुरंत निकाह पढ़वा दिया।¹ शब्बीर भी नाबालिग था, लेकिन उसकी आवाज़ बड़ी सुरीली थी। निज़ाम सरकार के दरबार में कभी-कभी ग़ज़लें गाकर शब्बीर सबका दिल बहलाया



करता था। आगे चलकर शब्बीर को निज़ाम ने इसका बहुत सुंदर पुरस्कार भी दिया था। 1925 में उन्हें उस्मानिया विश्वविद्यालय² हैदराबाद रियासत में अनुवाद की निगरानी का कार्य सौंपा गया था। 5 दिसंबर, 1898 मलीहाबाद में जन्में शब्बीर ने बाद में अपना नाम जोश मलीहाबादी रख

-
1. जोश मलीहाबाद और सरदार पटेल, आलेख रहमान अली, स्वतंत्र वार्ता 2 नवंबर 2003
 2. उस्मानिया विश्वविद्यालय सर अकबर हैदरी के सुझाव पर 1917 में स्थापित किया था। वास्तुकला की दृष्टि से उत्कृष्ट इसकी दीवारों की सज्जा फूलों की जाली से की गई है और उनके बीच में संगमरमर का महीन काम किया गया है।



शाही गाड़ी एवं अपनी कुछ खास बेगमों के साथ निज़ाम सरकार

लिया था। शब्बीर मलीहाबाद में जन्में थे, जो संयुक्त प्रांत, ब्रिटिश भारत का भाग था और वे सेंट पीटर्स कॉलेज आगरा में पढ़े। 1916 में अपने पिता बशीर अहमद ख़ाँ की मृत्यु होने के कारण वे कॉलेज की आगे पढ़ाई जारी नहीं रख सके और अपनी माँ के साथ हैदराबाद चले गए थे। उसकी माँ हैदराबाद के रेडलाइट एरिया में धंधा करने वाली औरतों की दलाल थीं और जब भी कोठों पर कोई क्वारी कन्या अपहरण करके लाई जाती थी, तो इसकी खबर निज़ाम सरकार के पास भेजी जाती थी, वैसे तो निज़ाम सरकार 250 से अधिक औरतों का शौहर था, लेकिन उसे जब कोई कोठे पर आई क्वारी कन्या भा जाती थी, तो उसकी नथ तोड़ने में वह बड़ी बहादुरी समझता था। कोठों पर वह किसी सेठ साहूकार की गाड़ी भी उधार माँगकर ले जाता था और फिर किसी मासूम हिन्दू अबला की नथ तोड़ने के बाद यदि उसे वह भा जाती थी तो उसे अपने हरम में ले आता था और गाड़ी को अपने शाही गैराज में पहुँचा देता था।

अपहरण की गई हिन्दू लड़कियाँ जहाँ उसके हरम की शान बढ़ाती, वहीं लूटी गई गाड़ियाँ शाही गैराज की शोभा बढ़ाती थी और एक दफा गाड़ियाँ शाही गैराज में दाखिल हुई तो फिर उसकी वापसी का सवाल ही नहीं उठता था। मोटर का मालिक हाथ मलता रह जाता था। इस तरह निज़ाम ने 300-400 गाड़ियाँ अपने यहाँ इकट्ठी कर ली थी, हालाँकि ये इस्तेमाल नहीं आती थी और ठीक इसी तरह 250 विवाहिता औरतों के अलावा 400-500 हिन्दू लड़कियाँ और औरतें उसके महल में जमा हो गई थीं, जो कभी अपने घर न जा सकीं और न उनकी कभी डोलियाँ उठीं। हिन्दू लड़कियों पर जितने अत्याचार निज़ाम सरकार के शासन में हुए उतने

किसी काल में नहीं हुए, यहाँ तक कि उनके स्तनों और यौवनता पर भी कर (टैक्स) लगा दिया गया था।¹ हिन्दू युवतियों के उरोजों पर कर लगाना निज़ाम सरकार का सबसे घृणित कार्य था।

11

इतिहास बड़ी तेजी के साथ करवट बदल रहा था। जब देश में आज़ादी का आंदोलन चला तो साहिब सिंह, जिसका जिक्र हम पीछे कर आए हैं, उनके प्रपौत्र लाल सिंह ने पश्चिम उत्तर प्रदेश में स्वदेशाभिमान की अलख जगाने में महत्वपूर्ण कार्य किया। लाल सिंह का जिक्र इसलिए किया गया कि क्योंकि इनके बड़े भाई चौधरी मेहूँ के पौत्र भी मेरी इस रचना के एक मुख्य पात्र हैं अर्थात् यह कथा कई पीढ़ियों का एक दस्तावेज है। इस पुस्तक में उन्हें नील के नाम से संबोधित किया गया है, क्योंकि उनका एक नाम यह भी है। डूंगर चौधरी के पाँच पुत्रों में से एक थे लाल सिंह आर्य, जिनका जन्म खेकड़ा में 2 सितंबर 1903 को हुआ था।



लाल सिंह

वे गांधी जी के आह्वान पर स्वतंत्रता की जंग में कूदे और कारागार की कठोर यातना तक उन्होंने झेली। अस्तु!

हैदराबाद, भोपाल और जूनागढ़ मुसलमानों की ऐसी रियासतें थी, जिनके शासक मानते थे कि जब तक धरती रहेगी, तब तक इन रियासतों में उनके खानदान का झंडा बुलंद रहेगा। लेकिन ऐसी सोच रखने वाले शासक यह भूल गए थे कि अल्ला ताला ने किसी भी शहंशाह को उम्र कम ही दी है। भारत को आज़ादी तो मिल गई थी, पर इस समय देश में

1. यह सत्य कहरनामा प्रख्यात अभिनेता नागार्जुन और श्वेता की एक तेलुगू फिल्म 'राजन्ना' (हिन्दुस्तानी योद्धा : हिन्दी) में भी दर्शाया गया है, (निर्देशक केवीवी प्रसाद) जो 15 अगस्त 2011 में रिलीज हुई थी।

छोटी-बड़ी लगभग 562 रियासतें थीं, इसलिए आज़ादी अभी भी पूरी नहीं थी। उन्हें एक सूत्र में पिरोकर अखंड भारत का निर्माण करना कोई आसान काम नहीं था, लेकिन सरदार बल्लभ भाई ने अपनी युक्ति एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण, जल्दी एवं साहसिक फैसले लेने की क्षमता के चलते सभी रियासतों को भारत में मिला लिया। इस बात में संदेह का कोई स्थान नहीं है कि पटेल जी जैसे नेता के संकल्प एवं साहस के बिना विभिन्न राज्यों का एकीकरण इतनी सरलता से नहीं हो पाता। गांधी जी ने उनके बारे में कहा भी था, “यह समस्या इतनी पेचीदी है कि उनके अलावा इसे कोई दूसरा नहीं सुलझा सकता था।” भारत में फैले उस समय छोटे-छोटे राज्य महाराजाओं, नबावों या फिर निज़ामों द्वारा शासित थे। ब्रिटिश राज के दौरान उन्हें तंग नहीं किया जाता था, पर अंग्रेज़ उनके क्रिया-कलापों पर निगाह रखने के लिए अपना एक अधिकारी हर एक राज्य में भेज देते थे। हैदराबाद एवं कश्मीर तो उन राज्यों में से थे, जो इंग्लैंड जितने ही बड़े थे।

भारत में सम्मिलित होने वाले सबसे पहले राज्यों में ग्वालियर, बड़ौदा एवं बीकानेर थे। अगस्त के पहले सप्ताह में शामिल करने वाले दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने वाले महाराजाओं एवं नबावों की भीड़ ही लग गई थी। इस प्रकार बल्लभ भाई ने राजकोट, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, सौराष्ट्र संघ के राज्य, मालवा का राज्यसंघ, पंजाब राज्यसंघ, फरीदकोट, विन्ध्य प्रदेश, राजस्थान संघ, द्रावणकोर, कोचीन, रायपुर, भोपाल आदि को भारत के अधीन कर लिया। लेकिन जूनागढ़ के नवाब, बिना किसी तर्क के पाकिस्तान के साथ जाना चाहते थे। इस तथ्य के बावजूद कि उनका राज्य भारतीय सीमा के काफी अंदर था। जब वहाँ की हिंदू-बाहुल्य जनता ने भारत के पक्ष में अपना फैसला लिया, तो नवाब अपनी तीन बीबियों, कुत्तों और रत्न-आभूषणों के साथ पाकिस्तान को पलायन कर गए। उसे भारतीय फौज के आक्रमण का भी भय था।

कश्मीर के महाराजा हरिसिंह, बिल्कुल इसके विपरीत थे। वह हिंदू थे, पर अधिकतर जनता वहाँ मुसलमान थी। महाराजा अपना मन नहीं बना पा रहे थे कि पाकिस्तान के साथ जाएँ या भारत में रहें। वह वास्तव में स्वतंत्र रहना चाहते थे और उनके पास पर्याप्त सेना थी। पर इस बीच

में पाकिस्तान से कबीलाईयों ने उन पर आक्रमण कर दिया (लूट-पाट, घर जलाने और वहाँ की जनता को आतंकित करने लगे), जिसे खदेड़ने के लिए हरिसिंह ने भारतीय फौज की मदद माँगी और साथ ही भारत में रहने का फैसला किया। नई दिल्ली ने जितने लड़ाकू-जहाज और सेना की इकाइयाँ थी, उन्हें द्रुतगति से श्रीनगर खाना कर दिया। देशभक्त संस्था आर्य समाज के आह्वान पर बहुत से हिन्दू भी कश्मीर की मुक्ति के लिए वहाँ गए। धरती की जन्नत कही जाने वाली कश्मीर में अब शांति भंग हो गई और वह भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध-भूमि बन गई थी। महाराजा हरिसिंह अपने को इस लड़ाई से दूर रखने के लिए श्रीनगर का अपना महल छोड़कर हमेशा के लिए ही जम्मू चले गये, जो कश्मीर की शीतकालीन राजधानी थी। अजीब बात थी कि उन्होंने बेटे कर्ण सिंह को कश्मीर का रीजेंट बना दिया था। नेहरू जी राजाओं के विरोधी थे और भारत की आजादी दिलाने में उनकी अहम भूमिका थी। कुछ समय बाद वे आम चुनाव लड़े और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

तीसरा प्रशासक जो भारत में शामिल नहीं होना चाहता था। वह था हैदराबाद का निज़ाम उस्मान अली, अब वे एक वृद्ध व्यक्ति थे। वजन केवल चालीस किलोग्राम और डेढ़ मीटर का कद। वह अभी भी सबसे ज्यादा सनकी राजा था। पिछले सालों में उनके धन-दौलत में जितनी भी वृद्धि हुई थी, उनकी कंजूसी भी उसी अनुपात में बढ़ती गई थी और वह इस हद तक बढ़ गई थी कि उनके मेहमान जो अधजली सिगरेट ऐश-ट्रे में छोड़ जाते थे, उसे भी इकट्ठा कर लेते थे। बंबई से जो डॉक्टर उनका इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम लेने आया था, वह उनका ई.सी.जी. नहीं ले सका, क्योंकि उन्होंने हैदराबाद पॉवर स्टेशन को वोल्टेज कम करने का आदेश दिया था। महामना मालवीय जब शिक्षण संस्थान के लिए चंदा लेने पहुँचे तो उन्होंने उनकी झोली में जूति डाल दी थी, लेकिन पैसा एक नहीं दिया था, बाद में उनकी जूति



मालवीय जी एवं उस्मान अली

नीलाम करके मालवीय जी ने धन प्राप्त किया था। ऐसे महान कंजूस के पास भी हरिसिंह (कश्मीर) की तरह अपनी विशाल फौज थी और लड़ाकू हवाई जहाज भी थे। जब 14 अगस्त को उनको एक आला अफसर यह बताने आया कि अंग्रेज़ भारत छोड़कर जा रहे हैं, तो वह खुशी के मारे कूद पड़े और बोले, “अब मैं आजाद हो गया हूँ।”

फिर उसकी आँखों में खुशी के आँसू आ गये।

“प्रधानमंत्री को हाजिर करो।” उसने संदेशवाहक को आज्ञा दी और फिर बड़बड़ाए, “मैं आजाद हूँ, मेरा मुल्क आजाद है। मेरी औलादें अब निश्चित होकर हैदराबाद पर राज्य करती रहेंगी।”

“आमीन।” पास खड़े अंगरक्षक ने कहा।

12

निज़ाम सरकार ने एक दिन पड़दादा से कहा था, “क्रासिम, अंग्रेजों ने जाने के लिए अपना बोरिया बिस्तरा समेट लिया है और कल सुबह से भारत और पाकिस्तान नामक दो राष्ट्रों का उदय...।”

“हिज हाइनेस मैं जानता हूँ।”

“अंग्रेज चाहते हैं कि यदि हम अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहते हैं तो हमें इन दोनों देशों में से किसी एक के साथ मिलकर रहना होगा।”

“हाँ, यह तो पहले से ही निश्चित हो चुका है।”

“तो कुछ करते क्यों नहीं, हम किसी के साथ भी नहीं मिलेंगे और स्वतंत्र ही रहेंगे।”

“महामहिम यह तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, हैदराबाद ही क्या लाल किले पर भी आपका झण्डा लहराना चाहिए। यह धन फिर किस दिन काम आएगा, इसलिए अपनी आज़ादी और हुकूमत बनाए रखने के लिए कुछ तो करना ही होगा।”

“अब हमें क्या करने की जरूरत है, और कुछ करना होगा भी तो फिर उसमें धन की कमी भला आएगी ही कहाँ, आप जानते हैं हमारे पास कितनी धन दौलत है।”

“मैं जानता हूँ हिज हाइनेस, आप इस समय दुनिया के सबसे अमीर आदमी हैं।”

“शायद आप नहीं जानते कि मेरे पास इतने जवाहरात हैं कि सैकड़ों बक्सों में बन्द करके रखे हैं और सोने-चांदी की ईंटें बड़े-बड़े तहखानों में रखी हैं। इन सबको यदि लंदन की सड़कों पर बिछा दिया जाए तो सड़कें कम पड़ जाएंगी।”

“मगर इतने धन का आप...।”

“बेवकूफ क्या मेरे कोई आगे-पीछे नहीं है।”

“रहम शहंशाह। आपके तो अट्ठासी लड़के और लड़कियाँ हैं।”

“आपने सही गिनती की।” फिर निज़ाम ने मन-ही-मन में कहा, “इसीलिए तो हमने हर एक लड़के और लड़की के नाम एक-एक बक्सा कर दिया, हमारी बुद्धि का कमाल तो देखो कि हमने शर्त यह रखी है कि मेरे मरने के बाद ही यह बँटवारा अमल में लाया जाएगा। इस तरह किसी को पता न चल सकेगा कि उन बक्सों में क्या है, सिवाय मेरे जिसने अपनी निजी डायरी में सब कुछ लिख लिया है।” फिर उन्होंने प्रत्यक्ष कहा, “क्या तुम्हें मेरे जवाहरात की कीमत का अंदाजा है?”

“हिज हाइनेस आपके निजी जवाहरात की कीमत पचास करोड़ आँकी गई है।”

“आपने ठीक आँका, इस सबकी लिस्ट मेरे पास है। मैं हमेशा अपने जवाहरात और जेवरात की पूरी फ़ेहरिस्त सोते-जागते, हर वक़्त अपने पास रखता हूँ। मुझे ठीक-ठीक पता रहता है कि कितना रुपया मेरे पास है, किस बक्सों में कौन-से जवाहरात हैं और जेवरात में से कौन-सी चीज़ कहाँ रखी मिलेगी। जिस जगह जो सामान रखा है, वहीं वह रखा रहता है और मेरी मंजूरी के बग़ैर उसकी जगह बदली नहीं जा सकती। पर इतने धन की हिफ़ाज़त भी आसान नहीं। किस पर भरोसा करें, किसी पर भी तो नहीं, तभी तो ख़ज़ाने की ख़ास चाभियाँ बड़ी हिफ़ाज़त से अपने पास रखता हूँ।”

“क्षमा करें हिज हाइनेस, एक बात कहना चाहता हूँ।”

“कहो क्या कहना चाहते हो?”

“सुना है दिल्ली में स्वतंत्र भारत की नयी सरकार शक्ति संपन्न होते ही हैदराबाद को अपने में मिलाने के लिए बल प्रयोग कर सकती है।”

“ऐसा कभी नहीं होगा?”

“परंतु क्रांतियाँ होते देर नहीं लगती?”

“बात तो आपकी भी ठीक है, इसलिए क्या किया जाए।”

“भविष्य के लिए कुछ सुरक्षा प्रबंध।”

“क्या आपके मस्तिष्क में कोई योजना है?”

“जी, योजना तो है।”

“जल्दी बोलो।”

“आपको सारा धन लंदन के नेशनल वेस्टमिनिस्टर बैंक में जमा करवा देना चाहिए और अपनी हैदराबाद रियासत की स्वतंत्रता कायम रखने के लिए मामले को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना चाहिए।”

“आपने इतनी अच्छी सलाह पहले क्यों नहीं दी,” उनकी आँखों में अद्भुत चमक थी, “वित्त मंत्री मोइन नवाज़ जंग के नेतृत्व में पाँच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल बनाने की मेरी ओर से मौखिक राजाज्ञा है। ताकि वे संयुक्त राष्ट्र में हैदराबाद रियासत की स्वतंत्रता कायम रहने की वकालत कर सकें और आपातकाल के लिए 1007940 पाउंड 9 शिलिंग की भारी भरकम धनराशि नेशनल वेस्टमिनिस्टर बैंक में जमा करवा दें, ताकि हमारे वफादारों के लिए एक लाख .303 की राइफलें खरीदी जा सकें।”

“मगर इतनी रायफलें किसलिए?”

“बेवकूफ, रियासत के विलय का विरोध करने में भारतीय सेना से मुकाबला करने के लिए राइफलों के स्थान पर क्या लाठियाँ खरीदने के लिए यह धन बैंक में जमा करवाऊँ?”

“आपने दुरुस्त फरमाया। जल्द जमा करा देते हैं।” निज़ाम सरकार यह नहीं समझे कि जो समय के अनुसार नहीं बदलता, समय उसे अनुपयोगी कर देता है।

1. साठ सालों का ब्याज जोड़कर अब यह राशि तीन करोड़ पाउंड यानी 250 करोड़ रुपए हो गई है। संग्रह सरकार के तत्कालीन केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री कपिल सिब्बल ने इस राशि को भारत सरकार को दिलाने की पैरवी की थी, लेकिन इसका कोई निष्कर्ष नहीं निकल पाया।

हैदराबाद रियासत का निज़ाम मुस्लिम था, जबकि वहाँ की अधिकाँश जनता हिन्दू थी। जनता भारत में शामिल होना चाहती थी, लेकिन निज़ाम बहुत ही हठी एवं दुराग्रही था। उसे अपने धन-बल पर बहुत भरोसा था। यहाँ तक कि वह भारत विरोधी कामों में भी लगा रहता था। पड़दादा ही नहीं बल्कि कुछ रजवाड़े भी उसको भारत के खिलाफ़ उकसा रहे थे कि वह भारत में किसी भी प्रकार न मिले। भारत की आजादी की भनक लगते ही निज़ाम के राज्य में हिंदुओं एवं सिखों पर अत्याचार होने शुरू हो गये, इसलिए अंततः बल्लभ भाई ने निज़ाम पर सैन्य दबाव डालने की योजना बनाई। बँटवारे के समय हुए समझौते के अनुसार भारत को पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपए चुकाने थे। मगर बल्लभ भाई अपने इरादों के पक्के थे। उनके अनुसार पैसे तभी चुकाने चाहिए थे, जब कि पाकिस्तान की फ़ौजें कश्मीर से पीछे हट जाएँ। उनका यह तर्क था कि इस समय पाकिस्तान को दिए गए पैसे भारत के खिलाफ़ जंग में ही इस्तेमाल किए जाएँगे। डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी व अन्य लोगों ने भी उनका समर्थन किया, लेकिन कैबिनेट के लोगों ने गांधी जी के दबाव में आकर पाकिस्तान को तय रुपए तत्काल दे दिए, भारतीय इतिहास की यह एक सबसे बड़ी ऐतिहासिक भूल थी। इसके जवाब में पटेल जी ने कड़ा विरोध जताया था। गांधी जी मुस्लिम तुष्टिकरण का रास्ता अपना रहे थे। लाखों मुस्लिमानों को बीच रास्ते से ही पाकिस्तान जाने से रोक लिया था। इससे आहत नाथूराम गोडसे नामक



एक युवा ने 30 जनवरी, 1948 को गांधी जी को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। गांधी ने अपने पुत्रों को भी मुस्लिम बनने को प्रोत्साहित किया। बापू के पुत्र हरिलाल पर इस्लाम का जुनून इस कदर सवार हुआ कि उसने अपनी सगी हिन्दु पुत्री के साथ इस्लाम न कबूलने पर दुष्कर्म का प्रयास किया।¹ बल्लभ भाई को इन सब घटनाओं से गहरा सदमा पहुँचा, पर फिर भी वह लगातार देश की सेवा में लगे रहे। उन्होंने गांधी जी के नाम पर गांधी स्मारक निधि की स्थापना में खूब मेहनत की। उनकी लगन, मेहनत एवं निःस्वार्थ देश की सेवा देखकर देश की कई शिक्षण संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया। मानद उपाधियाँ दीं। जब कभी जवाहरलाल नेहरू कुछ दिनों के लिए देश से बाहर चले जाते थे, तब बल्लभ भाई कार्यवाहक प्रधानमंत्री का पद भी संभालते थे। उन्होंने कई महत्वपूर्ण फैसले लिए। गांधी ने एक बार कहा भी था, “जिस प्रकार दो बैल एक साथ काम करते हैं, ठीक उसी प्रकार नेहरू एवं सरदार को भी एक-दूसरे की बराबर ज़रूरत पड़ेगी, दोनों मिलकर राष्ट्र की गाड़ी को आगे बढ़ाएँगे।”

1. दैनिक भास्कर 5 नवंबर 2014

बेटे पर दुष्कर्म के आरोप से चिंतित होकर लिखे महात्मा गांधी के पत्र होंगे नीलाम

एजेंसी/लंदन

महात्मा गांधी के तीन सनसनीखेज पत्रों की अगले हफ्ते ब्रिटेन में नीलामी होगी। इन पत्रों में उन्होंने अपने बड़े बेटे हरिलाल के



महात्मा गांधी

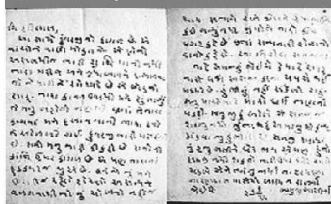


हरिलाल

व्यवहार को लेकर चिंताएं जताई हैं। वे लिखते हैं, ‘मनु तुम्हारे बारे में कई खतरनाक चीजें कह रही है। वह कहती है कि तुमने आठ वर्ष पहले उससे दुष्कर्म किया था। उससे वह इस कदर आहत हुई

कि उसे इलाज कराना पड़ा था।’ मनु साबरमती आश्रम में अपने दादा के साथ रहने आई थी। श्रोपशावर काउंटी स्थित मुलोकस ऑक्शनर्स को गांधीजी के द्वारा जून 1935 में लिखे पत्रों के सेट के लिए 50 से 60 लाख रुपए मिलने की उम्मीद है। मुलोकस ने कहा, ‘पत्र गुजराती में लिखे हैं। वे अच्छी स्थिति में हैं। ये पत्र गांधी परिवार के एक सदस्य के वंशजों से आए हैं। जहां तक हमें पता है इन्हें इससे पहले सार्वजनिक तौर पर देखा नहीं गया है।’

अगले हफ्ते ब्रिटेन में नीलामी



पंडित नेहरू की बहन को लिखे पत्र भी

नीलामी में जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित को गांधीजी द्वारा लिखे 27 पत्र भी शामिल हैं। ये पत्र गांधीजी ने जेल से लिखे थे। इनमें उन्होंने लिखा है, ‘महिलाओं ने हमसे ज्यादा काम किया है। दुनिया को भारतीय महिलाओं की ताकत जल्द देखने को मिलेगी। मुझे विश्वास है वे बहुत आगे जाएंगी। मुझे जरा भी आश्चर्य न होगा कि अगर तुम इसमें महत्वपूर्ण दायित्व निभाओ।’ यह पत्र 11 नवंबर 1930 को लिखा गया था।

हैदराबाद के निज़ाम ने भले ही स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। बिना इस बात पर विचार करे कि उनकी सत्ता-शक्ति अंग्रेजों की वैशाखी पर निर्भर थी और अब अंग्रेज छोड़कर गए तो, वह सपोर्ट-सिस्टम या नेटवर्क भी बिखर गए। हालाँकि कानूनीतौर पर और संवैधानिक तौर पर उनको यह अधिकार था, पर व्यावहारिक तौर पर यह एक पागलपन था, क्योंकि उनके पास सबसे बड़ा हथियार यानी जनता का समर्थन नहीं था। उनका असलियत से नाता टूट गया था।

14

जनता हैदराबाद में निज़ाम का शासन नहीं चाहती थी, लेकिन निज़ाम ताकत के बल पर शासक बने रहना चाहते थे। इसलिए जनता पर अत्याचार ढाये जाने लगे। पड़दादा यानी कि रज़ाकार फील्ड मार्शल क्रासिम के इशारे पर देशभक्तों को तेलंगाना के घने जंगलों में बनायी गयी जेलों में ठूसकर भयंकर यातनाएँ दी जाने लगी। कभी लव जिहाद की शिकार होकर मुसलमानी बनी मेरी दादी ने पाला बदल लिया था और वे सरदार पटेल के पक्ष में बातें करने लगी थी, “तुम्हें भी अब्बा का पागलपन अच्छा लगता है क्या? जो अलग देश बनाना चाहते हैं।”

“आत्महत्या करने से उन्हें मैं कैसे रोकूँ भला?” और इस प्रकार मेरे दादा भी पड़दादा के खिलाफ़ हो गए थे, क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तानी सेना की शक्ति का ज्ञान था। पड़दादा का भरा-पूरा परिवार था। सय्यद अहमद क्राजिम रिज़वी, आसिफ़, आरिफ़, अहमद, नासिर, फारूख, अहमद, रहमान (रहीम), सरवर सुलताना, जकिया, फोजिया, तय्यबा इत्यादि कुल मिलाकर सत्रह संतानें थी। मेरे दादा रहमान, जो सबसे छोटी संतान थे, उन्होंने अपने अब्बा यानी कि क्रासिम रिज़वी से मिलकर देशभक्तों की जेल बंदी पर गहरा रोष जताया तो पड़दादा ने उसे भी कैद कर लिया। लेकिन वे किसी तरह से बंधन मुक्त होकर भाग निकले और कुछ ही दिनों बाद सीधे दिल्ली पहुँच गए थे। उस दिन 14 नवंबर (1947) था, जैसा कि मैंने दादा जी की डायरी में पढ़ा था। दादा जी ने दिल्ली आकर सरदार पटेल को अपना परिचय देते हुए सारी बातें बताई, “पटेल साहब, हैदराबाद की

जनता दिल्ली के साथ है, लेकिन मेरे अब्बा एक और पाकिस्तान बनाना चाहते हैं और वह भी हिन्दुस्तान के अंदर।”

“तो क्या आप अपने अब्बा के साथ नहीं हैं।”

“मेरी हिन्दू पत्नी ने मुझे भी हिन्दी बना दिया है।” फिर दादाजी ने पटेल को एक लिफाफा दे दिया था। उस लिफाफे में पड़दादा यानी क्रासिम साहब के तमाम ठिकानों की जानकारी, रज़ाकारों की भावी योजनाएँ एवं बहुत कुछ ऐसी गुप्त बातों को लिखा गया था, जो शायद भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के पास भी नहीं थी। पटेल ने जैसे ही उस जानकारी पर सरसरी नजर डाली तो उनकी आँखों में चमक आ गई थी, “आपने तो मेरा काम बहुत आसान कर दिया।”

“आपका नहीं यह तो राष्ट्र का काम था। लेकिन....”

“लेकिन क्या?”

“मेरा तो कुछ नहीं, लेकिन मेरे अपने परिवार की हिफाजत...”

“उसकी चिंता आप न करें। भारत के हरेक नागरिक की सुरक्षा की चिंता करना भारत सरकार का दायित्व है।”

“ठीक है अच्छा अब चलता हूँ, जय हिन्द।” और दादा जी पटेल से जैसे ही मुलाकात खत्म करके चलते बने वैसे ही पड़दादा ने भी प्रवेश किया था और दादा को कँसाई की तरह घूरा था।

पड़दादा ने सरदार पटेल से मिलते अपने दिल की बात कह दी थी, “आप जानते हैं मैं आपसे क्यों मिलने आया हूँ।”

“पहले मेरे सवाल का जवाब दें।”

“कहिए जनाब?”

“आप जानते हैं कि मैंने आपको मिलने पर क्यों सहमति जताई है?”

“शायद इसलिए कि भविष्य में भारत सरकार हैदराबाद से बड़े ही अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखना चाहती हो।”

“क्या बकते हो?” पटेल गुस्सा हो गए थे, “हम चाहते हैं कि आप देश की एकता और उन्नति के लिए काम करें।”

“असंभव!”

“पर मेरे शब्दकोश में असंभव जैसा कोई शब्द नहीं है।”

“ओह!” पड़दादा ने घूरते हुए कहा था, “आप आखिर हैदराबाद को आजाद क्यों नहीं देखना चाहते?”

“मैं सभी संभव सीमाएँ लाँघ चुका हूँ। हैदराबाद के लिए मैं जितना कुछ स्वीकार कर चुका हूँ, उतना किसी भी रियासत के लिए मैंने नहीं स्वीकारा। मैं निज़ाम को राजप्रमुख भी बनाने पर सहमत हो गया हूँ।”

“पर असली समस्या यह नहीं है।”

“तो क्या है असली समस्या?”

“मैं चाहता हूँ कि आप हैदराबाद की मुश्किलों को समझें।”

“मुझे इसमें कोई मुश्किल नहीं दिख रही, बशर्ते तुमने पाकिस्तान से कोई समझौता न कर रखा हो, क्योंकि यह संभव हो सकता है।”

“अगर आप हमारी मुश्किलों को नहीं समझेंगे, तो हम कभी नहीं झुकेंगे”, पड़दादा एकदम चीख पड़े थे, “हम हैदराबाद की आजादी के लिए आखिरी दम तक लड़ेंगे।”

“अगर तुम आत्महत्या ही करना चाहते हो, तो मैं तुम्हें कैसे रोक सकता हूँ।” पटेल बड़ी सहजता से कह गए थे।

“तुम्हारी बंदरभक्ती से हम बहकाए में आने वाले नहीं हैं, आज तुम्हारी शक्ति बहुत ज़्यादा है, लेकिन यदि हमें जंग के मैदान में पकड़ लिया गया तो जानते हो क्या होगा?”

“क्या होगा?”

“मुकदमा तो लाल किले में ही चलाओगे, लेकिन उसमें हमारी ही जीत होगी, ठीक उसी तरह जिस तरह आजाद हिंद फौज के वीरों पर लाल किले में मुकदमा चलाया गया और आज वे हिन्दुस्तान ही नहीं पाकिस्तान के भी हीरो हैं।”

“तुम जैसे मामूली गुण्डे और धर्मांध को तो लाल किले जैसे ऐतिहासिक और पवित्र स्थल में कदम भी नहीं रखने दिया जाएगा।”

“आपके इरादे आ गए ना सामने! जो लाल किला हमारे पूर्वजों ने बनवाया, हमें उसमें कदम भी नहीं रखने दोगे।”

“बिल्कुल... कोई शक!”

“शक तो तुम्हें है हमें नहीं। हम तो बाबर और महमूद गजनवी की औलाद हैं। अल्ला ताला के करम से लाल किले पर हरा इस्लामी झण्डा

फिर लहरायेगा और बंगाल की खाड़ी की लहरें एक बार फिर मुस्लिम भारत के राज्य के पैर चूमेंगी।”¹

“दिन में ही सपना देख रहे हो क्या?” पटेल ने गुस्से से लाल होकर सुरक्षा अधिकारी को ही आवाज लगा दी, “अरे कोई है क्या? इस गुण्डे मवाली को उठाकर बाहर किसी गंदी नाली के गटर में फेंक दो।”

पड़दादा खाली हाथ और बेइज्जत होकर पटेल के पास से हैदराबाद लौट आए, लेकिन उन्होंने आते ही दादा जी को कैद कर लिया।

15

“यदि हैदराबाद को भारत में नहीं मिलाएँ तो इससे क्या फर्क पड़ता है?” नेहरू ने एक चर्चा के दौरान सरदार पटेल से पूछा।

“यदि आपको आनंदभवन का चौकीदार बनने के लिए विवश किया जाए तो उससे क्या फर्क पड़ेगा?” पटेल ने प्रतिक्रिया दी।

“तुम कहना क्या चाहते हो?”

“मैं चाहता हूँ पूरी आजादी।”

“क्या हैदराबाद के बिना आजादी पूरी नहीं है।”

“जी नहीं अधूरी है।”

“हैदराबाद ने अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में गुहार लगायी है और पाकिस्तान² भी उसके समर्थन में कूद पड़ा

1. K. M. Munshi ने 'The End of the Era' में रिज़वी साहब के सपने का वर्णन इस प्रकार किया है :
We are the grandsons of Mahmood Ghaznavi and the sons of Babur. When determined, we shall fly the Asaf Jahi Flag on the Red fort.

- 'The End of the Era', page 163

2. यदि जिन्ना की मौत न होती तो पाकिस्तान हैदराबाद को हर संभव सहायता देकर भारत की एकता में रोड़ा अटकाता।

'Indian Summer' में Alex von Tunzelmann ने लिखा है कि Specifically, he asked wheather Pakistan could guarantee that food, weaponry and troops be supplied...

- 'Indian Summer', page 223

निज़ाम के गुर्गे हैदराबाद को स्वतंत्र देश बनाने के लिए विश्व स्तर पर एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे।

'The Story of the Integration of the Indian States' में V.P. Menon ने लिखा कि If the Union government takes any action against Hyderabad, 100,000 men are ready to join our army. We also have 100,000 bombers in South Arabia ready to bomb Bombay.



निज़ाम हैदराबाद की गाड़ी पर बम फेंकने वाली त्रिमूर्ति

है, ऐसे में उसके अंतरिम मामलों में दखल देना क्या उचित रहेगा।”

“जब जनता ने ही उसे नकार दिया है, तो फिर वह कौन होता है, संयुक्त राष्ट्र में जाकर ही उसे क्या मिलेगा?”

“जनता ने उसे नकार दिया...अर्थात्?”

“आर्य समाज के नेतृत्व में जनक्रांति हो गयी है, तीन आर्य समाजियों ने तो मिलकर निज़ाम की गाड़ी पर बम तक फेंक दिया, लेकिन देश का दुर्भाग्य कि वे बच गए। नरेंद्र नामक एक किशोर तो युवा हृदय सम्राट बन चुका है। आर्य समाज एवं हिन्दू महासभा के आंदोलन ने हैदराबाद रियासत के विलय की आधारशिला रख दी है, बस

आप देश का प्रधानमंत्री होने के नाते पुलिस कार्रवाई करने की अनुमति दे दें। आपको बता दूँ कि निज़ाम वायसराय से भेंट कर चुका है और



निज़ाम एवं वायसराय



नरेंद्र

संयुक्त राष्ट्र में अलग स्वतंत्र देश बनाने का दावा पेश कर चुका है, यदि ऐसा हो गया, तो हैदराबाद भारत के अंदर दूसरा पाकिस्तान होगा।” नेहरू सामने प्लेट में रखी नमकीन को उठाकर मुँह में डाल चबाने लगे। तो तभी पटेल ने एक



भारतीय सेना के
खिलाफ मोर्चा
संभाले हुई
अलगाववादी
मुस्लिम
महिलाएँ ।



भारतीय सेना से जंग की योजना बनाते क़ासिम रिज़वी

कागज़ उसकी ओर बढ़ा दिया, “इस पर आपके हस्ताक्षर चाहिए।”

“यह क्या है?”

“हवाई जहाज का प्रधानमंत्री कोटे से तुरंत टिकट लेने के लिए एक फार्म है।”

“ओह, यह बात है।” और नेहरू ने वह पत्र बिना पढ़े उस पर हस्ताक्षर कर दिये। दरअसल वह कोटे से हवाई टिकट लेने के लिए फार्म नहीं, बल्कि हैदराबाद पर पुलिस कार्रवाई करने के लिए टाइप किया गया प्रधानमंत्री की ओर से लिखा गया आज्ञा पत्र था। इस पत्र को स्वयं पटेल ने टाइप किया था, क्योंकि वह जानते थे कि नेहरू जी आसानी से हैदराबाद पर पुलिस कार्रवाई करने की अनुमति नहीं देंगे। उधर, क़ासिम रिज़वी हैदराबाद को स्वतंत्र देश बनाने के लिए योजना बना रहा था और उसने पुरुषों के अलावा महिलाओं की सैन्य टुकड़ी भी तैयार की थी।



फलकनुमा पैलेस के पास रज़ाकार जंग की तैयारी में



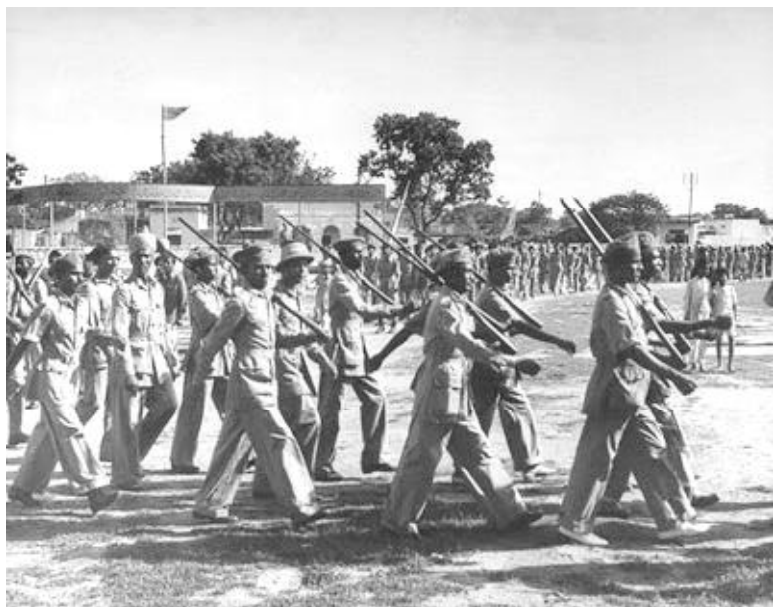
निज़ाम के खिलाफ मेरी पड़दादी सलमा बेगम
तिरंगा लिए हुए



मेजर जनरल चौधरी के सामने आत्मसमर्पण करते
मेजर जनरल सय्यद अहमद

सन् 1948 में 13 सितंबर का दिन ऐतिहासिक क्षणों को लिख रहा था। हैदराबाद में भारतीय सेना 5 दिवसीय अभियान 'पोलो आपरेशन' के तहत 5 भागों में विभाजित होकर नलदुर्ग पुल, हाकिमपेट, बेगमपेट, हैदराबाद नगर, तालमुड, कल्याणी, होमनाबाद, बीदर, जहीराबाद, राजसुर, सदारस्कोपेट आदि मोर्चों पर निज़ाम सरकार और पड़दादा क़ासिम की संयुक्त 2 लाख 52 हजार सशस्त्र सैनिकों से युद्ध कर रही थी। इनमें 2 लाख तो रज़ाकार ही थे। इन सेनाओं का कमाण्डर था मेजर जनरल सैयद अहमद। इसके अलावा ऑस्ट्रेलियाई हवाबाज सिटनी काटन, ब्रिटिश लेफ्टिनेन्ट टी. टी. मूर, मेजर जनरल एल. एल्ट्रॉज़ भी निज़ाम के पक्ष में मुस्लिम सेना की तरफ से युद्धरत थे। भारतीय सेना का नेतृत्व संभाले हुए थे लेफ्टिनेंट जनरल राजेन्द्र सिंह तथा मेजर जनरल चौधरी।

यह कटु सत्य है कि इस अभियान के पूर्व रज़ाकार न सिर्फ हिन्दू जनता का कत्ल कर रहे थे वरन हिन्दू बहन-बेटियों का अपहरण करके उन



जंग के लिए कूच करते रज़ाकार

पर अत्याचार भी कर रहे थे। क़ासिम रिज़वी ने इस कत्लेआम को जिहाद का नाम दिया था और जिहाद का अधिकार तो कुरान-ए-पाक ने दिया है। हथियार-हफ़्ता के दौरान क़ासिम रिज़वी साहब ने 31 मार्च, 1948 को अपने भाषण में कहा था, “मुसलमानो, जिहाद शुरू करो। सभी हिन्दुस्थानी मुस्लिम हमारे लिए फिफ़्थ कालमिस्ट (पंचमांगियों) का काम करेंगे।”

फिर अप्रैल में उन्होंने कहा, “वह दिन करीब है जब बंगाल की खाड़ी से उठने वाली लहरें निज़ाम सरकार की कदमबोसी करेंगी। अगर हिन्दुस्थान ने हैदराबाद पर हमला किया तो उसे यहाँ डेढ़ करोड़ हिन्दुओं की हड्डियाँ ही मिलेंगी।” क़ासिम रिज़वी उन दिनों निज़ाम सरकार का खास सलाहकार बना हुआ था। इसी बीच 11 सितंबर 1948 को मोहम्मद अली जिन्ना दुनिया से कूच कर गए और पड़दादा का सबसे बड़ा हमदर्द अब इस दुनिया में नहीं रहा था।

वर्षा-काल था। अभी सूर्योदय नहीं हुआ था कि 13 सितंबर को भारतीय सेना ने नलदुर्ग पुल जीतकर उस पर कब्ज़ा कर लिया। ब्रिटिश लेफ्टिनेंट टी. टी. मूर को उस पुल को उड़ाने के लिए भेजा गया था। उसे पकड़ लिया गया। इस युद्ध में पड़दादा के 632 सैनिक मारे गये, कई घायल हुए। उधर भारतीय सेना के 8 सैनिक खेत रहे और 8 ही सैनिक घायल हुए। दूसरी ओर तुलजापुर के मोर्चे पर रज़ाकारों के साथ पठान सैनिक तथा कुछ रज़ाकार स्त्रियाँ भी लड़ाई में भाग ले रही थीं। ऐसा आरोप लगाना ठीक नहीं, क्योंकि उन औरतों में से एक औरत मेरी दादी थीं और पेट से थीं और इसी दौरान दादी को प्रसव पीड़ा हो गई थी, यह देखकर भारतीय सेना की मेवाड़ इन्फेन्ट्री के राजपूत सैनिकों ने आगे बढ़कर मुस्लिम औरतों को एक ओर कर दिया।

मेवाड़ी सैनिकों ने वहाँ रज़ाकारों और पठानों की तो लाशें गिरा दीं और तुलजापुर को जीत लिया, परन्तु औरतों पर न तो हाथ उठाया, न उनका कोई अपमान किया और न ही उन्हें गिरफ्तार किया। भला एक जच्चा-बच्चा को गिरफ्तार करके वे दुनिया के सामने मुँह कैसे दिखाते। सच बात तो यह है कि दादी और उसकी सहायिका किसी लड़ाई में भाग नहीं ले रही थी, बल्कि वे तो किसी सुरक्षित स्थान पर जा रही थी। दादी



जंग पर जाती हुई निज़ाम की शाही सेना

नजरबंदी से भाग निकली थी। यह सच है कि उनके हाथ में हथियार थे, लेकिन वे आत्मरक्षा के लिए थे, भारतीय सेना पर उठाने के लिए नहीं। दादी भला भारतीय सेना पर हथियार कैसे उठाती, क्योंकि खुद जब दादा ही पड़दादा की सारी गुप्त योजनाओं का कच्चा चिट्ठा पटेल को सौंप आए थे। लेकिन यहाँ एक दुखद घटना भी घटी, भारत सरकार ने 632 सैनिकों के मारे जाने की जो घोषणा की थी, वह सही नहीं थी, क्योंकि उनमें सभी लड़ाका नहीं थे। कई तो कैदी ही थे, जो लड़ाई के दौरान भाग निकले थे और अचानक भारतीय सेना की गोली का निशाना बन गए थे। दुर्भाग्य से दादा भी उनमें से एक थे।

दादा की तो लाश भी नहीं मिली थी, गोला-बारूद से शरीर के चिथड़े-चिथड़े उड़ गए थे। जिस युवक ने पटेल को हैदराबाद में भारतीय सेना भेजने के लिए उकसाया उसी भारतीय सेना के बारूद से उसका अंतिम हथ्र ऐसा हुआ था, लेकिन वह दौर ही ऐसा था, यदि दादा भारत की ओर से लड़ते हुए अपने ही देशद्रोही पिता की गोली से मरते तो दादी को भी गर्व होता और आने वाली नई पीढ़ियों को भी।

अंततः सभी मोर्चे जीत लिये गये। रज़ाकारों ने भारतीय एजेन्ट



भारतीय सेना के शिकंजे में देशद्रोही रज़ाकार

जनरल के. एम. मुंशी को कैद कर रखा था। वे मुक्त हुए और 18 सितंबर को सायं 4 बजे मेजर जनरल एल्ड्रॉज ने हैदराबादी फौजों का बिना शर्त समर्पण कर भारत में हैदराबाद के पूर्ण विलय को स्वीकार किया। निज़ाम का अली मंत्रिमंडल बर्खास्त कर दिया गया।

अली-मंत्रिमंडल के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। हाईकोर्ट में कभी वकालत का झण्डा गाड़ने वाले पड़दादा क़ासिम रिज़वी को अपने ही घर से अरेस्ट कर लिया गया। उनके साथ उनके छह अन्य विश्वासपात्र भी अरेस्ट किए गए थे।

इस विलय का श्रेय आर्य समाज और सरदार पटेल को ही था। 48 घंटे के अंदर हैदराबाद नामक स्टेट का अस्तित्व खत्म हो गया। निज़ाम के गुर्गों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद सरदार बल्लभ भाई पटेल विमान से सीधे हैदराबाद के लिए रवाना हुए। निज़ाम को यह बात पहले ही पता चल गयी थी।

निज़ाम की गाड़ी बेगमपेट हवाई अड्डे की ओर दौड़ी चली जा रही थी, लेकिन उस दिन उनकी गाड़ी पर हैदराबाद रियासत का ध्वज नहीं लगा हुआ था। शायद उनका ड्राइवर लगाना भूल गया होगा, या फिर पुलिस एक्शन में रज़ाकारों की हार के बाद ध्वज लगाने की हिम्मत नहीं हुई होगी। मैं तो कहती हूँ हिम्मत ही नहीं हुई होगी। जैसे ही एयरपोर्ट के मुख्य द्वार पर गाड़ी पहुँची तो लालसिंह आर्य, जो पटेल के आगमन से पहले उनकी सुरक्षा के लिए द्वार रक्षक बना हुआ था उसने उसे रोक दिया, “ठहरो, बिना अनुमति पत्र के यह गाड़ी हवाई अड्डे के अंदर नहीं जा सकती।”

“आप जानते नहीं यह गाड़ी किसकी है?” निज़ाम के ड्राइवर ने अकड़कर कहा।

“किसकी है?”

“निज़ाम सरकार की और वे इसी में हैं।”

“ओह! भूतपूर्व निज़ाम सरकार की।” लालसिंह आर्य ने कहा।

“भूतपूर्व...।” ड्राइवर चौंका।

“भूतपूर्व नहीं तो क्या? यदि भूतपूर्व नहीं होते तो क्या इस गाड़ी पर हैदराबाद रियासत का ध्वज नहीं होता।”

यह सुनते ही निज़ाम साहब आपे से बाहर हो गए, “कौन बदतमीज है।”

“बदतमीज नहीं द्वाररक्षक कहिए श्रीमान?”

“तुम्हारी इतनी हिम्मत कि हमसे जबान लड़ाते हो और सलाम तक ठोका नहीं।”

“सलाम तो पद और प्रतिष्ठा को ठोका जाता है श्रीमान् और आपने दोनों ही गँवा दी है। यदि आप बिना संघर्ष किये भारत में मिल जाते तो हर भारतीय आपके चरणों की धूल मस्तक पर लगाता, लेकिन अब कोई आप पर थूकने पर भी अपनी...।”

“ठीक है...ठीक है...हमें जाने दो।” हालत देखने लायक थी।

“मगर क्यों?”



सरदार पटेल के सामने झुकते निज़ाम सरकार का ऐतिहासिक चित्र

“पटेल जी का जहाज आने वाला है, उनकी आवभगत करनी है।”

“कुछ फूलों का गुलदस्ता लाए कि नहीं।”

“लाया हूँ ना!”

“दिखता तो नहीं।”

“विलय के संलेख पर हस्ताक्षर करने वाली क्या यह कलम दिखायी नहीं देती।” उन्होंने अपनी जेब में लगी कलम की ओर इशारा किया।

“ओह! आप हैदराबाद का भारत में विलय करने जा रहे हैं। यह तो बड़े सौभाग्य की बात है। नये भारत में आपका स्वागत है। खुशी से जाइये श्रीमान् और आते वक्त मिठाई खाकर जाना मत भूलना।”

“ठीक है...ठीक है..” कहकर निज़ाम गाड़ी में बैठ गये और ड्राइवर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।

18

बहुत से लोग एयरपोर्ट पर सरदार पटेल के आने के ऐतिहासिक क्षणों का इंतजार कर रहे थे। और फिर वे स्वर्णमयी क्षण आ ही गये। जैसे ही उनका प्लेन हवाई पट्टी पर उतरा तो निज़ाम सरकार उनकी ओर दौड़े। जब तक वे प्लेन के पास पहुँचे पटेल भी हवाई जहाज से उतर चुके थे, “जय हिन्द निज़ाम साहब!” पटेल ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

“जय हिन्द...जय भारत...।” निज़ाम झुकते हुए स्वतः ही करबद्ध हो गये। वह शासक जो इंग्लैंड के सम्राट के सामने भी मुख उठाकर बातें करता था, आज सरदार पटेल ने सामने हाथ जोड़े हुए झुका हुआ खड़ा था। यही वे ऐतिहासिक क्षण थे, जिनके कारण सरदार पटेल को लौह पुरुष की उपाधि से सम्मानित किया गया।

“मेरे लिए क्या आदेश है?” निज़ाम ने पटेल से पूछा।

“सम्मिलन के संलेख पर हस्ताक्षर कर स्वयं भी सुखपूर्वक रहें और हमें भी आज़ादी की खुली हवा में साँस लेने दें।”

“सम्मिलन का संलेख...हम तो अंग्रेज़ों के अधीन थे और आप हैं स्वतंत्र भारत के प्रतिनिधि, फिर तुम्हारे संलेख पर हस्ताक्षर करना क्या कानूनन है? हमारे मुताबिक तो आप गलत करवाना चाहते हैं?”

“एकदम कानूनन है महामहिम उस्मान अली,” पटेल ने उनसे कहा, “जैसी कि भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम 1947 में व्यवस्था है, तदनुसार अगस्त 1947 के पन्द्रहवें दिवस से एक स्वतन्त्र अधिराज्य ‘भारत’ के नाम से विदित, स्थापित किया गया और भारत सरकार अधिनियम 1935, ऐसी सभी अवक्रियाओं, परिवर्धनों, अनुकूलनों तथा संशोधनों सहित, जिनको गवर्नर जनरल अपनी आज्ञा द्वारा निर्दिष्ट करें, भारत के अधिराज्य पर लागू होगा; और जैसा कि भारत सरकार अधिनियम 1935 इस भाँति गवर्नर जनरल द्वारा अनुकूलित होकर व्यवस्था करता है, तदनुसार कोई भी रियासत शासक द्वारा सम्मिलन के संलेख पर हस्ताक्षर किए जाने पर भारतीय अधिराज्य में सम्मिलित हो सकती है।”

“हो सकती है ना, जरूरी तो नहीं।” निज़ाम ने कहा।

“जरूरी ही है।”

“क्यों?”

“यह समय की जरूरत है।”

“तो मैं क्या करूँ?”

“विलय के घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कर दें,” कहते हुए उन्होंने एक घोषणा पत्र उन्हें थमा दिया। निज़ाम ने बिना घोषणा पत्र पढ़े उस पर हस्ताक्षर कर दिये और फिर उसे पढ़ना शुरू किया :

“मैं लेफ्टीनेन्ट जनरल हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस आसफ़जाह, मुज़फ़्फर-उल-मुल्क, निज़ाम-उल-मुल्क, निजामुद्दौला सर मीर उस्मान अली खाँ बहादुर, फ़तेहजंग, जी. सी. एस. आई. जी. बी. ई।

शासक राज्य हैदराबाद रियासत

उपरोक्त राज्य में तथा उस पर अपने प्रभुत्व के अधिकार प्रयोग द्वारा यहाँ पर यह सम्मिलन का संलेख निष्पादित करता हूँ; और

1. मैं यहाँ पर घोषित करता हूँ कि मैं भारतीय अधिराज्य में सम्मिलित होता हूँ, इस इरादे से कि भारत के गवर्नर जनरल, अधिराज्य का विधान मण्डल, संघीय न्यायालय तथा कोई अन्य अधिराज्य प्राधिकारी सत्ता जो अधिराज्य प्रक्रियाओं के उद्देश्य से स्थापित की गई हो, मेरे इस सम्मिलन के संलेख के प्रभाव द्वारा परन्तु इसकी धाराओं से अनुशासित और केवल अधिराज्य के प्रयोजन से राज्य हैदराबाद दक्खिन (इसके अनन्तर अभ्युद्दिष्टित ‘यह राज्य’) के सम्बन्ध में, ऐसे कार्यों के हेतु जिनको करने का अधिकार भारत सरकार अधिनियम 1935 के अन्तर्गत, जिस भाँति यह अधिनियम भारतीय अधिराज्य में अगस्त 1947 के पन्द्रहवें दिन लागू हो अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकते हैं; और मैं यह घोषित करता हूँ कि भारतीय अधिराज्य ऐसे प्रतिनिधि या प्रतिनिधियों द्वारा, जैसा वह उचित समझे इस रियासत के जनपद एवं आपराधिक न्याय की प्रशासनिक व्यवस्था के सम्बन्ध से उन समस्त अधिकारों, शक्तियों और क्षेत्राधिकार का प्रयोग कर सकता है, जो किसी समय सम्राट् के प्रतिनिधि द्वारा सम्राट् की ओर से भारतीय रियासतों के साथ उनके सम्बन्धों के विषय में प्रयोग किए जाते थे।
2. मैं यहाँ पर वैधानिक अनुबन्ध स्वीकार करता हूँ कि विश्वस्त रूप से इस राज्य में मेरे द्वारा अधिनियम के आदेशों को मेरे इस सम्मिलन के संलेख की स्वीकृति के फलस्वरूप उचित रूप से लागू करके प्रभावकारी बनाया जाएगा।
3. अनुच्छेद 1 की व्यवस्था के प्रतिकूल न होकर मैं अनुसूची में निर्दिष्ट सभी बातों (मामलों) को स्वीकार करता हूँ जिनके विषय में अधिराज्य

का विधान-मण्डल इस रियासत के लिए क़ानून बना सकता है।

4. मैं यहाँ पर घोषित करता हूँ कि मैं भारत के अधिराज्य में सम्मिलित होता हूँ, इस विश्वास पर कि यदि कोई इक्करारनामा गवर्नर जनरल और इस राज्य के शासक के बीच होता है कि अधिराज्य के विधान मण्डल के किसी क़ानून से सम्बन्धित, इस राज्य के प्रशासन के विषय में कोई कार्य इस राज्य के शासक द्वारा सम्पन्न किया जाएगा, तो ऐसा कोई भी इक्करारनामा इस संलेख का एक भाग होगा और तदनुसार व्याख्या द्वारा उसको प्रभावकारी समझा जाएगा।
5. मेरे इस सम्मिलन के संलेख की धाराएँ, अधिनियम अथवा भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम 1947 में किसी प्रकार के संशोधन द्वारा परिवर्तित न होंगी जब तक वह संशोधन मेरे द्वारा इस संलेख के अनुपूरक संलेख में स्वीकृत न होगा।
6. इस संलेख द्वारा अधिराज्य विधान मण्डल को अधिकार नहीं होगा कि वह इस रियासत हेतु कोई क़ानून बनाए जिसके द्वारा वह किसी कार्य के लिए अनिवार्यतः भूमि अधिग्रहण करें, परन्तु मैं उत्तरदायित्व लेता हूँ कि यदि अधिराज्य अपने किसी अधिनियम हेतु, जो इस राज्य पर लागू है, भूमि प्राप्त करना ज़रूरी समझता है, तो मैं उसके खर्चे पर भूमि प्राप्त कर दूँगा अथवा वह भूमि यदि मेरी होगी तो उन शर्तों पर, जो परस्पर तय हो जाएँगी, अधिराज्य को हस्तान्तरित कर दूँगा अथवा इक्करारनामे की अवहेलना पर भारत के प्रधान न्यायाधीश द्वारा नियुक्त मध्यस्थ का निर्णय स्वीकार करूँगा।
7. इस संलेख में कोई बात मुझे अनुबन्धित नहीं करेगी कि मैं भारत के किसी भावी संविधान को स्वीकार करने अथवा उसके अन्तर्गत भारत सरकार से इक्करारनामे करने को बाध्य रहूँगा।
8. इस संलेख में कोई बात इस राज्य में या राज्य पर मेरा प्रभुत्व क़ायम रहने में बाधक न होगी, सिवाय संलेख की व्यवस्थानुसार। इस राज्य के शासक की हैसियत से जो अधिकार, शक्ति और प्रभुता मुझे प्राप्त है उसके प्रयोग में, अथवा जो क़ानून इस समय इस राज्य में लागू हैं, उनकी वैधता में, संलेख की व्यवस्था मान्य होगी।
9. मैं यहाँ पर घोषित करता हूँ कि मैं इस राज्य के पक्ष से यह संलेख

निष्पादित करता हूँ और इस संलेख का कोई सन्दर्भ मुझ से या इस राज्य के शासक से जहाँ भी होगा वहाँ मेरे अतिरिक्त मेरे वारिसों और उत्तराधिकारियों से भी उसका सम्बन्ध माना जाएगा।



मेरे हस्ताक्षर द्वारा आज 15 सितंबर 1948।

उस्मान अली...

मैं यह सम्मिलन का संलेख यहाँ पर स्वीकार करता हूँ...आज दिनांक सन्.....।

.....

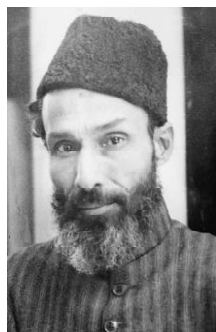
भारत का गवर्नर जनरल”

“शुक्रिया उस्मान अली, अब न होगी देश में खलबली और हम बनाते हैं आपको हैदराबाद राज्य का बली यानी कि राजप्रमुख।” उन्होंने हास्यात्मक टिप्पणी की थी।

“हैदराबाद राज्य का प्रमुख...अर्थात् हमारे राज्य में मिले हुए अन्य जिलों का भी प्रमुख...” वह प्रसन्न हो उठे थे।

19

पड़दादा और उसके सहयोगियों पर भारत सरकार ने मुकदमा चलाया और उनके मुकदमे का फैसला अभी आया भी नहीं था कि 1949 में पड़दादा का सारा परिवार कराची चला गया। लेकिन मेरी दादी नहीं गई, क्योंकि वह तो अब उस परिवार का हिस्सा ही नहीं थी। दादा रहमान भी तो सारे अधिकारों से बेदखल थे और दादी सलमा बेगम तो जैसे-तैसे अपनी एकमात्र नाबालिग संतान का पालन पोषण करने लगी थी।



पड़दादा

10 सितम्बर 1950 को पड़दादा को सात साल की सश्रम कारावास

की सजा मिली, लेकिन निज़ाम सरकार के हस्तक्षेप से उन्हें जल्द छोड़ दिया गया, जिसके बाद वे मुक्त होते ही पाकिस्तान चले गए और 15 जनवरी 1970 को कराची में उनका इंतकाल हो गया और जिस समय उनका इंतकाल हुआ उस समय उनके बहिष्कृत पुत्र का पुत्र यानी कि पौत्र अर्थात् मेरे अब्बा भी एक बेटी का पिता बन चुके थे, लेकिन मेरा जन्म अभी नहीं हुआ था, क्योंकि मेरा जन्म तो बहुत बाद में हुआ। मुझसे बड़ी तो दो बहनें और एक भाई हैं, जिसमें से एक बहन का इंतकाल बचपन में ही हो गया था और दो आज मेरी ही तरह बाल-बच्चों वाली बन चुकी हैं।

दादी को अपने ही देश में शरणार्थी जैसा जीवन बिताना पड़ा। वे हुसैन सागर झील के किनारे एक लावारिस जीवन जीने तक को मजबूर हुईं। 1562 में निर्मित हुसैन सागर झील सिकंदराबाद को हैदराबाद से अलग करती है। आज़ादी के बाद इस झील के पुश्ते के किनारे 30 ऐतिहासिक व्यक्तियों की मूर्तियाँ स्थापित की गईं। टैंक बंड के नाम से प्रसिद्ध इस झील के मध्य जिब्राल्टर चट्टान पर 16 फुट ऊँची और 350 टन की एक ही शिलाखंड पर बनी भगवान बुद्ध की विशालकाय मूर्ति स्थापित की गई है। शाम के समय यहाँ अक्सर प्रेमी जोड़े खूब गुटरगूँ करते हैं। कई जोड़े तो मूर्तियों के पीछे बैठकर अश्लील हरकतें तक करते हैं। यहीं पास ही इंदिरा पार्क है, वह भी प्रेमी जोड़ों के लिए प्रसिद्ध है और पास प्रसिद्ध अखबार तेलुगू दैनिक वार्ता और स्वतंत्र वार्ता का कार्यालय भी यहीं है। आज यहाँ इतना कुछ है, लेकिन उस समय तो यह वीरान और जंगल था। यह अच्छी बात है कि एक जैन परिवार दादी और दादा के बारे में सबकुछ जानते थे, क्योंकि उसी जैन परिवार के एक सज्जन श्रेयांस जैन ने दादा को हैदराबाद से दिल्ली भेजने और फिर दिल्ली में सरदार पटेल से भेंट कराने का प्रबंध किया था और इसी भेंट के दौरान दादा ने सरदार पटेल को पड़दादा के सारे कच्चे चिट्ठों का राज थमा दिया था। दादी की इन सज्जन ने बहुत मदद की।

इस जैन परिवार ने टैंक बंड से आधा किलोमीटर दूर दोमलगुड़ा में भगवान महावीर के नाम से एक विद्यालय की स्थापना करने में अहम योगदान दिया था, जिसका ग्राउंड कई एकड़ तक फैला हुआ था। दादी

को स्कूल में सेवा करने का अवसर दे दिया गया, और फिर बाद में उन्होंने सिर छुपाने के लिए अपना आसियाना भी बना लिया था। दादी ने अब्बा को ज्यादा न पढ़ाया, क्योंकि वे पौराणिक विचारों की थी और मानती थी कि अधिक पढ़े-लिखे वालों का दिमाग खराब हो जाता है। वे इसके लिए पड़दादा का उदाहरण दिया करती थीं, जो कभी हाईकोर्ट में वकील रहे थे और फिर हैदराबाद निज़ाम के साथ एक नया पाकिस्तान बनाने का षड्यंत्र रचा था। लेकिन पड़दादा को क्या मिला, जेल और यातना, जबकि निज़ाम सरकार तो मरते दम तक सरकार ही रहे। पहले निज़ाम थे और बाद में राजप्रमुख बने रहे।

20

सरदार बल्लभ भाई पटेल के लिए मुसलमानों के अंदर बहुत ही ग़लत एवं अनावश्यक दुराग्रह था, जबकि सच्चाई यह है कि पटेल तो राष्ट्रवादी मुसलमानों से बहुत हमदर्दी रखते थे। पटेल ने प्रकाशन विभाग को जो कि उनके अधीन था, ऐसी उर्दू पत्रिका निकालने का निर्देश दिया, जो पाकिस्तान की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका के समकक्ष हो। और इस तरह जन्म हुआ उर्दू मासिक 'आजकल' का, जिसने अपने पहले अंक में ही उर्दू पत्रकारिता में अद्वितीय स्थान बना लिया था। उर्दू के प्रख्यात शायर जोश मलीहाबादी इसके प्रथम संपादक नियुक्त हुए। वही जोश जिसने लव जिहादी बनकर रुकमणि (रुकैया) का हाथ थामा था। परंतु उनकी नियुक्ति के प्रस्ताव ने अधिकारियों में काफ़ी विवाद खड़ा कर दिया था। उनका नाम पटेल को यूपी की तत्कालीन राज्यपाल सरोजनी नायडू ने सुझाया था, जिसके पूर्वज कभी निज़ाम राज्य में जी हजूरी कर चुके थे। पटेल के निजी सचिव वी शंकर भी उर्दू के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने भी इस नाम का अनुमोदन किया। पर इस नाम का संगठित विरोध भी काफ़ी था, क्योंकि जोश प्रमुख कम्युनिस्ट थे और कम्युनिस्टों से पटेल को काफ़ी अलर्जी थी। पटेल ने अपने सचिव से पूछा, "सुना है कि जोश सुरा-सुंदरी के भी शौकीन हैं?"

"यह आरोप तो उनके ऊपर निराधार है। वह तो औरतों की बहुत इज़्ज़त करते हैं, यहाँ तक कि उन्होंने तो..."

“उन्होंने तो क्या मतलब!”

“एक ऐसी लड़की को जीवन संगिनी बनाया हुआ है, जो सरेआम दुष्कर्म की शिकार हुई थी।” और फिर उसने निज़ाम वाला किस्सा कह सुनाया था, जब रुकैया की नथ तोड़ी गई थी।

“यह तो अच्छा किया उन्होंने, लेकिन फिर भी आपकी दृष्टि में जोश कैसे हैं?”

“उनकी पृष्ठभूमि राष्ट्रभक्ति की रही है। उनकी रचनाएँ अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की आग का कार्य करती थीं, इसलिए तो उन्हें विद्रोही कवि कहा गया।”

“ओह, तो ठीक है, उनकी कोई कविता सुनाओ।”

और वे जोश की एक रचना सुनाने लगे थे :

शिकस्ते-ज़िन्दा का ख़्वाब*

क्यों हिन्द का ज़िन्दा¹ कांप रहा है, गूँज रही हैं तकबीरें²
उकताए हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं जंजीरें
दीवारों के नीचे आ-आ कर यूँ जमा हुए हैं ज़िन्दानी³
सीनों में तलातुम⁴ बिजली का, आंखों में झलकती शमशीरें⁵
भूकों की नज़र में बिजली है, तोपों के दहाने⁶ ठंडे हैं
तक्रदीर के लब⁷ को तुम्बिश है, दम तोड़ रही है तद्बीरें
आंखों में गदा⁸ की सुर्खी है, बेनूर⁹ है चेहरा सुलतां का
तख़रीब¹⁰ ने परचम खोला है, सिजदे¹¹ में पड़ी हैं तामीरें¹²
क्या उनको ख़बर थी, ज़ेरो-ज़बर¹³ रखते थे जो रूहे-मिल्लत को¹⁴
एक रोज़ इसी बेरंगी से झलकेंगी हज़ारों तसवीरें
क्या उनको ख़बर थी, होंटों पर जो कुफ़्ल¹⁵ लगाया करते थे
एक रोज़ इसी ख़ामोशी से टपकेंगी दहकती तक्ररीरें¹⁶
संभलो! कि वो ज़िन्दा गूँज उठा, झपटो! कि वो क़ैदी छूट गए
उट्टो! कि वो बैठीं दीवारें, दौड़ो! कि वो टूटीं जंजीरें

* कारागार के टूटने का सपना

1. कारागार 2. जयनाद 3. क़ैदी 4. तूफ़ान 5. तलवारें 6. मुँह 7. होंठ 8. भिखारी 9. निस्तेज 10. विध्वंस
11. सिर झुकाए; सिजदा-नमाज़- पढ़ते समय ज़मीन पर माथा टेकना 12. निर्माण 13. ऊपर-नीचे
14. जाति की आत्मा को 15. ताले 16. भाषण

शंकर के मुख से जोश की यह रचना सुनकर पटेल इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसी वक्त जोश की नियुक्ति का ओदश दे दिया। पर विभाग के सचिव एनसी मेहता इस आदेश को महीनों दबाये रखे रहे, क्योंकि वे जानते थे कि जोश पाकिस्तान समर्थक हैं और देश का एक गद्दार, जिसके बारे में पटेल के समक्ष उनकी विपरीत छवि अर्थात् देशभक्ति की छवि पेश की गयी है।

एक दिन अचानक शंकर से पटेल ने पूछा, “जोश ने पत्रिका का काम शुरू किया है कि नहीं?”

“मेरी जानकारी में अभी तो नहीं किया।”

“क्या?” पटेल की आँखें लाल हो गयी, कोई भी अफसरशाह पटेल के आदेश की अवहेलना कर ही नहीं सकता था, “मेहता ने मेरी अवज्ञा की, उन्हें इसी समय बर्खास्तगी का पत्र भेज दो और जोश जहाँ भी हों, उन्हें तुरंत बुलवाकर पत्रिका का कार्य सौंप दो।”

जोश को पत्रिका का कार्य सौंप दिया गया। पर वे तो अंदर ही अंदर पाकिस्तान द्वारा भारत पर आक्रमण करने के सपने देखा करते थे। नेहरू से उनकी खूब पटती थी।

जब जोश मलीहाबादी ने ‘आजकल’ के संपादक का कार्यभार संभाला, तो एक दिन वह पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिलने गए, “नमस्ते, पंडित जी।”

“नमस्ते, कहिए कैसे हैं जोश साहब।”

“अल्लाह का करम है।”

“कभी तो पटेल का भी करम समझ लिया करो, वे तो आपके ही महकमे के वजीर हैं, उनसे अब तक मुलाकात की या नहीं?”

“नहीं... मैंने उनसे अब तक तो भेंट नहीं की और न ही करना चाहता हूँ।”

“क्यों?” नेहरू ने पूछा, “उनसे मुलाकात क्यों नहीं करना चाहते?”

“उनका चेहरा मुजरिमों का-सा है।”

इस पर नेहरू जी ने बड़ा ही कहकहा लगाया और फिर जोश से कहा, “नहीं...नहीं...आपको उनसे अवश्य मिलना चाहिए। मैं फोन पर अभी

आपकी मुलाकात तय किए देता हूँ। आपका भ्रम टूट जाएगा।”

नेहरू जी ने तुरंत फ़ोन लगाया, “बड़े भाई नमस्कार।”

“नमस्कार,” उधर से आवाज आई, “कहिए पंडित जी, कैसे स्मरण किया?”

“स्मरण क्या? जोश साहब आपसे मिलना चाहते हैं।”

“ओह! जोश साहब,” उधर से आवाज आई, “अभी भेज दीजिए, उनसे मिलने का इच्छुक तो मैं भी हूँ।”

और फिर जोश साहब, थोड़ी ही देर में पटेल साहब की कोठी पर जा पहुँचे। पटेल धोती बाँधे हुए बरामदे में खड़े हुए थे।

“स्वागत।”

“शुक्रिया,” जोश साहब ने पटेल से हाथ मिलाते हुए कहा, “सरदार साहब मुझे आपसे मिलने का खास इशतयाक़ था।”

“आपको मुझसे मिलने का क्यों इशतयाक़ था?”

“इसलिए कि मैं आपकी बहुत सी बुराइयाँ सुन चुका हूँ।”

“बुराइयाँ?” कहकर मधुर सी मुस्कान के साथ वह उन्हें एक कमरे में ले गए, “आपने यह सुना होगा कि मैं मुसलमानों का दुश्मन हूँ। आप जितने भयंकर स्पष्टवादी हैं उतना ही मैं भी हूँ। इसलिए आपसे साफ-साफ़ कहता हूँ कि मैं आप जैसे उन तमाम मुसलमानों की बड़ी इज़्ज़त करता हूँ, जिनके खानदान बाहर से आकर यहाँ आबाद हो गये हैं। लेकिन मैं उन मुसलमानों को कतई पसंद नहीं करता जिनका ताल्लुक हिंदू कौम के शूद्रों से है। उन लोगों ने मुसलमानों की हुकूमत के संपर्क में आकर इस्लाम कबूल किया था। ये लोग दरअसल बड़े मुतास्सब, शरी और फिसादी हैं। और कम गिनती में होने के बावजूद ज़्यादा गिनती के हिंदुओं को दबाकर रखना चाहते हैं।”

“सरदार साहब, पहली बात तो यह कि दुनिया के तमाम इनसान एक ही नस्ल के हैं। मैं जात-पाँत का बिल्कुल भी कायल नहीं। दूसरी बात यह कि यदि आज से दो सौ या तीन सौ साल पहले किसी का पड़दादा नीच जाति का हिन्दू था, तो क्या आपका ख्याल है कि उसके अंदर जातिगत गुण आज भी हैं? आज भी वह शूद्र ही होता चला आ रहा है।”

“संस्कार कभी बदलते नहीं, जातिप्रथा को मैं भी नहीं मानता। लेकिन नीच जाति के मैं उन्हें मानता हूँ, जिन्होंने कभी मुस्लिम हुकूमत से डरकर इस्लाम स्वीकार किया और अब अपने को पाक समझते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही गुणों के आधार पर वर्णव्यवस्था चली आ रही है।”

उनका तर्क-वितर्क चल ही रहा था कि तभी पटेल साहब के सचिव ने आकर कहा, “आपने महाराजा पटियाला को टाइम दिया था। वह आ गये हैं।”

“ठीक है।” सचिव की बात का जवाब देकर उन्होंने जोश से कहा, “बखुरदार फिर कभी चर्चा करेंगे। अभी जरा पटियाला महाराज से भेंट कर ली जाए। ये राजा-महाराजा भारत की अंतिम निशानियाँ हैं।”

पटेल महाराजा पटियाला से मिलने चले गये तो जोश कोठी से निकल अपने आवास की तरफ़ चल पड़े, लेकिन तभी उनकी भेंट मौलाना आज़ाद से हो गयी। आज़ाद ने अपनी मोटर रोक कर जोश को आवाज दी, “जोश साहब, आप और सरदार पटेल?”

जोश ने गर्दन झुका ली, क्योंकि मौलाना आज़ाद उनकी विचारधारा को जानते थे, “दोस्ती संस्कृत के देवता और उर्दू समर्थक के बीच...बात कुछ हजम नहीं हुई?”

आज़ाद का व्यंग्य सुनकर पुलिस एक्शन में हैदराबाद में नष्ट हुई उर्दू संस्थाओं की अर्धसत्य कहानियाँ उसे स्मरण हो आयी।

वह सोचने लगे, “क्या हिन्दुस्तान को इसीलिए आज़ाद कराया था कि उर्दू का बेड़ागर्क कर दिया जाए। एक तरफ़ तो उर्दू पत्रिका का दिखावा और दूसरी तरफ़ राष्ट्रभाषा हिन्दी बना दी। हिन्दी के रहते उर्दू की उन्नति भला कैसे संभव है।” फिर उनके कान में दतिया रियासत के वजीरे आजम काजी अजीजुद्दीन के स्वर गूँज पड़े, “मैंने कहा था ना, हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया तो हिन्दू मुसलमानों का तहतेग़ कर डालेंगे।” फिर मन ही मन एक और विचार उठा, “पाकिस्तान बनानेवालों ने यह क्यों नहीं सोचा कि जो मुसलमान हिन्दुस्तान में रह जाएँगे उनका हथ्र क्या होगा? वे एक-एक मुसलमान को पाकिस्तान क्यों नहीं ले गए।”

पटेल की भेंट जोश से पहले कभी नहीं हुई थी, उनके सामने तो जोश

की देशभक्त की छवि पेश की गयी थी। उसी के आवेश में उन्हें संपादक बना दिया गया, लेकिन जैसे ही पटेल से जोश का सामना हुआ तो पटेल उसके अंतर्भावों को तभी समझ गये थे कि मैंने ग़लत आदमी का चुनाव किया है, लेकिन उन्होंने प्रत्यक्ष में कुछ नहीं कहा था। पर यह बात जोश भी भाँप गये थे, पटेल से उनके वास्तविक विचार भला कब तक छिपे रहेंगे, क्योंकि पत्रिका में उन्हें कुछ न कुछ तो अपनी पाकिस्तान परस्ती परोसनी होगी ही और पाकिस्तान परस्ती को हिन्दुस्तानी नेता भला कैसे सहन करेंगे?

जोश काफी दिनों तक पत्रिका निकालते रहे, उन्हें अच्छा खासा वेतन मिलता रहा और सरकारी सुविधाएँ सो अलग। लेकिन वे पाकिस्तान से भी बराबर संपर्क बनाए हुए थे और भारत के कई गुप्त भेद पाकिस्तानी आकाओं को सौंपते रहे। अंततः भारत सरकार के कानों में इस बात की भनक लग गयी और उन्होंने गुप्त रूप से जोश के खिलाफ जाँच करने के आदेश जारी कर दिए, पर इसकी भनक जोश को भी लग गयी कि उसके खिलाफ़ जाँच की जा रही है। इसलिए वे एक दिन चुपके से पाकिस्तान चले गए। उनके एक आका सिकन्दर मिर्जा तब पाकिस्तान के मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक थे, उन्होंने जोश को लाखों रुपए पुरस्कार में देने का वादा कर रखा था। जिन्हें भारत में कभी पद्म भूषण मिला था, उसे भारत से गद्दारी करने पर पाकिस्तान की धरती पर कदम रखने के बाद पुरस्कार में कराची में रिक्शे चलाने के लिए लाइसेंस दिए गए, कुछ सिनेमाघरों में हिस्सेदारी मिली और लाखों रुपए पुरस्कार में मिले। लेकिन इतिहास में तो उसका नाम कलंकित हो ही गया।

चांदी के चंद टुकड़ों के लिए देशभक्त का चोला पहनने वाला एक मुसलमान जोश मलीहाबादी भारत के साथ गद्दारी करके पाकिस्तान भाग गया। उसने सांप्रदायिक सद्भाव को ऐसी चोट पहुँचायी कि उनके इस कृत्य ने हिन्दुओं में मुसलमानों के प्रति पुराना संदेह फिर जगा दिया। पर जिसने अपने ही वतन से गद्दारी की हो, विदेशी उस पर भला कैसे यकीन कर सकते थे? जोश को चाहने वाले वे पाकिस्तानी ज़्यादा दिनों तक नहीं रह सके और पाकिस्तानी जनता ने उन्हें कभी अपना नहीं कहा। उन्होंने

प्रायश्चित्त करते हुए एक बार भारत आने के लिए आवेदन किया, पर प्रकाशवीर शास्त्री इस बात पर अड़ गए कि जोश एक ही शर्त पर भारत आ सकते हैं कि उन्हें यहाँ आते ही जेल में डाल दिया जाए।

और इस तरह जोश पाकिस्तान में अत्यंत दयनीय स्थिति में रहने लगे। अधिकांश समय वे नशे में धुल रहे थे और कोई सम्मान या कोई भी प्रशस्ति उन्हें पाकिस्तान में नहीं मिली। सरदार पटेल को उनके व्यवहार से कहीं अधिक धक्का पहुँचा था। उस धरती के प्रति जोश की गद्दारी को सरदार पटेल तो क्या कोई भी भारतीय कभी क्षमा नहीं कर सकता, जिसने उसे इतना कुछ दिया था। उन्होंने 'यादों की बारात' में अपना जीवन कथांश लिखा, लेकिन खेद है कि रुकैया से तलाक़ के बारे में कुछ नहीं लिखा। उन्होंने रुकैया को तलाक़ देकर किसी और से निकाह पढ़ लिया था। इसी बात से निज़ाम सरकार रुष्ट हो गए थे।

1925 में जोश ने उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद रियासत में अनुवाद की निगरानी का कार्य शुरू किया था, परन्तु उनका यह प्रवास हैदराबाद में ज़्यादा दिन न रह सका, क्योंकि रुकैया को छोड़ देने के बाद निज़ाम सरकार ने अपने राज्य से ही निष्कासित कर दिया। कालांतर में रुकैया भी पाकिस्तान चली गई थी और जोश भी। अपने जीवन की संध्या में पाकिस्तान में जोश जहाँ गरीबी की मार झेल रहा था, वहीं भारत के दिल्ली और हैदराबाद जैसे नगरों में उसकी अकूत संपत्ति थी, लेकिन उसे हासिल करे भी तो कैसे! वह तो स्वयं दिल्ली आ नहीं सकता था, क्योंकि आते ही उसे जेल में डाल दिया जाता। हालाँकि उन्होंने 'शालीमार' पिक्चर्स के लिए गीत लिखे हैं और इस दौरान वे अत्यंत अल्प समय के लिए पुणे में भी आए, लेकिन गिरफ्तारी की आशंका से बॉलीवुड में जम न सकें और जल्दी ही पाकिस्तान पुनः भाग गए थे। रुकैया दादी बन चुकी थी और जोश का बुढ़ापे में उसके प्रति प्रेम जागा था, क्योंकि उसकी दूसरी बीवी के बच्चों ने उसकी सेवा करने से किनारा कर लिया था। बूढ़े मलीहाबादी में अब जोश नहीं था, इसलिए सारे बच्चे उससे किनारा करते थे। परंतु जब उसने मरने से पहले एक दिन रुकैया के पौत्र अयाज़ को बताया कि दिल्ली और हैदराबाद में मेरे नाम से कुछ संपत्ति है और

हवेलियों पर तो अब तक ताले ही जड़े हुए हैं, तो अयाज़ इस संपत्ति को पाने की जुगत भिड़ाने लगा। पाकिस्तानी नागरिक होते हुए वे भारत में किसी भी संपत्ति पर दावा नहीं ठोक सकते थे। इसी सोच-विचार में दिन, महीने और फिर साल दर साल गुजरते चले गए। 22 फरवरी, 1982 को जोश इस दुनिया को अलविदा कह गए।¹

इसके बाद अयाज़ ने और उसकी हमसफ़र अशरफी बेगम ने अजमेर शरीफ में जियारत करने और दिल्ली एवं हैदराबाद के ऐतिहासिक स्थलों को देखने के लिए एक तीर्थयात्री एवं पर्यटक के रूप में आखिरकार वीज़ा हासिल कर ही लिया और वे करांची से हवाई जहाज़ द्वारा नई दिल्ली पहुँचे। अशरफी गर्भ से थी और उसे आठवाँ महीना चल रहा था, लेकिन उन्हें एक महीने में ही पाकिस्तान वापस लौट जाना था। परंतु अजमेर में जियारत करने के बाद जब वे हैदराबाद में गए तो अचानक ही अशरफी बेगम को पेट दर्द की शिकायत बार-बार होने लगी, तो उन्हें किंग कोठी अस्पताल में भर्ती करा दिया गया, जहाँ उन्होंने एक फूल-सी बच्ची को जन्म दिया।

किंग कोठी वही अस्पताल है, जिसमें निज़ाम सरकार ने अपने जीवन के अंतिम दिनों का बहुत हिस्सा तनहाई में गुजारा था। जनवरी 1967 में एक दिन मेरी अम्मी, जो तब तक अविवाहित थी, निज़ाम सरकार की ख़ैर ख़बर लेने गई थी, उन्होंने दूर हठो...दूर हठो...कहकर उनका स्वागत किया था। यानी कि वे जीवन के अंतिम दिनों में इतने भयभीत रहते थे कि उन्हें लगता था कि कोई उनकी हत्या न कर दे। वे भारत सरकार से ज़्यादा ख़फ़ा थे, जिसने उनके राज्य को ले लिया। लेकिन ईश्वर ने राजाओं को लंबा शासन दिया ही कहाँ है? ख़ैर फरवरी 1967 में ही वे चल बसे और हैदराबाद समेत आसपास के समस्त क्षेत्रों में कई दिनों तक किसी भी मुस्लिम परिवार के घर में चूल्हा नहीं जला। मुस्लिम लोग तो उसे ही सरकार कहते थे, अम्मी ने भी बताया था कि उन्होंने भी दो दिनों तक खाना नहीं खाया था। और वही किंग कोठी बाद में अस्पताल बना दिया गया। ख़ैर! बात अशरफी देवी के बच्ची पैदा होने की चल रही थी, तो

1. पाकिस्तान का हीरा जोश, अब्दुल खान, लाहौर, पृष्ठ 350

हम बता दें कि इस बच्ची के जन्म के साथ ही जोश परिवार की कहानी में अब एक नया मोड़ आया। जोश मलीहाबादी खुद तो जीते-जी कभी भारत नहीं आ सके, लेकिन उनके मरने के बरसों बाद उनकी पौत्री न केवल भारत आ गई, बल्कि पैदा होते ही भारत की नागरिकता का प्रमाण पत्र भी उसने हासिल कर लिया था।

जन्म से ही भारत की नागरिक होने का गौरव हासिल करने के बाद वह हैदराबाद एवं दिल्ली में जोश की बेनाम और लावारिश पड़ी अकूत संपत्ति की एकमात्र कानूनन वारिस बन गई थी। जोश की इस पौत्री का नाम 'सना' रखा गया। भले ही उसे जन्म होते ही कोर्ट कचहरियों के चक्कर क्यों न काटने के लिए तैयार किया गया हो। सना को एक रिश्तेदार के यहाँ इस शर्त पर छोड़ दिया गया कि वह रिश्तेदार न केवल सना का पालन-पोषण करेगा वरन् उसे जोश की सारी संपत्ति हासिल करने के लिए कानूनी मदद भी मुहैया करायेगा। परंतु इस एवज में रिश्तेदार ने हासिल होने वाली संपत्ति में से कुल मिलाकर आधा हिस्सा लेने की शर्त रखी थी और सना के बड़ी होने पर उसे अपने बेटे की बेगम बनाने की इच्छा भी पहले ही दर्शा दी थी।

21

जिस उर्दू मॉडल हाई स्कूल, हिमायत नगर, हैदराबाद में सना की प्रारम्भिक शिक्षा शुरू हुई, उसी में मेरी अम्मी ने मेरा भी दाखिला करवाया और सना मेरी ही कक्षा में थी। वह पढ़ने में बहुत होशियार थी, लेकिन थोड़ी घमंडी भी थी। घमंड तो उसे विरासत में मिला था। हमारी एक और सहपाठी थी वसंता।

सना से मेरी ज़्यादा नहीं बनती थी, लेकिन वसंता मुझे बहुत चाहती थी और अपनी छोटी बहन से ज़्यादा लाड़-प्यार करती थी। वसंता के दादा राजपाट चले जाने के बाद निज़ाम सरकार की रसोई में कभी मछलियाँ और अन्य खाद्य पदार्थ सप्लाई किया करते थे। वसंता का हमारे घर में खूब आना-जाना रहता था। मेरी उम्र उन दिनों करीब दस साल रही होगी, सना,

1. 'सना' यह काल्पनिक नाम है, लेकिन यह पात्र सत्य घटना पर आधारित है।

वसंता, मैं और मेरी छोटी बहन जरीना कई तरह के खेल बचपन में खेला करते थे। वसंता के अंदर देशभक्ति के गीत गाने एवं वेद मंत्र गुनगुनाने का जुनून उभार मार जाता था।

22

हैदराबाद मुक्ति दिवस को लेकर शहर में आर्य समाज ने बच्चों की एक प्रतियोगिता रखी थी, जिसमें किसी भी स्कूल के बच्चे भाग ले सकते थे और यह घोषित किया हुआ था कि विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार मिलेगा। पुरस्कार के लालच में हम भी प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते थे, लेकिन उसके लिए तैयारी करनी जरूरी थी। तो हैदराबाद मुक्ति दिवस पर गीत गाने के लिए मैं अपनी सहेलियों के साथ गीत का अभ्यास करने लगी। मदरसे की दीवार पर भारत का नक्शा लगा हुआ था और उसके सामने एक सहेली भारत माता के वेश में खड़ी हो गई। मैं और दूसरी सहेली रेणु ने हाथ जोड़कर भारत माता की आराधना शुरू की...लाड़ली वसंता ने एक वेद मंत्र कहना शुरू किया और हमने उसे दोहराना....जो इस प्रकार था :

भूमे मातर्नि धेहि मा
भद्रया सुप्रतिष्ठितम्
संविदाना दिवा कवे
श्रियां मा धेहि भूत्याम्

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।



पढ़ाई के दौरान मैं

हाल में माइक सेट भी रखा हुआ था, हमने नादानी में वह भी चालू कर दिया, लेकिन हम यह नहीं सोच सके कि इसकी आवाज मदरसे से बाहर जाएगी तो लोग क्या कहेंगे और हुआ भी कुछ ऐसा ही, लाउडस्पीकर के माध्यम से हमारी आवाज वातावरण में गूँज उठी। मुस्लिम आबादी थी, पास में मस्जिद भी। मस्जिद का इमाम अपने हुजरे में कई साथियों के

साथ मसनद पर लेटा था। हमारी आवाज हुजरे में घुसी, तो उनकी वार्तालाप को लकवा मार गया, शायद उन्होंने ऐसा ही कहा होगा :

“ये शैतानी आवाज कहाँ से आ रही है?” इमाम चौंकते हुए उठकर बैठ गए थे शायद और उनके साथ बोल उठे थे, “ये तो मदरसे से आ रही है।”

“मदरसा? और वेदमंत्र? क्या कयामत की निशानी पैदा हो गयी?”

इमाम ने मसनद से पैर नीचे उतारे और चप्पलें पहनी। आठ दस लोगों का अमला मस्जिद से निकलकर मदरसे की तरफ बढ़ गया। हाय अल्लाह अब हमारा क्या होगा? हमें यह चिंता तो थी ही नहीं। हम तो बस दो वेद मंत्र के बाद अब वंदेमातरम् गाने का अभ्यास कर रहे थे :

वंदे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्
वंदे मातरम्...वंदे मातरम्
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वंदे मातरम्...वंदे मातरम्

वैसे वंदेमातरम् के इतिहास से हम अनभिज्ञ थे और इतना ही समझते थे कि यह हमारे देश का राष्ट्रीय गीत है। गीत गाते हुए हम तो झूम ही रहे थे कि हाल का दरवाजा धड़ाम से खुला। भीड़ भीतर घुसी।

इमाम की त्योरियाँ चढ़ी हुई थी। भारत माता बनी लड़की के हाथ से तिरंगा छीन लिया उसने और उसे फेंक दिया, लेकिन जमीन पर गिरने से पहले ही मैंने उसे हवा में पकड़ लिया, क्योंकि उसे मैंने स्वयं तैयार किया था, सफेद कागज को तीन रंग से रंगकर...छोटे से कागज के तिरंगे को सीने से लगा लिया था, लेकिन तभी इमाम ने मुझको जोरदार चाँटा जड़ दिया और मेरे सीने की ओर हाथ बढ़ाने लगा, तो मैंने अपने उस ध्वज को अपनी कमीज में छिपा लिया।

“मैं अपना तिरंगा नहीं दूँगी!” घबराई हुई थी मैं।

“किसकी बेटी है रे तू?” इमाम ने सवाल दागा था।

“सईद साहब की!”

“ये कुफ्रिया गीत इस मुकद्दस जगह से क्यों गा रही थी।”

“कुफ्रिया नहीं... हम तो माँ भारती की आराधना...”

“बेवकूफ लड़की, मुसलमान अल्लाह के सिवाय किसी के सामने सिजदा नहीं करते और तू अल्लाह के बनाए मिट्टी के छोटे से गोले धरती के भी मामूली से टुकड़े इस हिन्दुस्तान को माँ-बाप बता रही है...करेला और वह भी नीम चढ़ा...ऊपर से वेद मंत्रों का प्रसारण भी कर दिया...आल इंडिया रेडियो का मंच समझा है क्या मदरसे के हाल को?”

“नहीं झूठ बोलते हो तुम...मिट्टी का टुकड़ा नहीं है मेरा हिन्दुस्तान ...क्योंकि मेरा ही नहीं आपका जिस्म भी इसी हिन्दुस्तान की मिट्टी से बना है और एक दिन इसी में मिल जाएगा।”

“नालायक जबान लड़ाती है, जिस्म मिट्टी का है, लेकिन रूह अल्लाह की बनाई हुई है...” इमाम ने मेरा कान ऐंठ दिया था। रोने लगी थी मैं, लेकिन साहस करके बोल ही पड़ी थी, “मगर अल्लाह की बनाई रूह रहती तो हिन्दुस्तान की मिट्टी से बनी जिस्म में ही है ना...हम जिस देश में रहते हैं, यहीं खाते हैं, पीते हैं, यहीं मरकर दफन होना है। यह देश हमें इतना सहता है, तो इस देश का गुणगान करना क्या गुनाह है?”

“हाँ वेद मंत्र, वंदेमातरम् या उन जैसा कोई अन्य भी कुफ्रिया गीत, जैसा तुम गा रही थी उन सबमें बुतपरस्ती की बू आती है, ऐसे गीत गाना गुनाह है।”

“लेकिन मैं तो बुतपरस्त नहीं वतनपरस्त हूँ और यदि वतनपरस्त होना गुनाह है, तो यह गुनाह मैं बार-बार करूँगी।” कहते हुए तिरंगे को माथे से चूमकर छाती से लगा घर चल दी थी। बुतपरस्त नहीं वतनपरस्त हूँ, यह विचार कहाँ से मन में आया पता नहीं, लेकिन मैं तो वहाँ से चल पड़ी थी और विभिन्न प्रकार के सवाल मेरे मन में कौंध रहे थे, फिर भी जो मैं सोच रही थी, वर्षों बाद मैंने उन शब्दों को इस गीत में कलमबद्ध किया :

मैं बेटी हिन्दुस्तान की
वसुधा कुटुम्ब के उद्यान की
शहीदों के रूधिर से जन्मी
अंश ऋषियों के वरदान की

नहीं किसी से डरने वाली
रानी झाँसी बनने वाली
मैदां में ही दिखला दूँगी
प्यासी हूँ बलिदान की
मैं बेटी हिन्दुस्तान की

पितृ भूमि में डट जाऊँगी
मातृभूमि पे मिट जाऊँगी
हिन्द पर मान करेगी दुनिया
पुण्य भूमि की शान की
मैं बेटी हिन्दुस्तान की

23

समय कितनी जल्दी गुजर जाता है, पता ही नहीं चलता। हम भी मासूम बच्चियों से नादान बन चुकी थी। हमारे ही घर में एक सुंदर युवक जावेद का भी आना-जाना रहता था। लेकिन वह लव जिहादी केवल वसंता की चाहत में ही आता था। लड़की की जात बहुत जल्दी जवान हो जाती है, इसलिए वसंता भी जवानी की दहलीज पर कब कदम रख गई, पता ही नहीं चला। हमने उर्दू और अरबी के साथ-साथ इस्लाम की तालीम काबिल उस्तादों से हासिल की थी, इसलिए मैं मोहल्ले की कुछ बच्चियों



मेरी सहेली वसंता

को किशोर अवस्था में ही कुरान शरीफ पढ़ाने लगी थी और उसकी एक्ज में मुझे कुछ दक्षिणा भी मिल जाती थी, जिसे मैं एक गुल्लक में इकट्ठा करती रहती थी, ताकि जरूरत पड़ने पर काम आए।

24

उस दिन मस्जिद से अजान की आवाज आ रही थी, मेरे अब्बू सईद ने सिर पर टोपी रख ली थी। अम्मी सईदा किचिन में कुछ काम कर रही थी। छोटी बहन जरीना कढ़ाई कर रही थी, तभी मैं बाहर से अंदर आई थी, “अब्बूजान..”

“बेटा मैं नमाज के लिए मस्जिद जा रहा हूँ, तुम भी नमाज अता फरमा लो, जो पाँच वक़्त अल्लाह की इबादत नहीं करता वह मुसलमान नहीं।” यह कहकर अब्बू निकल गए थे, मैं भी नमाज पढ़ने के लिए अंदर चली गई थी। कमरे में अंदर जानमास बिछाने लगी थी नमाज पढ़ने के लिए। बाहर बूँदा-बांदी शुरू हो चुकी थी।



अब्बूजान

25

और अब्बू गाड़ी लेकर बड़ी मस्जिद के लिए निकल पड़े थे...एक लड़का सड़क पर बेहताशा भाग रहा था, कुछ गुंडे हथियार के साथ उसको मारने के लिए पीछा कर रहे थे। अचानक ही बिजली कड़की या यूँ कहें कि इंदिरा पार्क के किसी झाड़ पर गिरी थी, और इसी दौरान वह लड़का मेरे अब्बू की सामने आ रही टैक्सी से टकरा गया था, क्योंकि टैक्सी के शायद ब्रेक भी फेल हो गए थे। गुंडे मरा समझकर वापस चले गए थे। टैक्सी से अब्बू निकले और लड़के को घायल देखकर घबरा गए थे। इस दुनिया में ईश्वर ही हमें जन्म देता है और प्राण लेने का हक भी उसी को है। यह लोगों को समझना चाहिए।

वह लड़का कौन था, क्यों उसके पीछे गुंडे भाग रहे थे, मुझे कैसे पता चला, आप यही सोच रहे होंगे, लेकिन बाद में पता चला था कि वह खोजी पत्रकार था। उन्होंने किसी घोटाले से संबंधित एक खबर प्रकाशित कर दी थी, जिसके कारण घोटाले के किसी आरोपी ने उनकी जान लेनी चाही थी और वह आरोपी शायद उनके एक्सीडेंट के बाद कुछ इस प्रकार प्रसन्न भी हुआ होगा :

बॉस पेपर देख रहा था, जिसमें घायल हुए लड़के की बाइलाइन व फोटो के साथ बॉस के विषय में भ्रष्टाचार से संबंधित कोई न्यूज छपी हुई थी, जिसे वह देख रहा था, तभी गुंडे अंदर प्रवेश कर गए थे :

“बॉस उस पत्रकार की जिंदगी की लीला खत्म...”

“तो इसका मतलब मेरी टेंशन खत्म हो गई, उस पत्रकार से...” कहते हुए शायद राक्षसों की हँसी हँसा होगा।

घायल वह लड़का अस्पताल के बेड पर लेटा हुआ था, उसका मेडिकल ट्रीटमेंट हो चुका था, नर्स गलूकोज की बोतल चेक कर रही थी, अब्बू सर्जिड बाजू में बैठा हुआ था टेंशन में, डॉक्टर चेक कर रहा था, तभी इंस्पेक्टर आया, “डॉक्टर साहब, अगर आप कहें तो मैं पेशेंट का बयान ले लूँ।”

“इंस्पेक्टर इसके सिर से बहुत खून बह गया है, इसलिए कुछ बताने की हालात में ये नहीं है।” डॉक्टर ने कहा था।

“कम से कम अगर नाम और पता बता दें, ताकि इसके घर वालों को सूचना दी जा सके।”

“ओके, लेकिन बहुत सावधानी के साथ... दिमाग पर ज़्यादा जोर न पड़े ध्यान रखें।”

“तो जनाब आपका नाम क्या है?” पुलिसकर्मी ने उस लड़के से पूछा था।

“नाम...नाम मेरा नाम....” वह लड़का बेहद घबरा गया था और विचलित भी, एकदम उसका चेहरा ऐसा हो गया था जैसे कि किसी दूसरी दुनिया से आया हुआ हो।

“हाँ तुम्हारा ही नाम पूछ रहे हैं!” पुलिस वाले ने दोबारा पूछा था।

“नाम...क्या है मेरा नाम....” वह लड़का खुद से बोला था और उन पुलिसवालों से भी पूछा था।

“क्यों क्या आपको अपना नाम पता नहीं, बिना नाम के इस दुनिया में आ गए थे क्या?”

“देखिए पेशेंट को फिलहाल परेशान न करें,” बीच में डॉक्टर ने दखल दिया था, “इनके दिमाग पर बहुत गहरी चोट लगी है, इसलिए आप बाद में बयान लें।”

“मगर इनका नाम...पता?” पुलिस ने जोर दिया था।

“नाम...” सामने ताजमहल के चित्र वाला कलेंडर था, वह लड़का उसे पढ़ने लगा था, “...ताज...” नाम पूरा नहीं पढ़ पाया था।

“ओह! तो आपका नाम ताज है...” पुलिस ने उसका नाम स्वविवेक से ही स्पष्ट उच्चारण कर दिया था, “ताज मोहम्मद...मिस्टर ताज आप बेफिक्र रहिए....सईद को कानून जरूर सजा देगा....लापरवाही से गाड़ी चलाकर तुम्हारी जान लेने की जुर्रत की है इन्होंने...क्या आप इस पर रोशनी डालेंगे!”

“बड़े मिया हैं यह साहब तो...” वह लड़का बोल उठा था, “सुबह से मेरी खिदमत कर रहे हैं, यह भला मेरी जान के लिए गाड़ी मुझ पर क्यों चढ़ाएँगे।”

“तो आप कहना चाहते हैं कि आप अंधे होकर चल रहे थे।”

“शायद, मेरी ही गलती थी...” घायल लड़के ने बयान दिया था।

“तो ठीक है, इन्हें छोड़ देते हैं, आप यहाँ साइन कर दीजिए।”

घायल लड़के ताज ने पेपर पर साइन कर दिया, तो इंसपेक्टर पेपर लेकर गया था। अब्बू सईद के चेहरे पर खुशी झलक उठी थी कि लड़के ने उसे अरेस्ट होने से बचाया है। मनुष्य वही होता है, जो दूसरों को हमेशा सुखी देखना चाहता हो। जो दूसरों का अहित करता है, वह तो राक्षस होता है।



मेरा बड़ा भाई युसूफ और मेरी अम्मी

28

मेरे घर की बात है, रात का समय था, उस दिन घर के अंदर मैं अली, युसूफ, अम्मी सईदा, बहन जरीना थे। युसूफ उस दिन रात में देर से आया था। अम्मी पूछ बैठी थी, “युसूफ आज कायकू इतनी देर कर दी।”

“अम्मी आज पुराने कस्टमर के यहाँ निकाह होने के कारण मटन का आर्डर ज़्यादा आया हुआ था, उसकी डिलीवरी करवाने में देर हो गई।”

उसी समय अब्बू सईद ने भी प्रवेश किया और वे जरीना से बोले, “जरीना बेटी एक गिलास पानी लाओ।”

जरीना नाराजगी के साथ बोल उठी थी, “अब्बूजान सबसे ज़्यादा प्यार तो फरू को करते हो और पानी मुझसे...।”

अम्मी बात काटते हुए बोल उठी थी, “फरू के अब्बू, तुम्हारा फोन कितनी बार ट्राई किया, लगा क्यों नहीं...इसलिए मैंने अली को भेज दिया कहाँ फँस गए थे, क्या तुम भूल गए कि जहाँगीर भाई की शादी की सालगिरह में जाना था।”

“अम्मी अब्बू जान ऐसाइच करते हैं” बीच में मैं बोल उठी थी, “कोई खास प्रोग्राम होता है तो..”

मुझको डाँटते हुए अब्बू बोल उठे थे, “चुप बहुत बोलती है,” फिर अम्मी से बोले थे, “बेगम पहले मेरी बात तो सुनी होती...”

“क्या बात सुनूँ?” अम्मी ने आगे कहा था, “जब से तुमसे शादी की है, तब से तुम्हारी बात ही तो सुनते आ रही हूँ।”

“बेगम आज अजीब बात हो गई, अल्लाह का शुक्रिया अदा करो कि मैं जेल जाने से बच गया।” कहते हुए अब्बू नर्वस हो गए थे।

“ऐसी क्या बात हो गई?”

“मैं नमाज अदा करने के बाद आ ही रहा था कि एक लड़के का कुछ गुंडे मारने के लिए पीछा का रहे थे...इत्तिफाक से वह लड़का मेरी गाड़ी के नीचे आ गया....बदनसीबी से गाड़ी के ब्रेक भी उसी समय फेल होने थे.....” उसके बाद अब्बू ने उसे अस्पताल में भर्ती कराने तक की कहानी सुना डाली थी।

29

अब अपनी सबसे खास और छैल-छबीली दोस्त के बारे में बात कर ली जाए...उस दिन एक लेबिस गाड़ी आकर रुकी थी, दरवाजा खुला माडर्न लड़की यानी मेरी सहेली सना हॉट ड्रेस में उतरी और घर के अंदर चली गई... घर के अंदर उसकी अम्मी असगरी बेगम टीवी पर कुछ प्रोग्राम देख रही थी, तभी मॉडर्न लड़की सना अंदर आते हुए फाइल टेबल पर फेंकते हुए और अम्मी को बाहों में भरकर किस करते हुए बोल उठी, “आई लव यू मॉम।”

“सना...आजकल बहुत बिजी रहने लगी है, हमारी तो छोड़ अपनी भी फिटनेस के लिए जिम नहीं जा रही आजकल...”

“अम्मी तुम तो जानती ही हो कि मेरा फैशन डिजाइनिंग का काम ही ऐसा है,” सना बोली थी, “एक बड़ी फिल्म में फैशन डिजाइनिंग का ऑफर मिला है...”

“बेटा अल्लाह तेरे करियर को और चार चाँद लगाए,” असगरी ने कहा था, “मेरी तो यही दुआ है कि सारी जिंदगी तू यूँ ही खुश रह...” यह कहते हुए उसका माथा चूमकर सना मुसकरा उठी थी।

30

दीवार पर बैनर लगा हुआ था, जिस पर उर्दू एवं अंग्रेजी में लिखा हुआ

था जमाते इस्लामी अफगान। विदेशी प्रतिनिधिमंडल के अधिकांश सदस्य कट्टर इस्लामी विचारधारा से प्रभावित लगते थे और जगह-जगह मुसलमानों की बैठकें आयोजित कर रहे थे। उनके साथ कुछ मुस्लिम औरतें भी आई हुई थी और वे औरतें पुरुषों की तरह ही मदरसों में पढ़ने वाली मुस्लिम लड़कियों को भी संबोधित कर रही थी। उस दिन मैं सना और वसंता बुरकानशीं होकर उनकी मीटिंग में पहुँची थीं, तो एक उपदेशक ने कुरान की कई पाक आयतें कहने के बाद अपनी बात रखी थी : “इस्लाम खतरे में है और हमें इसकी हिफाजत करनी होगी। इस्लाम की हिफाजत करने के लिए युवक और युवतियों को आगे आना होगा। क्योंकि इस सारे जहां में जब भी कोई क्रांति या बगावत हुई है तो युवक और युवतियों ने अंजाम दिया है, क्योंकि बच्चों के मुँह में तो निप्पल और बुजुर्गों के पैर कब्र में होते हैं। मैं नौजवानों का आह्वान करता हूँ कि काफ़िरों को अधिक से अधिक संख्या में मुसलमान बनाकर इंडिया में मुस्लिमों की आबादी बढ़ानी होगी। इसके लिए नौजवान सबसे अच्छी पहल कर सकते हैं। युवकों को चाहिए कि वे अधिक से अधिक इस कोशिश में रहें कि अपने साथ शादी के लिए काफ़िरों को ही प्रेरित करें, क्योंकि किसी एक काफ़िर को मुस्लिम बनाने से नौ बार हज करने जितना शबाब मिलता है।”

“हम जैसी लड़कियों को क्या करना चाहिए।” सना पृष्ठ बैठी थी।

“लड़कियों को हिन्दू लड़कों से शादी करनी चाहिए।” मौलवी ने जवाब दिया था।

“लेकिन इस तरह तो हम काफ़िर बन जाएँगी और हमारी औलादें भी डेढ़ ही होंगी, क्योंकि भारत पुरुष प्रधान देश है और यहाँ तो नारी को पुरुष का ही कुल एवं गौत्र अपना पड़ता है।”

“इस्लाम में कुल और गौत्र के लिए कोई स्थान नहीं। पुरुष बहुत कमजोर होता है, वह युवतियों के झाँसे में जल्द आ जाता है। इसलिए इस्लाम की रक्षा के लिए अब नए शस्त्र के रूप में मुस्लिम युवतियों को चाहिए कि वे धनवान और प्रतिष्ठित काफ़िर युवक को प्रेमजाल में फँसाकर उन पर शादी के लिए दबाव डालें और जब शादी की तिथि

निश्चित हो जाए तब यह शर्त रखें कि शादी मुस्लिम कायदे से होगी और निकाह पढ़ने से पहले उसे खतना करवाकर बाकायदा इस्लाम कबूलना होगा। ऐसे फोकट के दामाद बहुत मिल जाएंगे।”

“और यदि ऐसे फोकट के शौहर ने इस्लाम नहीं कबूला तो?”

“यदि ऐसा नहीं करता तो छेड़छानी एवं अस्मत से खेलने के जुर्म में जेल की हवा खिला दो, क्योंकि यहाँ का कानून औरतों के हक में है।

“क्या यह इतना आसान है?”

“हाँ... यह संभव होगा हिन्दु युवक मुसलमान बनेंगे और निकाह के बाद यदि मुस्लिम युवती उस काफ़िर को तलाक़ भी दे देगी तो वह दोबारा हिन्दु बनने वाला नहीं, क्योंकि जो हिन्दु मुसलमान बन जाता है उसे फिर हिन्दु धर्म में अछूत और शूद्र कहा जाता है और हिन्दु समाज उसका हुक्का पानी बंद कर देता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रपितामह के भाई इसके उदाहरण हैं अरे और तो और इंडिया में जिसे राष्ट्रपिता कहते हैं उसका एक पुत्र ‘हरिलाल’ भी मुसलमान बन गया था, फिर साधारण हिन्दु युवक मुसलमान क्यों नहीं बनेंगे?”

“इससे आपको क्या मिलेगा? और क्या धर्मनिरपेक्ष देश में ऐसा संभव है?”

“घोटों की लालची यहाँ की सरकार भी मुस्लिमों के पक्ष में है। हमारी कई नेताओं से बात हो चुकी है, उन्होंने आश्वासन दिया है कि ऐसा कानून बना दिया जाएगा कि मुस्लिमों को हर क्षेत्र में आरक्षण मिलेगा। गरीबी की रेखा से नीचे का सरकारी फायदा व राशन कार्ड हैदराबाद के हर मुसलमान को मिलेगा। इसलिए मुस्लिमों की संख्या बढ़ानी होगी। इंडिया में लोकतंत्र है और लोकतंत्र में मुंडियाँ गिनी जाती हैं। यदि हमने अपनी मुंडियाँ बढ़ा ली तो एक दिन हिन्दुस्तान का ताज फिर से मुस्लिमों के सिर पर ही होगा। और हमारी पताका इस तरह सारे हिन्दुस्तान पर लहराएगी, जैसे पहले कभी मुगलों ने इस्लाम का झंडा बुलंद किया था। वैसे पूरे आर्यवर्त को हमें इस्लामिक कंट्री में तब्दील कर देना है। बस हमारा आप सभी लोगों के लिए यही पैगाम है। अल्लाह हू अकबर...”

भीड़ भी अल्लाह हू अकबर बोलते हुए खड़ी हो गई थी।

जमात अटैंड करके शहर की गली से बुरकों में हम आ रही थी और खूब हास्य-विनोद कर रही थी, सना की जमात से मिली शिक्षा पर प्रतिक्रिया थी, “मैं तो चार शादियाँ करूँगी और मेरे चारों ही दूल्हे हिन्दू होंगे, जिन्हें मैं मुसलमान बना दूँगी।”

“चार!,” चौंकते हुए मैं बोल उठी थी, “तू गधी है क्या? क्या एक से काम नहीं चलेगा, जो तू इतना शौहर बनाएगी।”

“भई, आजकल बराबरी का जमाना है। जब कानूनन मुस्लिम युवक चार शादियाँ कर सकता है तो फिर लड़कियाँ चार शादियाँ क्यों नहीं कर सकती, इसलिए मैंने तो सोच लिया है कि पुरुषों की मानसिकता बदल कर रख दूँगी और दिखा दूँगी कि दुनिया में मुस्लिम औरतें भी मर्दों से कम नहीं।”

चलते-चलते हमारी हँसी मज़ाक चल ही रही थी कि जहाँ से हम गुज़र रही थीं, तो हमने देखा कि दो बुरके वालियों की लंबाई सामान्य से कुछ अधिक लग रही थी, जो तेजी से हमसे आगे निकल गई। लेकिन जब वे पास से गुजरी तो कुछ बड़बड़ा रही थी और उनकी आवाज एकदम पुरुषों जैसी थी।

“ये लड़कियाँ नहीं पुरुष हैं,” सना ने धमाका किया, “जो मीटिंग में भाग लेने आए थे।”

“कहीं ये आतंकी तो नहीं...।” मुझे भी शक हुआ।

“यदि ऐसा है तो पुलिस को सूचित करना चाहिए।”

“पुलिस उलटा हमें ही फँसा देगी, कानून में ऐसी सूचना देने वाला ही निशाने पर आ जाता है, फिर ये जासूस भी हो सकते हैं।”

उस दिन मेरे हाथ में अख़बार एवं पुस्तकें थी। सना, वसंता और मैं लाइब्रेरी के सामने बैठी हुई थी। सना हिन्दी दैनिक ‘स्वतंत्र वार्ता’ में एक समाचार, जिसका शीर्षक था, “हैदरबाद में है लादेन की चौथी बीबी” पढ़

रही थी और भी बहुत कुछ समाचार में लिखा गया था। इस समाचार को धर्मेन्द्र मोहन पंत¹ की बाई लाईन से प्रकाशित किया गया था।

“ओह! तो वे पत्रकार होंगे।” सना बोली थी।

“लेकिन यह अफवाह है, इसलाम को बदनाम करने की साजिश, सियासत डेली ने भी इसका खंडन किया है।” मैंने उसकी बात काट दी थी, “लादेन की बीबी हैदराबाद में होती तो भारत क्या चुप रहता?”

“लेकिन जमात के इरादे ठीक थे क्या?”

“परंतु जमात के लोग आतंकी भी नहीं थे, केवल इसलाम के प्रचारक थे और दीन की तरक्की करना हम सबका हक है।”

“हक की बात छोड़िए, कल मेरी विंटर कलेक्शन लॉन्च हो रही है, फैशन शो में तुम लोगा नहीं आई तो रंग नहीं जमेगा।”

“और हम आ गए तो कहीं रंग में भंग न हो जाए।”

“क्यों?”

“तू तो फिल्म इंडस्ट्रीज की फैशन डिजाइनर है, वहाँ लोग अजीबोगरीब तरह के पहनावे पहनते हैं, जो इसलाम में पसंद नहीं और तो और हमारे अब्बू जान भी ऐसे प्रोग्राम में नहीं जाने देंगे।”

सना से बोलते हुए वसंता मुझे चिढ़ाने लगी थी, “किसको कह रही है सना, यह तो माडर्न जमाने में भी, हमेशा मजहब की ही बातें करती रहती है।”

“तू सही कहती है,” सना ने हाँ में हाँ मिलाई थी, “यह तो हाइटेक सिटी की नंबर वन बहनजी है।”

मैं नाराज होते हुए उठ खड़ी हुई थी।

33

उस दिन रैम्प पर मॉडल्स कैटवॉक कर रही थीं फोटोग्राफरों के कैमरे क्लिक हो रहे थे; तालियों की गड़गड़ाहट से दर्शक दीर्घा गूँज रही थी। फैशन फोटोग्राफर सनी मॉडलों की पोज शूट करते हुए अपने साथी ‘चेतन’ से धीरे से कह उठा था, “An empty door will tempt the saint”

1. इसके बाद धर्मेन्द्र मोहन पंत को हैदराबाद छोड़ना पड़ा और वह पीटीआई में खेल संवाददाता बना।

चेतन ने भी चटाका लिया था, “सनी यार...मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल।”

“चेतन तू यारो के साथ रहेगा तो ऐसी ही ऐश करेगा!”

“हसीनाओं के फोटो शूट करने को ऐश कहते हो और उसे क्या कहोगे?”, फिर उसने फैशन डिजायनर सना की ओर संकेत किया, “क्या माल है?”

सनी भड़क उठा था, “अबे साले...माल किसको बोला रे...”

“गुस्सा क्यों करता है यार...सब चलता है।” चेतन ने हलके से लिया।

“माना सब चलता है, But Not Here!”

“Why!”

“She is My Dilruba, ये जो गुल खिल रहे हैं इन्हीं की तो करामात है।”

“फैशन डिजायनिंग में तो कमाल हैं।”

“तभी तो बड़े-बड़े डिजायनर इन्हें गुरु और ट्रेंड सैटर की तरह समझते हैं।”

“इस तरह के गुल खिलाएँगी तो गुरु तो मानना ही पड़ेगा।” कैटवॉक करतीं एक खूबसूरत मॉडल्स की ओर देखते हुए उसने कह दिया था।

“देखते जाओ आगे-आगे क्या गुल खिलाती हैं!”

तभी कैटवॉक करतीं एक खूबसूरत मॉडल्स के विशेष डिजाइन किए वस्त्र की चुन्नी खिसक गई और वह बैठती हुई झुकती सी अपने उरोजों को ढकने का प्रयास करने लगी, तभी कैमरों की क्लिक से अनेकों फोटो खिंच गये। चेतन ने कहा, “लो खिला दिया ना गुल As gods so are the worshippers. पॉपुलरटी पाने के लिए क्या-क्या करवा देते हैं।”

34

“गुल खिलाने के लिए क्या-क्या करवा देती हैं?” सनी बड़बड़ा रहा था। सनी और सना बगीचे में बैठे थे।

“गुल खिलाने के लिए मैंने क्या किया है?” हिन्दुओं वाली बिंदी मस्तक पर लगाने वाली सना ने नाराजगी भरे शब्दों में कहा था, “ये गुल तो खुद ही खिले हैं।” फूल होंठों पर रखते हुए मुस्करा दी थी।

“तो इन गुलों का रस हमें भी तो चूसने दो...” बाद में उनके हालात को देखकर हमने एक गीत लिखा, जो इस प्रकार है :

सना :

तूने छुआ तो कुछ हुआ सनम,
लगा करंट उठा धुँआ सनम
पलको में बैठो, दिल में बसो सनम,
तुझ पे मरे हम जनम जनम



सना

सनी :

दिल की गहराई में,
प्यार की तनहाई में,
डूबे ना पार लगे,
मर गए अंगड़ाई में
प्यार के दरिया में डूबी नौका सनम
तूने....

साँसों की शराब, जवानी का शबाब
खिली हुई कली, खूशबू हुई लाजवाब
जुल्फों को छुआ तो उठी घटाएँ
लबों को छुआ तो निकली नज़म..
तूने..

अंग अंग में महका गुलाब
रोम-रोम में खिली चमेली
पोर पोर से झरे मालती
परी कथाओं की शरमीली

सना :

तूने किया होंठों पे चुंबन सनम
दौड़ी बिजली हुआ कंपन सनम
तूने छुआ तो कुछ हुआ सनम,
लगा करंट उठा धुँआ सनम
पलको में बैठो, दिल में बसो सनम,
तुझ पे मरे हम जनम जनम

35

अगले दिन सना, वसंता और मैं पार्क में बैठी किसी बात पर हँस रही थीं तभी वसंता बोल उठी थी, “तुम सब लोगों को हँसी आ रही है, पर सच में जावेद बड़ा शरारती है।”

“क्यों तुम्हारे साथ कुछ किया क्या?” सना ने पूछ लिया था।

“अकेला पाते ही मुझे छेड़ता है और मेरे सारे बदन में बिजली का करंट सा दौड़ जाता है।”

“हाय कोई हमें भी छेड़ता,” मैं भी मजाक में बोल उठी थी, “काश कोई लड़का हमें भी प्यार करता..” गाना गुनगुनाने लगी थी...दोनों हँसते हुए...तभी सना वसंता से बोली, “ले वस्सु तेरे साथ-साथ फर्स भी शुरू सही जा रही है।”

“तुम मजाक छोड़ो,” वसंता गंभीर हो गई थी, “कुछ सोल्यूशन बताओ ना यार कि मैं क्या करूँ?”

“तो उससे शादी क्यों नहीं कर लेती?” सना बोल उठी थी, “उससे अच्छा दूल्हा कहाँ मिलेगा। सरकारी नौकरी वाला दूल्हा मिलता ही कहाँ है आजकल।”

“लेकिन मैं हिन्दू होकर जावेद से शादी कैसे कर सकती हूँ यार।”

“क्यों?” मैंने कहा था, “जोधाबाई अकबर से कर सकती है, तो तू क्यों नहीं, फिर किस जमाने की बात करती है तू। यह जात-पात धर्म सब धिसे-पिटे हैं। आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं।”

“नहीं...फिर भी धर्म के बिना जीवन तो अधूरा ही है...क्या वह हिन्दु बन सकता है?”

“इसका मतलब तू उससे प्रेम करती है, और वो भी तुझे चाहता है, लेकिन एक लोचा है यार?”

“क्या?”

“वो हिन्दू नहीं बनेगा। ईमान छोड़कर बेईमान कौन बनना चाहेगा। अब तूझे सोचना है कि क्या करना है? चल सना हमारा पीरियड है।”

36

एक दिन वसंता, मैं, जावेद, बड़ा भाई युसूफ, छोटा भाई अली और अम्मी सईदा खाना खा रहे थे।

“खाना तो बहुत लाजवाब बना है।” वसंता ने कहा था।

“अम्मी के हाथों का प्यार...” मैंने आगे कहा, “और एमडीएच मसालों का कमाल है।”

“और भी मजा आ जाता अगर बीफ होता तो...” जावेद बोल उठा था।

“फर्लू घर में गोमांस नहीं पकने देती,” अम्मी बोल उठी थी, “पागल लड़की एक पशु को भी माँ का दर्जा देती है।”

“लेकिन वसंता भी तो हिन्दू है, यह तो ऐसा कुछ नहीं सोचती।” अली ने कहा।

“क्यों नहीं सोचती गाय मेरे लिए भी माता है।” वसंता ने अपनी सफाई दी।

“तो फिर कल निज़ाम रेस्टोरेंट में तुमने बीफ क्यों खाया?” जावेद ने वसंता से कहा।

“तो इसका मतलब कल तुम लोगों ने मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया?” वसंता का चेहरा देखने लायक था।

“हजारों हिन्दू खाते हैं बीफ...” युसूफ ने अपनी बात रखी थी, “इसमें धर्म भ्रष्ट वाली कौन सी बात हो गई...।”

“लेकिन गाय माँ है हमारी...” वसंता ने जोर देकर कहा।

“फिर तो तुम्हारा धर्म भ्रष्ट हो ही गया,” अम्मी ने कहा, “इसलिए कलमा पढ़कर मुस्लिम बन जाओ...यही एक रास्ता है।”

“और जल्द से जल्द जावेद से निकाह करके घर बसा लो.. अगर चिराग लेकर भी खोजोगी तो नहीं मिलने वाला इससे अच्छा हमारा होने वाला जीजा...” हँस पड़ी थी कहकर मैं भी।

“हँस मत मैं मातृहंता तो हो ही गई, अब तो बुरका पहनना ही होगा, लेकिन मेरे घर वाले जावेद को दामाद के रूप में मंजूर नहीं करेंगे।”

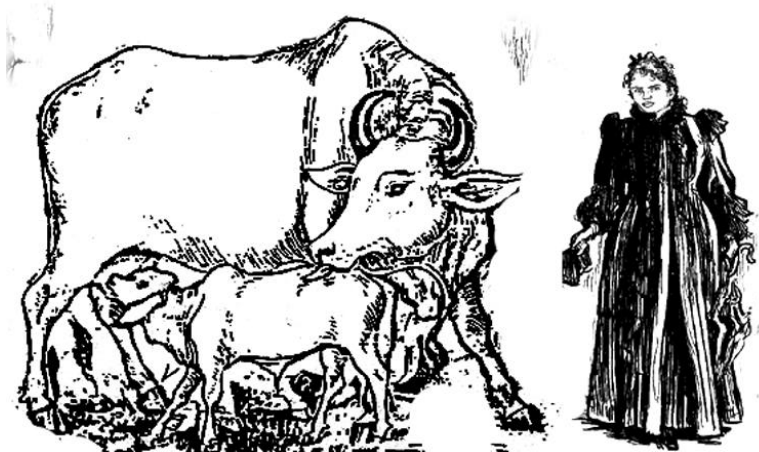
“खाली-पीली क्यों करती हो वस्सु,” अम्मी बोल उठी थी, “क्या खाली बीफ खाने से ही तुम गौमाता की हत्यारी हो गई? फिर शादी और मातृहंता का संबंध क्या है? शादी तुम करोगी या तुम्हारे घर वाले...”



जावेद एवं वसंता

37

“गौमाता की हत्यारी....” मैं मटन से निकाली हड्डी की ओर देखती हुई अपने बचपन की कभी न भूलने वाली एक स्मृति में खो गई थी। दिन में ही सपने दिखने लगे थे। उस हड्डी को देखकर ऐसा लगा रहा था कि श्मशान सामने हो, चिता जल रही हो, कब्रस्तान भी पास हो और कुत्ता हड्डी खोदकर निकालकर खा रहा हो। इसी के साथ बचपन की बात याद आ गई...बहुत बीमार हुई थी मैं...कुछ भी हजम नहीं होता था, तब डॉक्टर ने गाय का दूध पीने की सलाह दी और गाय का दूध ताजा मिले इसके लिए अब्बू ने एक गाय पाल ली थी। गाय के बछड़े से मुझे बहुत लगाव हो गया था और दूध देने वाली गाय से भी। मैं जब भी रोटी खाती, सबसे पहली रोटी गाय और उसके बछड़े को देती, तब जाकर तृप्त हो पाती थी।



इतना प्यारा बछड़ा था कि जब स्कूल जाती तो मेरे साथ चलने के लिए रस्सा तुड़ाने को तैयार हो जाता था। लेकिन समय गुजरा गाय ने दूध देना बंद कर दिया और अब वह हमारे परिवार के लिए बेकाम की हो गई थी, लेकिन मेरे लिए नहीं, क्योंकि मैंने उसे अपनी बड़ी अम्मी मान लिया था, इसलिए कि उसका दूध पीकर ही मैं बच सकी थी, फिर उसका प्रेम भी तो था, मैं बहुत ही साँवली भी थी...मुझे वह जीभ से चाटती थी ...तो खुद महसूस किया कि मेरे बदन का रंग आकर्षक हो गया था। एक माँ के सिवाय ऐसा और कोई नहीं कर सकता। ईद आ गई थी, मैं ईद बहुत ही उल्लास के साथ मनाती थी, इसलिए पहले ही दिन गाय और उसके बछड़े के गले में बांधने के लिए सुंदर मालाएँ लेकर आई थी। सुबह-सवेरे ही उनके गले में पहनाकर बलाएँ अपने सिर ले ली थी। लेकिन घंटेभर बाद ही मैं देख रही थी, युसूफ गाय के बच्चे को हलाल करने की पोजीशन में था। तभी मैंने युसुफ का खंजर वाला हाथ पकड़ लिया था, लेकिन यूसुफ ने मुझे झटका दिया तो मैं बछड़े पर गिर पड़ी थी और मेरी आँखों से आँसू निकलने लगे। मैं पूछ बैठी थी, “मेरी मिम्मी के साथ तुम सब क्या कर रहे हो?”

“कुरबानी दे रहे हैं बेटा ईद है ना आज।” अब्बू ने जवाब दिया था। उनका जवाब सुनते ही मैंने गाय की ओर दृष्टि दौड़ाई, जिसकी आँखों से आँसू झर रहे थे और आज वर्षों बाद वह घटना लिखते हुए मैंने यह

कविता लिखी है, उसी घटना की स्मृति में...जिसे आपसे शेयर करना चाहती हूँ :

आँखों में आँसू भरकर
गौ माँ रम्भा रही
कहाँ गए मेरे रक्षक
ब्रह्मा, विष्णु अंबा कहीं

अहसान फरामोश इन्सां
करने चले मुझे हलाल
मेरे दूध के कारण ही
जिंदा तू ओ तेरा लाल

वध हमारा नाम धर्म का
ईश्वर की अनुकंपा नहीं
आखों में आँसू भरकर
गौ माँ रम्भा रही
कहाँ गए मेरे रक्षक
ब्रह्मा, विष्णु अंबा कहीं

दूध तो अमरत हमारा
मूत्र में भी सोना चांदी
लक्ष्मी गोबर में हमारे
दही से मिटे सब व्याधि
पंचगव्य पान करके
वीर थे शिवा शंभा यहीं
आँखों में आँसू भरकर
गौ माँ रम्भा रही
कहाँ गए मेरे रक्षक
ब्रह्मा, विष्णु अंबा कहीं

बिन बैलों के अन्न भला
कैसे तुम उपजाओगे?
चलो ट्रैक्टर ले लिया
गोबर खाद कहाँ से लाओगे?
उर्वरकों के रह भरोसे
पोषणता काल लंबा नहीं
आँखों में आँसू भरकर
गौ माँ रम्भा रही
कहाँ गए मेरे रक्षक
ब्रह्मा, विष्णु अंबा कहीं

“अब्बू ईद के दिन क्या कुरबानी देना जरूरी है?” अब्बू से सवाल किया था।

“हाँ बेटा यह अल्लाह का हुक्म है, उन्हें कुरबानी बहुत पसंद है।”

“लेकिन मेरी प्यारी अम्मी की कुरबानी क्यों? फिर इसकी माँ इसे याद करके रोएगी ना...और मुझे भी रोना आएगा...”

“इसकी अम्मी की भी कुरबानी दे देंगे, परंतु तू क्यों रोएगी?”

“इसकी अम्मी ने मुझे दूध पिलाकर बड़ा किया है, इस नाते यह मेरा छोटा भाई हुआ और गाय मेरी बड़ी अम्मी...।”

“बेटा, अल्लाह को प्यारी चीज की ही कुरबानी दी जाती है।”

“तो अब्बू आप दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार किससे करते हैं?”

“बेटा यह भी कोई पूछने वाली बात है, मुझे सबसे प्यारी तू ही है?”

“तो फिर मेरी ही कुरबानी दे दो....अब्बू...” कहते हुए मैं जोर-जोर से सुबक रही थी, तभी यूसुफ ने कहा, “अम्मी फर्लू को अंदर ले जाओ।” अम्मी मुझे अंदर ले जाने लगी थी, लेकिन मैंने बछड़े के गले में हाथ डालकर उसे जोर से पकड़ लिया और रोने की बजाय जोर से चीख पड़ी थी, “मैं अपने भैया की हत्या नहीं होने दूंगी, आज इसको काट रहे हो कल इसकी माँ को काटोगे और फिर परसों मुझे...क्योंकि तुम्हारे अल्लाह को तो प्यारी चीजों की ही कुरबानी पसंद है ना...”



जसराज जैन

मेरी हठ के आगे अब्बू ने हथियार डाल दिए थे और उन्होंने युसूफ के हाथ से खंजर छीनते हुए कहा, “सईदा, छोड़ दो फरू को...” फिर अब्बू मुझसे बोले, “फरू बेटी तू जैसा चाहती है वैसा ही होगा।” और बछड़े के पैर खोल दिए थे। बछड़ा उठते ही भागकर माँ के पास चला गया और गाय बछड़े को चाटने लगी थी। बाद में वह गाय और बछड़ा हैदराबाद के

डीबीआर मिल्स के पास स्थित गौशाला में श्री जसराज जैन जी को गौशाला के लिए भेंट कर दी गई, साथ ही कुछ धन भी अब्बू ने उस गाय की परवरिश के लिए अदा किया। वहाँ मैं हर रविवार को अपनी सहेलियों के साथ उसे देखने



जाया करती थी और मुझे देखते ही बछड़ा रम्भाने लगता था और रस्सा तुड़ाने लगता था...शायद उस मूक पशु संग मेरा किसी पूर्व जन्म का ऋणानुबंध था।

38

अम्मी की आवाज से मेरा बचपन का सपना टूट गया था, वसंता, जावेद खाना खा रहे थे। लेकिन मैं खाना नहीं खा रही थी, अम्मी ने मुझे कहा, “फरू खाना क्यों नहीं खा रही, किन ख्यालों में खो गई?”

“नहीं अम्मी कुछ भी नहीं...” मुंडी हिलाते हुए खाना खाने लगी थी।

“जावेद मैं इसलाम कबूल करके तुमसे निकाह पढ़ने को तैयार हूँ,” वसंता ने कहा, “लेकिन मेरी एक शर्त है?”

“कैसी शर्त?” जावेद ने पूछा।

“तुम कभी गोमांस नहीं खाओगे।”

“क्यों?” बीच में यूसूफ ने दखल दिया था, “तुम नहीं खाती तो क्या ये भी खाना छोड़ देगा?”

“भाईजान तुम तो कँसाई हो,” मैंने यूसूफ से कहा, “गोमांस खाने की वकालत तो करोगे ही?” मेरी बात पर सभी का चेहरा देखने लायक था और वो थोड़ी देर बाद सहज हुए, मैं फिर बोली, “आदमी मर जाता है तो उसे देखने भर के बाद घर आकर पहले नहाते-धोते हैं...सब्जी में एक बाल भी गिर जाता है तो सब्जी फेंक देते हैं....और तुम सब असहाय जानवरों की हत्या करके उसकी लाश को पकाकर खाने की बात करते हो? शर्म नहीं आती प्रकृति से खिलवाड़ करते हुए?”

“फर्क तुम काफ़िरों की भाषा क्यों बोल रही हो?” अम्मी मुझ पर बिगड़ पड़ी थी, “अपने आपको भगवान महावीर समझने लगी क्या... अहिंसा परमो धर्म...हमें तो तेरे पर कभी-कभी...”

“मैं काफ़िरों की भाषा नहीं बोल रही, प्रकृति के साथ राक्षसों जैसा बिहेव तो तुम लोग करते हो...फिर भी तुम लोग इस मामले में मुझे अपना विरोधी समझते हो, तो मुझे ही पकाकर खा लो...एक दुश्मन कम हो जाएगा...मगर एक पशु की जान तो बचेगी।” खाना छोड़कर उठकर चली गई थी मैं।

39

वसंता मांसाहारी थी और उसे बीफ खिलाकर जब बताया गया कि उसने गोमांस खा लिया है अब वह हिन्दु नहीं रही तो उसके बाद उसने अपने आपको मुसलमान ही मान लिया और स्वेच्छा से इस्लाम धारण कर लिया एवं जावेद से शादी कर ली। लेकिन इसके बाद हिन्दुओं में जो तूफान मचा, अल्लाह ही बचाए उससे तो। एक दिन तो कई हिन्दु हमारे घर पर चढ़ आए थे मारपीट के लिए, उनका आरोप था कि हमने वसंता को किसी मुस्लिम लड़के साथ भगा दिया है। लेकिन हमारे घर में तीन औरतें ही थी उस दिन, यदि कोई पुरुष होता तो पता नहीं क्या होता? और हिन्दुओं ने हथियार डाल दिए, औरतों को थोड़ी बहुत गाली-धुपड़ के सिवा कुछ नहीं किया।

एक दिन मैं अपनी चाची के साथ बिजली का बिल जमा कराने जा रही थी। इंदिरा पार्क के पास एक व्यक्ति घड़ी की दुकान लगाया करता था। उसका नाम था लड्डू भाई (असली नाम जहाँगीर) और वह कट्टर मुसलमान था। उसी के खोखे के पास बैठा था एक युवक। मैंने उसको ध्यान से देखा...और न जाने क्यों मुड़-मुड़कर देखती रही। पैर भी ठहर से गए थे मेरे...

“बरखुदार कोई इश्क-विश्क का चक्कर है क्या?” लड्डू भाई ने इतने जोर से कहा, ताकि मुझे सुनाई पड़ सके, मैं तो यह सुनकर शर्म के मारे पीली पड़ गई थी।

“क्या मतलब?” वह युवक बोला था।

“देखो ताज! वह बुरके वाली आपको बार-बार पीछे मुड़-मुड़कर देख रही है।”

“अरे नहीं, यह वही है, जिसके अब्बू ने मेरी जान बचाई थी।”

“और अब लगता है यह तुम्हारी जान लेकर रहेगी बेटा...”

उसे देखते ही मुझे वे क्षण याद हो आए जब मैंने घायल ताज की दवाई आदि पिलाने में कई बार मदद की थी, उसे सहारा देकर बिस्तर पर लिटाया था और तो और घायल ताज को नहलाने एवं कपड़े चेंज करने में मदद तक करनी पड़ी थी और इसी दौरान हँसी मजाक भी करने का मौका तो मिला ही था, परंतु तब तो मैं बच्ची थी, लेकिन पहली बार मुझे अब उससे कुछ लगाव सा हो गया था। न जाने क्यों उसे बार-बार देखने को दिल कर रहा था, जैसा कि उसने मेरा कुछ छीन लिया हो। वैसे उस दिन शायद वह भी मेरे ही सपनों में खो गया था, क्योंकि लड्डू भाई ने उसे जोर से पुकारा था, “ताज....ताज...” उसका ड्रीम टूटा था और सर हिलाते हुए ताज बोल पड़ा था, “क्या लड्डू भाई?”

“बिन शादी के हनीमून मनाने का ख्वाब देख रहे हो क्या?”

वह युवक यह सुनकर झेंप गया था, उठकर हमसे विपरीत दिशा में चला गया, ठहरे हुए मेरे कदमों में बिजली कौंधी और मैं ऐसे आगे बढ़ चली जैसे बिजली गिरने के बाद वापस आसमान में चली जाती है।

अगले दिन ताज की बहुत याद आ रही थी, तो सोचा उससे मिल ही लूँ, लेकिन अब तो वह ठीक हो गया था, परन्तु मिलने के लिए कोई न कोई बहाना तो चाहिए था, इसलिए मैंने कुछ सीता फल लिए और जा पहुँची खैर-खबर लेने और उसे अपनेपन से डाँटते हुए बोली, “यह लो फल, तबियत को तबेला बनाकर रखा हुआ है, अपनी सेहत का ध्यान रखा करो...” तभी पड़ोस के एक किशोर खलील का आगमन हुआ, “अस्सलाम वालेकुम।”

“वालेकुम अस्सलाम आओ खलील भाई।” ताज ने कहा।

“भाईजान, मेरी बड़ी बहन का निकाह है।” उसने बताया।

“यह तो अच्छी बात है, अपने अब्बू के इंतकाल के बाद तुमने इतने कम समय में अपने घर की सारी जिम्मेदारी संभाल ली है।”

“बात तो अच्छी है, लेकिन आपसे एक मदद चाहता हूँ।” खलील की इस बात पर मैंने उसे आश्चर्यभरी निगाह से देखा कि यह कहना क्या चाहता है?

“बोलो खलील भाई, क्या मदद चाहते हो।” ताज ने कहा।

“मुझे दस हजार रुपए की जरूरत है, बहन के लिए अलमारी और बिस्तर खरीदना है। मैं आपके पैसे धीरे-धीरे चुका दूँगा।”

“इसमें चुकाने की क्या बात है,” तभी अम्मी भी कमरे में प्रवेश कर गई थी और उन्होंने ताज की बात सुन ली। लेकिन ताज ने अपनी बात जारी रखी, “...मेरे साथ चलना मैं दिलवा दूँगा जो भी शादी का सामान चाहिए, मेरी तरफ से शादी में कन्यादान समझ लेना।”

“शुक्रिया ताज भाई, आपका हमेशा शुक्रगुजार रहूँगा।” और उठकर चला गया।

“ताज क्या तुमने खैरात बाँटने का ठेका ले रखा है।” अम्मी ने ताज को नसीहत दे डाली थी।

“क्या हुआ अम्मी?”

“खलील की फोकट में मदद क्यों?”

“गरीब है बेचारा...”

“चलो जो कुछ भी है, मुझे अच्छा लगा, तुम खुदा के नेक बंदे हो ...लाखों में एक...फरूँ घर चलो...” अम्मी का निर्देश पाते ही मैंने एक बार गौर से ताज के चेहरे को देखा और अम्मी के साथ चल दी, लेकिन न जाने क्यों मैं पीछे मुड़ी और मुस्करा दी थी।

42

उस दिन सुबह के आठ बजे थे। ताज पढ़ रहा था, मैं अचानक ही आ पहुँची और पीछे से उसकी किताब छीन ली, “जनाब सारे दिन किताबें ही चाटते रहते हैं, अच्छी खासी नौकरी लग गई है, फिर ये किताबें किसके लिए पढ़ते हो?”

“ज्ञान बढ़ाने के लिए...”

“ज्ञान बढ़ाकर जमात का सरदार बनना है क्या?”

“नहीं ज्ञान बढ़ाकर तेरी आँखें खोलनी हैं?”

“तो क्या मेरी आँखें बंद नजर आती हैं?” और मेरी एक आँख बंद हो गई थी, समझ गए न आप, लेकिन वह शायद कुछ और ही समझ बैठा था, “अरे यह शरारत क्यों?”



“देखो मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ?”

“तो कह दो...”

“मुझे ना....कोई पगला बहुत अच्छा लगता है...”

“तुम भी तो फकीरन सी लगती हो....., इसलिए तुम्हें तो कोई पगला भी पसंद नहीं करेगा।”

“....यह फकीरन तो इसलिए हुई ना कि एक फकीर को चाहने लगी है।”

“ओह! तो तुम किसी को चाहने भी लगी हो? कौन है वो

बदनसीब, किसकी किस्मत फूट गई? जरा हम भी तो जानें।”

“तुम्हारी ही निकली है लाटरी...” मैं बोली थी, “आज से मैंने अपना उपनाम ताज रख लिया है, अब धरती फट पड़े या आसमान टूट जाए, मैं अपना उपनाम छोड़ने वाली नहीं।”

“क्या?” गंभीर हो गया था ताज, “लेकिन फर्क मैंने तुम्हें कभी इस दृष्टि से नहीं देखा...”

“तो अब देख लो।”

“नहीं...लेकिन यह संभव नहीं...”

“क्यों संभव नहीं? क्या कोई सौतन पहले से ही है?”

ताज खामोश रहा। मैंने अपनी बात आगे बढ़ाई, “ओह! कोई बात नहीं...कोई सौतन पहले से ही है तो मुझे वह भी मंजूर होगी, क्योंकि इसलाम में तो मर्द चार-चार निकाह करते हैं।”

“...फिर तो मुझे तीन-तीन सौतन झेलनी ही पड़ेंगी।” उसने हास्य-विनोद किया था।

“धोखेबाज छलिया...” कहते हुए मुझे गुस्सा आ गया और गुस्से में आकर उसकी पुस्तक उसके ही सिर में पूरे जोर से दे मारी, ताज को चक्कर आ गया था। मैं बुरी तरह घबरा उठी और डरकर दुम दबाकर वहाँ से भाग निकली। लेकिन जैसा कि मुझे बाद में पता चला मेरे ऐसा करने से ताज की याददाश्त पूरी तरह लौट आई थी और वह शायद यही सोचने लगा था, ‘हे भगवान मैं तो हिन्दू हूँ, लेकिन ये सब लोग तो मुझे मुस्लिम समझते हैं...मैं अब क्या करूँ? इन लोगों को मेरी असलियत पता चली तो यहाँ इन भोले-भाले लोगों का दिल टूट जाएगा....इसलिए ये लोग ताज समझते हैं तो ताज ही रहना चाहिए...’ उसके ऐसा सोचने का एक कारण मैं भी थी, क्योंकि मैंने अपने नाम के आगे उसी दिन से ताज लगाना शुरू किया था। उसे अपनी पहचान मिल गई, लेकिन मैं उसे पहचान न सकी।

43

पुराने मित्रों की याद आने पर ताज अपने मित्र चेतन के साथ बिग बाजार में खरीदारी करने के लिए गया था। ताज शूज देख रहा था।

“यह चलेगा।” कहते हुए उसने शूज सलेक्ट कर लिया था, फिर चेतन की ओर मुखातिब हुआ, “यार तू भी भाभी के लिए कुछ ले ले।”

“भाभी के लिए, अरे अभी तो तुमने शादी की ही नहीं, फिर मैं भाभी के लिए क्या गिफ्ट खरीदूँ।”

“अरे यार मैं अपनी भाभी के लिए कह रहा हूँ यानी कि तुम्हारी छम्मक-छल्लो के लिए।”

“ओह! तो ऐसा कह ना, लेकिन क्या लूँ यार.... होंठों पर उंगलियाँ रखते हुए चेतन ने कहा, ठीक है एक जोड़ी लेडीज सैंडल ले लेता हूँ।”

“लेडीज सैंडल?”

“एक जोड़ी लेडीज सैंडल दिखाओ।”

“किस नंबर के?”

“नंबर पता नहीं साहब, लेकिन पीठ पर बीबी के सैंडल की छाप पड़ी हुई है, इसी नाप की दे दे मेरे भाई।”

चेतन ने कमर से शर्ट उठाकर पीठ सेल्समैन की ओर कर दी थी, सभी का रिएक्शन देखने लायक था और वह सिसकी सी भरने लगा था।

44

ताज चाय पीते हुए पेपर देखते हुए अपने साथी चेतन से बोल रहा था, ‘सुना है फलकनुमा में दंगा हो गया है।’

“हाँ, सना के कारण।”

“सना के कारण? मतलब?”

“उसके घर वालों को फोकट के दामाद चाहिए ना और उसे फोकट के यार!”

“मतलब?”

“पराए धर्म वाले पर डोरे डाले थे, उससे निकाह करना चाहती थी।”

“लेकिन इसका दंगे से क्या लेना-देना?”

“उसे भूत सवार हो गया है काफ़िरों को मुसलमान बनाकर शबाब बटोरने का...”

“और अपने जिस्म को भी परोसने का...”

“हाँ और यदि कोई उसकी बात अनदेखी करता है तो उसे झूठे रेप केस में अंदर करवा देती है, अब तक 6 पोर्ट्रेट्स उसके चक्कर में जेल की हवा खा चुके हैं।”

“लेकिन यार इससे दंगे का क्या लेना-देना?”

“इतिहास अपने आपको दोहराता है, मैंने यह कहावत सिद्ध होते देख ली है। सुनो...उसके एक गुरु घंटाल मौला ने एक पुरानी पुस्तक पुनः छापी है काले-कलूटे देवता और कल छह दिसंबर है यानी बाबरी ढाँचा तोड़ने के लिए हिन्दुओं का शौर्य दिवस....और मुस्लिमों का काला दिवस ...हुसैन की विवादित भारत माता की पेंटिंग छपवाकर किसी ने मंदिर की दीवार पर लगा दी, उसी के विरोध में...किसी ने वह रंगीला रसूल किताब पुनः छाप दी, जिसके कारण कभी लाहौर में महाशय राजपाल जी का बलिदान हुआ था।”

“ओह! यह रंगीला रसूल किताब छापकर किसने शहर की शांति में आग लगाई...आपको किसी पर शक है...”

“हाँ...मुझे तो आप पर ही शक है, क्योंकि आपके कमरे में भी एक प्रति पड़ी हुई देखी है।”

“अबे मरवाएगा यार...मैं ठहरा गांधीवादी आदमी।”

“यदि सूर्य कहे कि मैं चंद्रमा से अधिक शीतलता बरसाता हूँ, तो भला कोई यकीन करेगा।”

“यार ये हुसैन कुछ ज़्यादा ही भारत माता के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है...देशद्रोही कहीं का...” ताज ने कहा।

“शहर में बहुत गर्म हवा है कहो तो मार दें हथोड़ा...न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी...”

“लेकिन इस बाँसुरी में सुर भी तो हिन्दुओं ने ही डाले हुए हैं ना।”

“वह कैसे?”

“बदरीविशाल पित्ती ने अपनी कल्पना पत्रिका को फैमस कराने के लिए सबसे पहले इस दो कोड़ी के चित्रकार से उल्टे-सीधे चित्र बनवाकर छापने शुरू किए, ताकि पत्रिका का सर्कुलेशन बढ़ सके...इतना ही नहीं पित्ती जी ने तो उससे 250 चित्र रामायण की कथा पर भी बनवाए थे,

जो लोहिया समता न्यास में अभी भी रखे हैं, लेकिन उन्हें आज तक कभी सार्वजनिक नहीं किया गया, इस प्रकार प्रोत्साहन मिलने के कारण आज वह इतने उल्टे-सीधे चित्र बनाने लगा है कि अपनी ही माँ भारती को भी नहीं बख्शा उसने...”

“हाँ यार उसने भारत माँ का अपमान तो किया ही है।”

“और भारत माँ का अपमान हम लोग सहन कर गए...ऐसे ही जैसे मुगलों और अंग्रेजों को सहन करते गए और गुलाम बन बैठे...लगता है फिर से कहीं वामपंथियों के...”

“मेरे पास एक तरीका है।”

“बोलो।”

“मैंने एक बहुत सुंदर कविताओं की पुस्तक लिखी है,” चेतन ने आगे कहा, “हम हुसैन से मिलते हैं और उससे पुस्तक का कवर डिजाइन करवाते हैं, ऐसे उससे निजी मित्रता हो जाएगी और उसे समझाने का प्रयास करेंगे कि राष्ट्रद्रोह के पथ पर न चलें।”

“और नहीं माना तो उसे सबक सिखाया जा सकता है।” ताज की आँखें बदल गई थी।

“वैरी गुड आइडिया।” दोनों मुस्करा उठे थे।

45

कई दिन बाद हुसैन पेंटिंग बना रहा था और चेतन एवं नील ने प्रवेश करते ही तारीफ़ की थी, “वाह साहब क्या पेंटिंग बनाई है!”

“शुक्रिया,” हुसैन ने चेतन से कहा, “मैंने पढ़ी हैं बहुत अच्छी हैं आपकी कविताएँ, आप लोग पत्रकार हैं तो आपके लिए मैं एक प्रसिद्ध कवर देता हूँ और उसके लिए कुछ धन भी नहीं लूँगा।”

“जी दिखाइए कवर।”

“यह लीजिए...” विवादित पेंटिंग की रंगीन फोटो प्रति दे दी थी उसने, “मैं लिख भी देता हूँ कि आपको पुस्तक का कवर बनाने के लिए दी जा रही है और बिना किसी पारिश्रमिक के...आप मुझे पहले मिले होते तो मैं आप लोगों का नाम दुनिया में चमका देता।”

“धन्यवाद साहब! आपसे एक दरखास्त है।”

“कहें बखुदार।”

“हमारी यह गीतों की पहली किताब है,” ताज ने कहा था, “इसके दो गीत एक फिल्म में भी लिए जा रहे हैं, इसलिए हम एक प्रेस कांफ्रेंस कर रहे हैं आप भी उसमें आएँ, ताकि हमारा आयोजन सफल हो और हम पत्रकार बंधुओं के समक्ष अपनी बात रख सकें कि हम साहित्य जगत को क्या देने जा रहे हैं?”

“बहुत खूब मैं जरूर हाजिर रहूँगा।” वे दोनों चले गए थे, लेकिन कुछ विशेष योजना बनानी थी अब उनको।

46

चेतन और ताज मूलतः पत्रकार थे, इसलिए पत्रकारों की मीटिंग बुलाना उनके लिए कोई दिक्कत वाली बात नहीं थी। प्रेस क्लब में मंच पर चेतन, ताज एवं हुसैन बैठे थे और सामने पत्रकार थे, ताज ने अपनी बात रखी थी, “आप सबका तहेदिल से स्वागत, यह प्रेस कांफ्रेंस हमारी बेहतरीन किताब की लॉन्चिंग से पहले उसके कवर की लॉन्चिंग को लेकर है, इसके लिए श्री हुसैन साहब ने एक कवर हमें बनाकर दिया है, नया नौ दिन और पुराना सौ दिन वाला कवर।”

“मतलब?” प्रभा साक्षी के पत्रकार ने पूछा था।

“इन्होंने एक पुरानी पेंटिंग हमें दी है, जिसे पिछले दिनों कुछ मंदिरों की दीवारों पर भी लगा दिया गया था बाबरी मस्जिद तोड़ने के विरोध स्वरूप...”

“क्या वही भारत माता के अपमान वाली पेंटिंग?” इनाडु के पत्रकार डी. श्रीनिवास राव ने पूछ लिया था।

“हाँ, वही पेंटिंग...और ये हुसैन साहब चाहते हैं कि हम अपनी किताब का कवर इसे बनाएँ और इन्हीं की तरह राष्ट्रद्रोह की राह पर चलकर वामपंथी लेखकों की अग्र पंक्ति की शोभा बढ़ाएँ।”

“यह आप क्या बक रहे हैं मेरी पेंटिंग में राष्ट्रद्रोह की बू कहाँ है।”

“यह क्या है?” ताज ने वह पेंटिंग दिखाते हुए हुसैन की दाढ़ी पकड़ ली

थी, इस हाथापाई में पानी गिरने से पेंटिंग गीली हो गई...ताज ने उसकी दाढ़ी पेंटिंग पर रगड़ दी थी। आपको बता दूँ कि प्रख्यात पत्रिका इंडिया टुडे ने भी 2006 में आर्ट आफ मिशन कश्मीर के तहत हुसैन की नंगी औरत वाली पेंटिंग का प्रकाशन किया था।

47

रात का समय था। ताज और अब्बू घर में बैठे हुए थे। अब्बू ने किसी बात पर हँसते हुए कहा, “अच्छा मजा आया...लेकिन एक बात कहूँ बरखुर्दार तुम शादी क्यों नहीं कर लेते।”

“मुझे कौन अपनी लड़की देगा।” ताज ने उनकी बात की अनदेखी की थी।

“बस्ती में तो कई व्यक्ति चाहते हैं कि तुम इसी बस्ती के दामाद बन जाओ।”

“अच्छा, लेकिन यह संभव नहीं।”

“क्यों...संभव क्यों नहीं?”

“बस यूँ ही मैं नहीं बता सकता।”

“ठीक है मत बताओ,” अब्बू ने कहा, “लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे दामाद बनो। मैं फरू का निकाह तुमसे करना चाहता हूँ।”

“यह संभव नहीं।” ताज ने कहा।

“मगर क्यों?”

“आपकी बेटी तो मुझसे दस-बारह साल छोटी है और शायद नाबालिग भी है।”

“हाँ मैं जानता हूँ मेरी बेटी बहुत छोटी है तुमसे, लेकिन नाबालिग नहीं, क्योंकि इसलाम में 14 साल की उम्र में भी निकाह कर सकते हैं, ऐसा हाईकोर्ट का एक फैसला भी है। फिर फरू तो अभी 17 साल की होने वाली है।”

“यह बेमेल शादी मुझे मंजूर नहीं। किसी मासूम के जीवन से खेलने का मुझे अधिकार नहीं।”

“यह बेमेल नहीं, अल्लाह की मर्जी है।” अब्बू ने कहा, “उसकी जिंदगी तो सँवर जाएगी। बहुत दीन-ईमान वाली है। मुहल्लेभर की बच्चियों को कुरान शरीफ पढ़ाकर दीन की तरक्की में योगदान दे रही है।”

“लेकिन...मैंने उसे इस नजर से कभी नहीं देखा।” ताज ने अपनी बात पर जोर दिया।

“तुम्हारी यही भलमनसियत तो हमें बहुत पंसद है बखुरदार।”

“मगर...”

“अब अगर-मगर कुछ नहीं...हम अपनी बेटी का हाथ..” कहते हुए अब्बू तेजी से खिसक लिए। ताज आश्चर्यभरी नजरों से देखता रहा।

48

दोपहर के समय घर में मैं, अम्मी, अब्बू, जरीना, युसूफ, अली मौजूद थे। सब साथ बैठकर खाना खा रहे थे।

“आपने बहुत अच्छा किया...” अम्मी ने अब्बू से कहा, “मैं भी फरू का हाथ ताज के हाथ में ही देना चाहती थी, आपने तो मेरे दिल की बात कह दी।”

“फरू बेटा,” अब्बू ने मुझसे पूछ लिया, “तुम्हें तो कोई ऐतराज नहीं।”

मैं तो शरमा गई थी, कुछ नहीं बोली और नजरें जमीन की ओर गड़ गई थी, सच में तो मेरे ही दिल की मुराद पूरी होने वाली थी। शरम और हया नारी का असली गहना होता है और उसके आचार-विचार उसकी सुंदरता के मापदंड। मैं दूसरे कमरे में चली गई और जरीना मेरे पीछे-पीछे चली थी, “क्या हुआ फरू भाजी मन में



लड्डू फूटे या फिर कोई और बात है, मुझे बता दे मैं किसी को कहने वाली नहीं।” उसने मुझसे हास्य-विनोद किया।

49

झट मँगनी-फट विवाह वाली कहावत सिद्ध होने वाली थी मेरे कोमल से जीवन में...उस दिन जरीना मुझसे मजाक कर रही थी, “मन में शादी के लड्डू फूट रहे हैं, मैं एक बातीच बोलती फराभाजी शादी के लड्डू खाओ तो पछताओ और न खाओ तो पछताओ...”

“कान पकड़ते हुए मैं बोली, “बोहोत बोलतीच तू...तूने तो नहीं खाए अभी तक...फिर कैसे मालूम?”

“अच्छा जीजू को फोन लगाऊँ...” तभी वसंता आ गई थी और बोली, “फोन लगाने की जुरत नहीं, जीजू ने अपनी बेगम साहिबा को याद फरमाया है।”

“वस्सु तू भी शादी के बाद ज़्यादा ही चहकने लगी?” मैं उस पर पिल पड़ी थी, “बकवास बंद कर और बता कैसे आई,” फिर मैंने तिरछी नज़र से जरीना को बस इतना ही कहा, “जर्सू...” और जरीना बाहर चली गई थी।

“तो सुन,” वसंता बोली, “होने वाले जीजू तेरे से अकेले में मिलना चाहते हैं, उन्हें अब निकाह होने तक भी चैन नहीं है।”

“क्यों?”

“पता नहीं, लेकिन कहते हैं मिलना बहुत जरूरी है, नहीं तो निकाह से पहले ही वह यह शहर छोड़कर भाग जाएँगे। अब तू ही सोच मेरा जो काम था मैंने बता दिया, अब तेरा काम तू जाने...”

“ठीक है, लेकिन कहाँ मिलेंगे।” सोचते हुए मैंने आगे कहा, “घर में मिलना तो ठीक नहीं है।”

“चिंता मत कर, इसका जुगाड़ मैंने कर दिया है, भई हिन्दुस्तान चलता ही जुगाड़बाजी से है, ये ले पैसे,” वसंता ने कुछ रुपए देते हुए मुझसे आगे कहा, “...उन्होंने जेवर और कपड़ों के लिए कुछ रुपए दिए हैं और कहा है कि जेवर तुम अपनी पसंद के खरीद लो और उन्होंने आदेश

फरमा दिया है कि साथ में लेकर ही आना...” वह मेरा हाथ घसीटते हुए खींचकर ले जाने लगी, “चल अभीच चल, जीजू इंतजार कर रहे हैं।”

“ठीक है बाबा चलती हूँ।” और मैं साथ चल पड़ी।

50

हम ऑटो में बैठक चारमीनार के पास पहुँच गए थे। चारमीनार से सटे भाग्यलक्ष्मी के मंदिर के पास ताज हाथ में जेवर और साड़ी लिए इंतजार कर रहा था, तभी ऑटो से वसंता और मैं आकर उतरे, वसंता उनके पास में जाकर बोली, “लो ले आई आपकी बेगम, दिल को सुकून देने वाली, अच्छा मैं चली अपने रस्ते, तुम्हें जो बातें करनी है करो...लेकिन सुहागरात के लिए भी कुछ बातें छोड़ देना...”

“वस्तु मुझे छोड़कर कहाँ जा रही हो...” मैंने वसंता को वहीं रोकना चाहा।

“मिया बीबी के बीच में मैं क्यों कबाब में हड्डी बनूँ...” उसने मुझे



मेरा एक चित्र

चिढ़ाया था, “चली रे मैं चली ...” कहते हुए वह चली गई और तभी ताज ने कहा, “क्या सोच रही हो चलो कहीं बैठकर बातें करते हैं।” ताज की परछाई बनकर मैं उनके संग चल पड़ी थी। हम वहाँ से एक छोटे से पार्क में रोमांटिक जगह पर पहुँचे। मैं उनके पास होते हुए भी दूसरी तरफ देख रही थी, तभी ताज ने हाथ छोड़ते हुए मेरे गालों को अपनी ओर करते हुए कहा, “इस दिन के चाँद को हमें भी तो देखने दो...”

“चाँद तो रात में होते

जी...” मैं बोली, “मक्खनबाजी छोड़ो...अच्छा ये बताओ अचानक हमें कायकू बुलाया। घर वालों को पता चलेगा तो वे क्या सोचेंगे?”

“घर वाले बीच में कहाँ आ गए...मेरी तरफ देखो...”

“क्या देखूँ जी?”

“मेरे दो रूप हैं उन्हें देखो...”

“दो रूप....अजीब इंसान हो जी?” मैं तो चौंक गई थी।

“यही बताने के लिए तो तुम्हें बुलाया है कि तुम्हें अपने दोनों रूप दिखा दूँ...”

“क्या हैं वे दो रूप जी...”

“तुम लोग मुझे ताज समझते हो, लेकिन मैं ताज नहीं, मैं वह इंसान हूँ, जिसे तुम्हारी भाषा में काफ़िर कहते हैं।”

“काफ़िर यानी कि हिन्दु हो तुम!”

“नहीं.....हिन्दु नहीं.... आर्य हूँ।”

“अच्छा तो आप आर्य समाजी हैं, मैंने सुना है कि आर्य समाजी तो आधे मुसलमान पहले से ही होते हैं, वो भगवान को मानते नहीं, मूर्तिपूजा करते नहीं...सही है ना...।”

“गलत सुना है? आर्य समाज की दृष्टि में तो ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।”

“ओह! तुम अपने को स्वामी दयानंद सरस्वती मत समझो, मैं तुम जैसे काफ़िर को मुसलमान बनने का अवसर देकर नौ बार हज करने जितना शबाब लूटना चाहती हूँ और तुम्हारे लिए जन्नत के दरवाजे खोल रही हूँ...।”

“लेकिन मैं इसलाम कबूल करके जन्नत में चला गया तो वहाँ 72 हूरें होंगी, फिर तुम्हारी औकात क्या होगी...एक रखैल की...मैं तुम्हें रखैल नहीं राजरानी बनाना चाहता हूँ, जो केवल पवित्र वेदों की छत्रछाया में ही संभव है।”

“...ये कुफ्रिया बातें मुझे पसंद नहीं। मेरे घर वालों को पता चल गया कि तुम हिन्दू हो तो तुम्हारा क्या हथ्र होगा तुम्हें भी नहीं मालूम। मैं चाहती हूँ कि तुम मुसलमान बन जाओ और पाँचों समय की नमाज पढ़ो ... ईमान लाना तो बहुत शबाब का काम है और फिर आज के युग में ईमान लाता ही कौन है?”

“नहीं.... मैं मुसलमान नहीं बन सकता।”

“नहीं बन सकते तो तुम जीवित भी नहीं रह सकते, क्योंकि तुमने मुझे भी जीने लायक नहीं छोड़ा, मैं जमाने को कैसे मुँह दिखाऊँगी।” तभी मेरा मोबाइल बज उठा था, मैंने फोन का स्विच ऑन किया, लेकिन तभी ताज ने फोन छीनकर मेरे बाजू में रख दिया और बोला, “फोन को छोड़ो और पूरी भड़ास निकाल लो?”

“हमारी शादी पक्की हो चुकी है और मैंने दिल से आपको अपना जीवनसाथी चुन लिया है। अब तुम्हीं मेरे ताज हो।”

“मैंने कब कहा मैं तुम्हारा ताज नहीं हूँ, ताज ही हूँ और ताज ही हमेशा रहूँगा, लेकिन शादी मेरे हिसाब से होगी... आर्य समाज में...”

“मैं इतनी प्रेम दीवानी नहीं हूँ कि माँ-बाप की इज्जत का ख्याल न करूँ? तुम तो मेरे जीवन में अब आए हो, मेरे माँ-बाप ने तो मुझे पैदा किया, पाला-पोषा...मैं वासना में अंधी लौंडी नहीं हूँ... परंतु बदनसीबी मेरी कि मैं तुम्हारे प्रेम की पुजारन हूँ, न तो माँ बाप को धोखा दे सकती हूँ और न तुम्हें छोड़ सकती हूँ, इसलिए ...तुम्हें निकाह ही करना होगा और वह भी मेरे ही साथ, वरना तुम्हें जेल की हवा खानी होगी। हमारी अस्मत के साथ मजाक करना और शादी का झाँसा देना...समझे कि नहीं...” अचानक ही मुझे फोन पर बात करनी याद आ गई, मैंने मोबाइल उठा लिया, “ओह...अब्बू...मैं तो भूल ही गई...हैलो अब्बू...हैलो अब्बू...”

उधर से अब्बू की आवाज थी, “बेटा मेरी तबियत खराब है...जल्दी घर चली आओ...अम्मी भी घर पर नहीं...”

“तबियत खराब...क्या हुआ अब्बू...” कहते हुए उठ खड़ी हुई और चल दी थी, तभी ताज भी मेरे पीछे चल पड़ा था...

जब मैं घबराहट के साथ भागती हुई आ पहुँची, तो अब्बू बिस्तर पर लेटे हुए थे, डॉक्टर चेक कर रहा था, “अब्बू....अब्बू...” अम्मी ने होंठों पर हाथ रखकर चुप रहने का संकेत किया।

डॉक्टर चेकअप करते हुए बोले थे, “घबराने की कोई बात नहीं, कुछ टेंशन होने की वजह से बीपी हाई हो गया, दवा लिख देता हूँ, सब ठीक हो जाएगा।” डॉक्टर ने पर्ची पर दवा लिखकर दी और चलते हुए अम्मी से बोला, “यह टेबलेट सुबह-शाम टाइम से खिलाते रहना..” पर्ची लेकर अली उसे छोड़ने बाहर निकल गया, तभी शांति के साथ ताज भी अंदर आ पहुँचा था, अब्बू के करीब आकर बैठते हुए मैंने पूछा था, “टेंशन कायकू अब्बू?”

“बेटे मुझे तेरे निकाह को लेकर चिंता है...” अब्बू ने धीरे से कहा था, “सही सलामत सब निपट जाए तो...मुझे सुकून मिलेगा।”

“शादी की तैयारी तो हो ही रही है,” बीच में अम्मी ने दखल दिया था, “फिर चिंता कायकू?”

“बेगम.....बेटी के निकाह की चिंता किसे नहीं होती....जिस दिन बेटी पैदा होती है, बाप तो उसी दिन उसकी शादी के विषय में सोचना शुरू कर देता है...” कहते-कहते अब्बू की नजर ताज पर टिक गई थी, “बेटा ताज...” ताज अब्बू के और पास आ गया था, “फर्रू मेरी सबसे अधिक लाड़ली बेटी है....” अब्बू ने मेरा हाथ पकड़कर ताज के हाथ में देते हुए आगे कहा था, “मैं अपनी जिंदगी का सबसे बेशकीमती हीरा तुम्हें सौंप रहा हूँ, बस मेरी एक ही तमन्ना है कि कभी इस पर गम की छाया तक भी न पड़ने देना और आँखों में आँसू न आने देना...जिंदगीभर इसका साथ न छोड़ना, ये वादा करो।”

“वादा रहा अब्बू हर मुराद पूरी होगी,” ताज बोल उठा था, “मैं इसे अपनी जिंदगी से कभी दूर नहीं रहने दूँगा।”

ताज की बात सुनकर अब्बू मुस्कराए और उनकी स्माइल से सब मुस्करा उठे थे और मैं बेशर्म सी होते हुए ताज से नजरें मिला बैठी थी।

अगले दिन ताज के घर पर मैं उनसे बात कर रही थी, “तुमने अब्बू के सामने मेरा हाथ पकड़कर जीवनभर साथ चलने का वादा किया है, फिर आखिर तुम्हें इसलाम कबूल करने में आपत्ति क्यों है? क्या मेरे लिए इतना भी नहीं कर सकते?”

“यही बात मैं तुमसे कहूँ कि तुम्हें वैदिक धर्म अपनाने में आपत्ति क्या है? फिर भारत तो पुरुष प्रधान देश है यहाँ पत्नी का नाम पति के कुल एवं गोत्र से ही जाना जाता है। वसंता की जावेद से शादी को ही देख लो...”

उनकी बात सुन थोड़ी ऊँची आवाज में मैं बोली, “समझने की कोशिश क्यों नहीं करते ऐसा संभव नहीं है, मैंने ऐसा किया तो मेरे घर वाले मेरे साथ-साथ तुम्हें भी जमीन में जिंदा दफन कर देंगे।”

“तो जैसा है वैसा चलने दो। लोग मुझे मुस्लिम समझते हैं, समझने दो...हम दोनों तरीके से शादी कर लेते हैं सात फेरे भी ले लेते हैं और निकाह भी पढ़ लेते हैं।”

“लेकिन यह संभव नहीं...”

“यह संभव नहीं है...तो सुन लो मैं धर्म नहीं बदल सकता, अपनी जान दे सकता हूँ...”

“हाँ...हाँ जान तो दोगे ही, क्योंकि तुम्हारी जान तो मैं हूँ ना...” आँसू निकल आए थे मेरे...

इधर कुँआ और उधर खाई जैसी परिस्थितियाँ मेरे सामने पैदा हो गई थी, जिसके लिए मुझे मार्गदर्शन की सख्त आवश्यकता थी। लेकिन मेरा मार्गदर्शन करता कौन? ऐसी स्थिति में आत्ममंथन करना और ईश्वर पर भरोसा रखना ही मैंने उचित समझा।

बाद में मैंने अपने इस वार्तालाप के सारांश में एक गीत की रचना की, अपने शब्द और ताज के शब्दों को गीत के रूप में पिरोया, जिसे बहुत बाद में संगीतकार फणीश पँवार ने संगीतबद्ध किया। जो इस प्रकार है :

ताज :
मैं छोरा गाँव का
जनेऊधारी रै
नैन मटक्का कर बैठा
ब्रह्मचारी रै

मैं :
मैं छोरी हिन्द की
इज्जत वाली रै
मुगलों के खानदान की
मैं ईमान वाली रै

ताज :
तो घर वापस चलैं
गोधूली बेला रै
दोनों बैठ हवन करें
अब तक अकेला रै

दयानंद के पथ पै चालैं
जिससे दुनिया हारी रै
मैं छोरा गाँव का
जनेऊधारी रै

मैं :
कप्फारा से क्यूँ दूर
जन्मत की मिलेगी हूर
पार करें पुले सिरात
कयामत आनेवाली रै
मैं छोरी हिन्द की

इज्जत वाली रै
मुगलों के खानदान की
मैं ईमान वाली रै

ताज :

हिन्दू का ना मुसलमान का
ना आर्यवर्त क्रिसतान का
आर्यों की आदि भूमि यह
वेद सब पै भारी रै

मैं छोरा गाँव का
जनेऊधारी रै
नैन मटक्का कर बैठा
ब्रह्मचारी रै

मैं :

तू छोरा गाँव का
जनेऊधारी रै
आ करले नैन मटक्का
ब्रह्मचारी रै



मैं हिन्दू दुल्हन के रूप में

53

अंततः मुझे ही हथियार डालने पड़े और हमने बिना किसी को बताए आर्य समाज मंदिर में जाकर वेद मंत्रों के साथ विवाह कर लिया। लेकिन विवाह होते ही वह मुझे अपने किराए के रूम में ले गया। जहाँ मैंने शादी के कपड़े उतारे और पुराने कपड़े पहनकर जल्दी में पतिदेव की अनुमति लेकर घर के लिए ऑटो पकड़ा। जानते हो मैंने यह शादी क्यों की? इसलिए कि इससे क्या होता है, असली विवाह यानी कि निकाह तो मेरा अगले दिन होने ही वाला था। उनको खुश रखने के लिए मैंने उनकी बात भी मान ली थी और अगले दिन वाकई में मेरा निकाह भी हो गया और क्या किसी



आर्य समाज मंदिर में मैं हिन्दू
दुल्हन के रूप में एवं
शादीखाने में मुस्लिम दुल्हन के
रूप में

ने ऐसा देखा है कि
किसी लड़की की 24
घंटे के अंदर दो बार
शादी, और दूल्हा भी
एक और दुल्हन भी
वही। अपने फूफा की
मर्सीडीज कार में मैं
देर रात अपने पति के
साथ विदा हुई। उसके

किराए के मकान में दहेज का सामान पहले ही पहुँचा दिया गया था। बिस्तर भी पता नहीं किसने सजाया था, लेकिन कई हजार रुपए के फूल उस पर लगाए गए थे। मैं बिस्तर पर घूँघट किए हुए ही बैठ गई, लेकिन जैसे ही ताज कमरे का दरवाजा बंद करने वाले थे कि लड्डू भाई बधाई देने आ गए और बोले, “बच्चों अब एंज्वाय करो अच्छा गुड़नाइट।”

सेज पर मुझसे चिपकर बैठते हुए ताज ने घूँघट को उठाने की कोशिश की तो मैं बोल पड़ी, “इसकी कोई जरूरत नहीं...” मैंने अपना घूँघट खुद ही उठा दिया था।

“अरे वाह इतनी बेताब हो...” ताज बोल उठा था।

“तुम मुसलमान नहीं हो, इसलिए हमारा निकाह नाजायज है।”

“लेकिन दुनिया की नजरों में तो हम मिया बीवी बन गए।”

“लेकिन अल्लाह के खौफ से डरो, उनकी नजरों में तो हम गुनाहगार हैं।” मैं क्रोध से भर उठी थी।

“अब सुहागरात के बीच में यह...”

“तुमने कलमा नहीं पढ़ा हुआ है।”

“तो ठीक है पढ़ा दो।”

“मुझे मजाक पसंद नहीं, तुम्हारा खतना भी नहीं हुआ होगा?”

“नहीं...”

“....जब तक तुम खतना नहीं करवा लेते और कलमा नहीं पढ़ लेते मुझे छूना भी नहीं...”

“छूने की क्या जरूरत है तुम्हें, मैंने दिल में बसाया है, पलकों पे बैठाया है...मैं सुहागरात के लिए सात जन्म तक इंतजार कर सकता हूँ, क्योंकि मैं वासना का नहीं....प्रेम का पुजारी हूँ....मैं आर्यवर्त में पैदा हुआ हूँ, अरब में नहीं। सच्चा हिन्दुस्तानी हूँ जो सर कटा सकता है धर्म नहीं ..., भारत माँ का बेटा हूँ...भारत माँ का बेटा हूँ...सन आफ मदर इंडिया!”

उनकी बातों से मेरी तो आँखें फटी की फटी रह गई और फिर रोना आ गया...न जाने नींद कब आई पता ही नहीं चला, लेकिन जब आँखें खुली तो ताज बाहर से इडली ले आया था और उठते ही कहा, “हाथ मुँह धो लो...मैं इडली ले आया हूँ...नाश्ता कर लो...” मैं बेड पर बैठी और

पगली सी उनका चेहरा कई मिनट तक निहारती रही और सोचती रही, 'नाश्ता मुझे इनके लिए बनाना था या इन्हें मेरे लिए?' मुझे आज भी इस बात का पछतावा है कि मैं शादी के पहले ही दिन भारतीय नारी का कर्तव्य न निभा सकी। सारी दुनिया में भारतीय नारी कर्तव्य परायणता के लिए जानी जाती है और मैं बदनसीब कर्तव्य पालन से विमुख रही। हम दोनों की नई-नई शादी हुई...दोनों एक ही बिस्तर पर सोते, दिनभर मित्र की भाँति रहते और रातभर एक-दूसरे को छूते तक न थे, मैं तो कट्टरता के कारण संयम में रही, लेकिन उनका संयम देखकर तो मुझे भारत के प्राचीन ऋषियों की कहानियाँ सत्य प्रतीत होने लगी थी। यह मैंने उनसे ही सीखा कि जो संयम से कार्य लेता है, वही श्रद्धा का पात्र बन पाता है। जो अपने मन, मुख और जिह्वा पर संयम रखता है, वह अपनी आत्मा को संयम से बचाकर स्वर्ग के द्वार स्वयं ही खोलता है...मैंने भले ही उन्हें अपने शरीर को छूने न दिया, लेकिन उनके संग गृहस्थ जीवन में कदम रखना मुझे जीते-जी स्वर्ग प्रतीत हुआ...उन्हें प्लेट में मेरे लिए सुबह-सवेरे इडली रखते हुए देखकर।

54

ताज मुझसे दिनभर की अपने कार्यालय की कोई बात नहीं छिपाता था, हर चर्चा, हर खबर से मुझको अवगत कराता था। कई दिन बाद उन्होंने अपने दोस्तों संग हुई चर्चा मुझसे शेयर की, उन्होंने बताया, प्रेस के मीटिंग टेबल पर अखबार पड़े हुए थे, जिसमें लव जिहाद के ऊपर बढ़ती हुई घटनाओं का जिक्र था, ताज अपनी बात रख रहा था, “आजकल लव जिहाद की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं और पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी है। थोक के भाव में इसलाम कबूल कर रही हैं हमारी हिन्दू बहन और बेटियाँ...”

“सही कहा सर, कई पोलिटीशियन और फिल्मी सेलिब्रिटीज और सोशल वर्क्स ने हमारी बहन और बेटियों को प्यार के झाँसे में फँसाकर व धन का लालच देकर उनसे शादी करके उन्हें कन्वर्ट किया है।” उनके एक मित्र ने कहा, “आप अच्छी तरह जानते हैं वसंता के बाद अगली

निशाना बनी रेणु, जिसे सना के एक मित्र मस्तान ने प्रेम जाल में फँसाया और शादी के लिए जोर डाला। लेकिन इस मामले का शादी से पहले ही भंडाफोड़ हो गया और रेणु के माता-पिता ने उसकी हत्या कर दी और उस हत्या को आत्महत्या का रूप दे दिया गया, कई दिनों तक यह मामला तमाम अखबारों की सुर्खियों में रहा, लेकिन मुस्लिम युवक इससे दबनेवाले नहीं।”

“धर्म बचाने के लिए क्या जौहर प्रथा फिर से लागू करनी होगी, ये लोग हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। यह देखिए आज ही क्या समाचार छपा है...” कहते हुए दूसरे दोस्त ने पेपर को ताज की ओर बढ़ा दिया था।

पेपर को लेते हुए ताज बोले, “क्या खबर छपी है?”

“वसंता के गोमांस खाने के बाद हिन्दु धर्म छोड़ने पर कट्टरपंथियों में धारणा पक्की हो गई कि जो हिन्दु मुसलमान नहीं बनना चाहता उसे किसी भी तरह गाय का मांस खिला दो और फिर सच-सच बता दो तो

1. स्वतंत्र वार्ता, 16 जनवरी 2005, रेणु की खबर की कटिंग

प्रेमी से विवाह न होने पर आत्महत्या

हैदराबाद, 16 जनवरी (स्वतंत्र वार्ता)। नरेंद्रमेट पाणा क्षेत्र में अपने परिजनों द्वारा प्रेमी से विवाह कराने से इकार करने पर जापन से गिराव होकर एक युवती ने आत्महत्या कर ली। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार नरेंद्रमेट लालबहादुर नगर निवासी शिक्षक की पुत्री रेणुका (18) दसवीं तक की पढ़ाई करने के बाद घर में ही रह



रेणुका की फाइल फोटो।

रही थी। कुछ दिन पहले ही वह सिलाई में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु पास ही में स्थित एक सिलाई प्रशिक्षण केंद्र जाना आरंभ किया। पिछले कुछ दिनों से रेणुका का स्थानीय निवासी मस्तान नामक युवक के साथ प्रेम-प्रसंग चल रहा था।

इस संबंध में रेणुका के माता-पिता को जानकारी मिलने पर उन्होंने रेणुका का घर से बाहर निकलना बंद कर दिया और उन्होंने रेणुका को घर दायत दी कि मस्तान के साथ मिलना-जुलना बंद कर दे। मस्तान

के माता-पिता ने भी इस संबंध में जानकारी मिलने पर मस्तान को भी इसी तरह की हिदायत दी थी। इसके चलते आज सुबह 11 बजे मस्तान रेणुका के घर आया था। जिसे देख रेणुका की मां राधा ने उसे काफी मला बुरा कहा और अपने घर से उसे निकाल दिया। अपनी मां के इस रवैये से क्षुब्ध होकर रेणुका

नागरूम में चली गयी और वहां पर अपने झर्री पर मिट्टी का तेल डाल लिया और आग लगा ली। इस दौरान उसके चीखने की आवाज सुनकर नागरूम में गयी राधा ने आग को बुझा दिया था, परंतु गंभीर रूप से झुलसी रेणुका की मौत घर ही मौत हो गयी। घटना की जानकारी मिलते ही वहां पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर उसे पोस्टमार्टम हेतु गांधी अस्पताल के मुल्कर भेज दिया है। पुलिस मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई कर रही है।



वह अपना धर्म स्वयं ही छोड़ देगा।” उनके खास मित्र चेतन ने आगे कहा, “इस घटना से कुछ कट्टरपंथी मुसलमानों को बहुत प्रेरणा मिली है और अलकबीर बूचड़खाना, जिसे बंद कराने के लिए स्वामी आनंद बोध सरस्वती तक आंदोलन कर चुके थे, उससे अधिक गौकसी अब वीरान जगहों पर होने लगी है और वह गोमांस ऐसी जगह भेजा जाने लगा, जहाँ से मांसाहारी हिन्दु मांस खरीदा करते हैं। उन हिन्दु होटलों में भी सप्लाई किया जाने लगा, जिनमें मांसाहार पकाया जाता है।”

“हे भगवान...” ताज की प्रतिक्रिया थी।

“एक हिन्दु होटल पर पुलिस ने छापा मारकर भारी मात्रा में गोमांस

1. हिन्दू होटल में गोमांस मिलने की खबर, तेलुगू वार्ता

మట్టన్ బిర్యానీలో ఎడ్డుమాంసం

‘అభిలాష’లో బిజ్నెస్‌ఎం విధ్వంసం

హైదరాబాద్: మట్టన్ బిర్యానీలో ఎడ్డు మాంసం ఉన్నట్లు బీజేపీ బోధకులు ప్రకటించిన సంగతి తెలిస్తే క. పోలీస్ అధికారులు ఊహించుకోవచ్చు. ఆగ్రేహాస్ లోని ప్రముఖ రెస్టారెంట్‌గా సేవలందించే అభిలాష పోలీస్ ఈ ఆరోపణల నోబుడికింది. పూర్వార్థి ఇక్కడే సేవ ప్రకటించి ఈ రేపుడు పదవి పోలీస్ పై అంతిమ జనతా యువమోర్చా అభ్యర్థులు దాడి చేసి విధ్వంసం చేస్తున్నారు. ఈ సందర్భంలో సంబంధించిన పూర్తి వివరాలు ఇలా ఉన్నాయి. పోలీస్ కేంద్రం ఇద్దరు పూర్వ మోదరం సర్పంచుల అధికారి పోలీస్ రివ్యూ (మే 24 96)

హైదరాబాద్: మట్టన్ బిర్యానీలో ఎడ్డు మాంసం ఉన్నట్లు బీజేపీ బోధకులు ప్రకటించిన సంగతి తెలిస్తే క. పోలీస్ అధికారులు ఊహించుకోవచ్చు. ఆగ్రేహాస్ లోని ప్రముఖ రెస్టారెంట్‌గా సేవలందించే అభిలాష పోలీస్ ఈ ఆరోపణల నోబుడికింది. పూర్వార్థి ఇక్కడే సేవ ప్రకటించి ఈ రేపుడు పదవి పోలీస్ పై అంతిమ జనతా యువమోర్చా అభ్యర్థులు దాడి చేసి విధ్వంసం చేస్తున్నారు. ఈ సందర్భంలో సంబంధించిన పూర్తి వివరాలు ఇలా ఉన్నాయి. పోలీస్ కేంద్రం ఇద్దరు పూర్వ మోదరం సర్పంచుల అధికారి పోలీస్ రివ్యూ (మే 24 96)

बरामद किया है और परीक्षण के लिए लैब में भेज दिया, मजेदार बात तो यह है कि उस हिन्दु होटल का मालिक एक प्रख्यात हिन्दूवादी पार्टी का नेता व मंत्री..."

"सुना है एक मुस्लिम सांसद ने लव जिहाद की कमान अपने हाथ में ले ली है और इसी क्रम में एक साल के अंदर सौ से अधिक हिन्दु लड़कियों को मुसलमान बनाया गया। लव जिहाद बड़ी तेजी से प्यार की पींगे बढ़ा रहा है और नाम परिवर्तन के विज्ञापन धड़ाधड़ छप रहे हैं।"

"लेकिन आज तो यह ब्रेकिंग लव बनने वाला है?"

"वह कैसे?" ताज ने पूछा तो चेतन ने उसे आगे बताया, "दरअसल कट्टर हिन्दु परिवार से संबंध रखने वाली पल्लवी को एक मुस्लिम युवक ने फँसाने की बहुत कोशिश की, लेकिन जब वह कामयाब न हुआ तो एक नेता की सलाह पर पल्लवी का अपहरण कर लिया गया और उसका मुस्लिम युवक के साथ जबर्दस्ती निकाह पढ़वाया गया। इस घटना ने हिन्दुओं को आक्रोशित करके रख दिया और वे सड़कों पर उतर आए हैं।"

"पल्लवी? क्या पल्लवी मुस्लिम बन गई...वह तो बहुत ही निष्ठावान हिन्दू कन्या थी..."

"दरअसल आंध्र प्रदेश के हिन्दुओं में कट्टरता बढ़ रही है और एक

CHANGE OF NAME

★ I, Darshana D/o Mr. Ramchand R/o No. 23-2-260 Moghalpura Hyd-2 have changed my name as Saniya Hussain

CHANGE OF NAME

★ I, Perumalla Mary Vasanta W/o Mohammed Rashooduddin R/o H. No. 5-4-667 Old Kattalmandi, Hyd. Have Changed As Sameena Rasheed

★ I, Valibhaneni Sweta R/o Hyderabad, A.P Hence forth Shall be Known as Sana Fatima

1. इस्लाम कबूलने के बाद नाम परिवर्तन के विज्ञापन प्रकाशित होने की बाढ़ सी आ गई थी।

स्वतंत्र वार्ता

2 मार्च 2003 में प्रकाशित विज्ञापन

CHANGE OF NAME

★ I. Farhana Begum R/o Flat No. 201-A, 3rd Floor Moonrock Apot Humayun Nagar Opp: N.M.D.C Hyderabad, A.P Hence forth Shall be Known as Vandana Nirmitt

★ I, Savita Matkar R/o Flat No. 102, Kavita Residency, Doctor Colony. Madhapur. Hyderabad, A.P Hence Forth Shall be Known as Samaira

★ I, Master Gopi, R/o 1-2-367/2, Gaganmahal Road, Hyd-29. A.P Hence forth Shall be Known as Polishetty Rohanth Sai Vandra

राष्ट्रीय राजनैतिक हिन्दू पार्टी के कई हिन्दू सांसद और एमएलए आंध्रा से पहली बार चुने गए हैं। इससे कट्टरपंथियों को राजनीति की अपनी रोटी तवे पर जलती नजर आने लगी है। इसलिए पल्लवी का मुसलमान बनाया जाना इन लोगों के लिए बहुत जरूरी था।' वैसे आंध्रा में हिन्दू

1. स्वतंत्र वार्ता, 24 अक्टूबर 2005

फातिमा के रूप में पेश हुई लापता पल्लवी कहा, अपनी मर्जी से कबूला इस्लाम

देराबाद, 24 अक्टूबर (स्वतंत्र वार्ता)। नगर के लंगरखाने क्षेत्र से लापता होने वाली पल्लवी गान्धू 20 वर्षों पुरानी आज अदालत में पेश हुईं। उसने अदालत को सूचित किया कि उसने रबेका से इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है। गौरतलब है कि पल्लवी के माता-पिता ने अदालत में बड़ी प्रत्यक्षीकरण पत्रिका दाखल की थी और अदालत से यह निराशा की थी कि कुछ असामयिक कारणों से उनकी लड़की का अपहरण कर लिया है और पुनर्निष्ठ अदालतों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही है।

पुराना पल्लवी अदालत पहुंची लड़की ने अदालत को बताया, 'मेरा नाम सना फातिमा उर्फ पल्लवी है। पिता का नाम यादव है और मैं आज 20

वर्ष है। गलत नाम मेरे मेरे अपनी संतुष्टि के साथ रह रही हूँ, लेकिन कहाँ रह रही हूँ, इसका पता नहीं बना सकती, क्योंकि ऐसा करने पर मेरे माता-पिता वहाँ पहुंच सकते हैं। मैंने डाटा इस्लाम धर्म अपनाया जहां मेरे माता-पिता को पसंद नहीं है। मुझे पर किसी का खयाल नहीं है और मैं सांसद बड़ी प्रत्यक्षीकरण पत्रिका दाखल की थी और अदालत से यह निराशा की थी कि कुछ असामयिक कारणों से उनकी लड़की का अपहरण कर लिया है और पुनर्निष्ठ अदालतों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही है।

मुझे पता है कि उसका अपहरण किया गया था। उसने कहा कि वह पूरी तरह से सुरक्षित और स्वस्थ है। पल्लवी ने बताया कि उसने अपनी मर्जी से इस्लाम धर्म स्वीकार किया है और अपना नाम फातिमा रख लिया है।



आने साथ आई महिलाओं के साथ अदालत से बाहर निकलती हुई पल्लवी उर्फ सना फातिमा तथा इन्फैन्ट में पल्लवी की फाइल फोटो।

स्वतंत्र वार्ता, 19 नवंबर 2005

पल्लवी के धर्मांतरण के पीछे मजलिस व मदरसों का हाथ : भाजपा

मुख्यमंत्री से मामले की पुनः जांच करवाने की मांग

देराबाद, 18 नवंबर (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय जनता पार्टी ने ऑल इंडिया मजलिस-ए-इतेहाद मुसलमानों (एआईएमआईएम) पर पल्लवी की जबर्न बंधक बनाकर रखने का आरोप लगाते हुए मुख्यमंत्री से इस मामले की पुनः जांच करवाने तथा पल्लवी के धर्मांतरण में मदरसों की भूमिका के बारे में भी जांच करवाने की मांग की।

आज यहां संप्रियालय में मुख्यमंत्री डॉ. वाई.एस. राजशेखर रेड्डी को इस संबंध में शासन सौंपने के पश्चात् पत्रकारों से बातचीत करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ब्रह्मांक वृन्दावन, विशाखक जी. फिरोज रेड्डी, नगर अध्यक्ष वैकट रमणी, पल्लवी

के पिता यादव या एबी उसकी माता यादव ने आरोप लगाया कि जिस तरह से पल्लवी को एमआईएम के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने रहस्यमय ढंग से अदालत में पेश किया था, उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि इस सारे मामले के पीछे एमआईएम का हाथ है तथा पल्लवी के धर्मांतरण में गणराज्य के मदरसों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने कहा कि पल्लवी के धर्मांतरण में एमआईएम एवं मदरसों की कृपा भूमिका रही है सरकार को इसकी जांच करवानी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि मदरसों द्वारा युवाओं का जबर्न धर्मांतरण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पल्लवी के अलावा शहर

में कई युवाओं का धर्मांतरण किया जा चुका है और यह क्रम जारी है। उन्होंने कहा कि सरकार को इस मामले को गंभीरता से लेते हुए इसकी निस्तार से जांच करवानी चाहिए। दत्तात्रेय ने कहा कि सरकार को पल्लवी को उद्धार-गृह में ठहराने का बंदोबस्त करना चाहिए और उसे उसके माता-पिता से मिलने दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को यह पता करने का प्रयास करना चाहिए कि आखिर पल्लवी कहाँ है, वह किसके पास ठहरी हुई है और वह अपने माता-पिता के पास वापस क्यों नहीं जाना चाहती? उन्होंने कहा कि पल्लवी के संबंधों को देखते हुए यह स्पष्ट होगा कि वह

किसी के दबाव में कार्य कर रही है। दत्तात्रेय ने कहा कि खादर अली की हत्या में पल्लवी के परिवार के सदस्यों को फसाया जा रहा है तथा उनके खिलाफ कर्फी मामले लगाए जा रहे हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से फकी मामलों को वापस लेने तथा परिवार के निर्दोष सदस्यों को रिहा करने की अपील की। उन्होंने सरकार से खादर अली की हत्या की जांच करवाने की भी मांग की। दत्तात्रेय ने बताया कि मुख्यमंत्री राजशेखर रेड्डी ने उनकी बात को ग़मान से सुना तथा उन्होंने किस तरह से कानूनी तौर पर पल्लवी को वापस उसके माता-पिता के पास लाया जा सकता है, पर विचार करने का आश्वासन दिया।



सिख लड़की- 1 लाख
हिंदू लड़की- 4 लाख
ईसाई लड़की- 8 लाख
जैन लड़की- 3 लाख

अगर के 'लव' और 'जिहाद' को जोड़ें तो 'लव जिहाद' का मतलब है कि एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को अपने धर्म में बदलाने के लिए बल का प्रयोग करते हैं।
 यह एक नया शब्द है जो अक्सर अल-कायदा के लोगों का प्रयोग होता है।
 यह शब्द अक्सर अल-कायदा के लोगों का प्रयोग होता है।
 यह शब्द अक्सर अल-कायदा के लोगों का प्रयोग होता है।

“लव जिहाद के रेट कार्ड से चिंतित सरकार बहु विवाह का प्रस्ताव लाई थी, ताकि कानून बनाया जा सके कि हिन्दू एक से अधिक शादी कर सकें, वैसे हमारे देश में बहु विवाह की प्रथा तो सदियों पहले भी थी, इसमें नई बात है क्या?”

“बात नई हो या पुरानी, ऐसा होगा नहीं, क्योंकि कुछ

लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक हैं, इसलिए बहुत सी क्वारी रह जाती हैं।”

“और वे मुसलमानी बन जाती हैं, भले ही दस बच्चों के अब्बू से शादी करनी पड़ती है या रिलेशनशिप से जिंदगी गुजारने को मजबूर होती हैं।”

नमाज के लिए बदला स्कूलों का वक्त



उत्तर प्रदेश की समाजवादी सरकार व उनके चापसू अધिकांरी प्रदेश की इस्लामिक ज़रेश बगाने का प्रचार करते नजर आ रहे हैं। पिछले दिनों ऐसा ही एक मामला उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में दिखा जहाँ नमाज के लिए स्कूलों का वक्त बदल दिया गया है। जिलाधिकारी

राजमणि यादव के आदेश से शुक्रवार को स्कूलों का समय बदल कर 7:30 से 12:30 बजे तक कर दिया है। यानी अन्य दिनों की अपेक्षा स्कूल 4 घंटे पहले ही बंद हो जायेगा। यह बदलाव इसलिए किया गया है ताकि, मुस्लिम शिक्षक और छात्र नमाज पढ़ सकें। जिलाधिकारी का कहना है कि यह उन्होंने सरकार के एक पुराने आदेश के तहत किया है। उन्होंने 2004 में मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के कार्यकाल के एक आदेश का हवाला दिया है, जिसमें शक्रवार को स्कूलों का समय बदल दिया गया था। लेकिन पूरे प्रदेश में इस आदेश की भर्त्सना होने के बाद तब यह आदेश वापस लिया गया था।

तुष्टिकरण की नीति का अधिक पालन सपा के मुलायम सिंह यादव एवं चंद्रबाबू नायडू ने किया, नायडू ने जहाँ उन्हें आरक्षण की पहल की, वहीं सपा ने वजीफे के नाम पर लाखों बाँटे एवं नमाज के लिए स्कूल का समय तक बदला।

—दैनिक जागरण की कटिंग

1. स्वतंत्र वार्ता, 9 अप्रैल 2005

बहु पत्नी कानून पर महिला कांग्रेस का कड़ा ऐतराज

हैदराबाद, 9 अप्रैल (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश महिला कांग्रेस ने राज्य सरकार द्वारा बहु पत्नी प्रथा से संबद्ध कानून लाने जाने की कड़ी निंदा की है। महिला कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. जी.गीता रेड्डी ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि यह कानून देश की संस्कृति व परंपराओं के विपरीत है तथा सरकार ने अवैध संबंधों को वैध बनाने के उद्देश्य से ही एक कानून बनाने का निर्णय लिया है। श्रीमती रेड्डी ने सरकार की जमकर आलोचना करते हुए कहा कि उसने गुप्तपुत्र तरीके से विधानसभा सत्र के आखिरी दिन यह कानून पास कराया। उन्होंने कहा कि इस कानून से गरीब व मध्यम वर्ग की महिलाओं के साथ काफी अन्याय हो सकता है। श्रीमती रेड्डी ने इस मामले पर मुख्यमंत्री से स्पष्टीकरण

- देश की संस्कृति के विपरीत
- महिलाओं के साथ अन्याय
- महिलाओं पर अत्याचार बढ़ेगा

देने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि महिला विकास का ढिंढोरा पीटने वाली तेदेपा सरकार ने आज तक महिलाओं को दिये गये किसी भी आश्वासन को पूरा नहीं किया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान महिलाओं पर अत्याचार के मामलों में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि सरकार ने सरकारी नौकरियों में महिलाओं को तीस प्रतिशत आरक्षण उपलब्ध कराने संबंधी अपने आश्वासन पर अमल करने में नाकाम रही है। श्रीमती रेड्डी ने जानना चाहा कि जब लाखों लोग रोटी कपड़ा और

मकान के लिए परेशान हैं, तो सरकार को बहु पत्नी प्रथा पर कानून लाने की आवश्यकता क्या थी। इस कानून का तत्काल वापस लेने की मांग करते हुए उन्होंने चैतावनी दी कि उन ऐसा न होने पर आंदोलन किया जायेगा। उन्होंने डॉ. एस. राजशेखर रेड्डी की प्रस्तावित पदवाजा का उद्घेस करते हुए महिलाओं का आह्वान किया कि वे इस कार्यक्रम को सफल बनाने में जुट जायें। श्रीमती रेड्डी ने ऑगोल तथा मार्कापुरा में 'बातों' दैनिक कार्यालय पर हुए हमले की कड़ी निंदा की। संवाददाताओं से बातों के समय श्रीमती रेड्डी के साथ महिला कांग्रेस की वरिष्ठ उपाध्यक्ष कामेश्वरी, महासचिव विजया रेड्डी तथा अमृतसागर आदि भी उपस्थित थी।



ताज मुस्लिम तुष्टिकरण नीति के विरोध में आर्य समाज, अमृतसर में लोगों को संबोधित करते हुए

राष्ट्रीय राजनैतिक पार्टियों ने वोट बैंक की खातिर विरोध करना शुरू किया हुआ है। इस देश का अब भगवान ही मालिक है।”

“हिन्दुओं में बहु विवाह होना तो चाहिए, इससे निश्चित रूप से हिन्दुओं के धर्मांतरण पर रोक काफी हद तक लगनी संभव हो जाएगी।”

“यार ऐसा हुआ तो हम भी फिर तो बच्चों की लाइन लगा देंगे।” ताज और चेतन की बात पर बीच में पड़ते हुए उनके एक दोस्त ने हास्य-विनोद किया। बाद में ताज एवं चेतन ने कई सभाओं में मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति का सरेआम विरोध किया।

55

ताज के एक दोस्त इमरोज भी थे, जो दिल्ली में रहते थे। इन्होंने भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता को लेकर एक आपत्तिजनक कविता लिखी, लव-कुश को रावण की....आगे की पंक्तियाँ लिखने का अपराध मैं नहीं कर सकती। लेकिन ताज को वह कविता इतनी बुरी लगी कि उन्होंने उस पत्रिका को ही जला दिया, जिसमें वह छपी थी। उसके बाद ताज ने



अमर शहीद महाशय राजपाल के पौत्र श्री शेखर मल्होत्रा एवं प्रख्यात चिकित्सक भगवान दास से प्राचीन पांडुलिपियों के प्रकाशन पर चर्चा करते हुए मेरे पतिदेव

इमरोज से मित्रता हमेशा के लिए खत्म कर दी और दिल्ली आकर एक दिन हिन्द पाकेट बुक्स के संपादक डॉक्टर नफीस आफरीदी और निदेशक दीनानाथ मल्होत्रा के सामने ही इमरोज को खरी-खोटी सुनाते हुए साफ कहा कि “जिस भगवान राम को तुम गाली देते हो वे तुम्हारे भी पूर्वज हैं। तुम उनके चरित्र पर लाँछन लगाते हो, वे तो एक पत्नीव्रता थे, लेकिन



महाशय राजपाल

तुमने तो शादीशुदा अमृता प्रीतम को फँसाकर धर्म एवं समाज के प्रति कुकर्म की शर्मनाक पराकाष्ठा कायम की है।” दीनानाथ जी जो अमृता प्रीतम एवं इमरोज की पुस्तकें प्रकाशित करते थे, वे मेरे पतिदेव से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे कुछ पुस्तकों के संपादन का कार्य सौंप दिया। अमर शहीद महाशय राजपाल के पुत्र श्री दीनानाथ एवं पौत्र शेखर मल्होत्रा के साथ मेरे पति ने लगभग पाँच साल तक साहित्य संपादन कार्य किया और उत्कृष्ट

राष्ट्रवादी पुस्तकों का ही प्रकाशन किया। इस दौरान उन्होंने दिन-रात एक

करके करीब छह हजार पुस्तकों का संपादन किया और करवाया, ताकि उन पुस्तकों से भारतीय संस्कृति के विरुद्ध लिखी गई बातें हटाई जा सकें। मैंने उपरोक्त घटना इसलिए लिखी, क्योंकि जब धर्मांतरण, घर वापसी और लव जिहाद की चर्चा हो और अमृता प्रीतम एवं कमलादास का नाम न आए, ऐसा हो ही नहीं सकता। इमरोज की दीवानी अमृता प्रीतम का जन्म 1919 में गुजराँवाला (पंजाब-पाकिस्तान) में हुआ था। बचपन लाहौर में बीता और शिक्षा भी वहीं पर हुई। इन्होंने पंजाबी लेखन से शुरुआत की और किशोरावस्था से ही कविता, कहानी और निबंध लिखना शुरू किया। ये उन विरले साहित्यकारों में से हैं जिनका पहला संकलन 16 साल की आयु में प्रकाशित हुआ। फिर आया 1947 का विभाजन का दौर, इन्होंने विभाजन का दर्द सहा था, और इसे बहुत करीब से महसूस किया था, इनकी कई कहानियों में आप इस दर्द को स्वयं महसूस कर सकते हैं। विभाजन के समय इनका परिवार दिल्ली में आ बसा। अब इन्होंने पंजाबी के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखना शुरू किया। लव जिहादी इस बात का ध्यान रखते हैं कि बहुमुखी प्रतिभाओं को यदि इस्लाम में दीक्षित करेंगे तो अधिक लाभ मिलेगा, यही कारण है कि अमृता प्रीतम को भी लव जिहाद के जाल में फँसाया गया और यह काम किया साहिर नामक एक युवक ने। साहिर लुधियानवी का असली नाम अब्दुल हयी साहिर था। उनका जन्म 8 मार्च 1921 में लुधियाना के एक जागीरदार घराने में हुआ था। इनके पिता बहुत धनी थे, पर माता-पिता में अलगाव होने के कारण उन्हें माता के साथ रहना पड़ा और गरीबी में गुजर करना पड़ा। साहिर की शिक्षा लुधियाना के खालसा हाई स्कूल में हुई। सन् 1939 में जब वे सरकारी कालेज के विद्यार्थी थे अमृता प्रीतम को उन्होंने लव जिहाद का शिकार बनाया। लेकिन अमृता के घरवालों को ये रास नहीं आया, क्योंकि एक तो साहिर मुस्लिम थे और दूसरे गरीब। बाद में अमृता के पिता के कहने पर उन्हें कालेज से निकाल दिया गया। अमृता के मासूम चरित्र को देखते हुए इनका विवाह 16 साल की उम्र में ही एक संपादक से हुआ। लेकिन यह वैवाहिक जीवन 1960 में, तलाक के साथ टूट गया, जिसके लिए इमरोज जिम्मेदार हैं। दरअसल सन 1958-59 के आस-पास अमृता और इमरोज की मुलाकात हुई, एक किताब के सिलसिले में जब

उन्हें उसका मुखपृष्ठ बनवाना था, और तब इमरोज और अमृता हमेशा के लिए एक-दूसरे के हो गए। अब कुछ लोग इसे रूहानी प्रेम कहते हैं, एक शादीशुदा औरत से प्रेम क्या गुनाह नहीं है?

अब बात करें कमलादास की, जिनकी बहुचर्चित आत्मकथा मेरे पति ने न केवल संपादित की वरन टाइप भी खुद की और उसके अंदर से बहुत से आपत्तिजनक प्रसंग हटाए, जो हिन्दू धर्म पर चोट करते थे। कमलादास जानी-मानी लेखिका थी, जो माधवी कुट्टी के नाम से लिखती थी...और केरल की रायल परिवार से थी और नायर थी... पति के निधन के बाद ये अकेलेपन में थी...पति के निधन के समय इनकी उम्र 65 साल थी...तीन काफी बड़े बच्चे थे जो बड़ी-बड़ी पोस्ट पर थे...एक बेटा माधव दास नलपत टाइम्स ऑफ इंडिया का चीफ एडिटर था, जो बाद में यूनेस्को का बड़ा अधिकारी भी बना...उसकी पत्नी त्रावनकोर स्टेट की राजकुमारी है। एक बेटा चिम्मन दास विदेश सेवा का अधिकारी है और एक बेटा केरल में कांग्रेस से विधायक रहा है... इनके घर पर इनके बेटे का एक मित्र अब्दुसमद समदानी उर्फ सादिक अली जो मुस्लिम लीग पार्टी का सांसद था और उनसे उम्र में 32 साल छोटा था वो आता-जाता था... उस मुस्लिम लीग के सांसद ने अपनी माँ की उम्र की कमला पर डोरे डाले और उन्हें लव जिहाद का शिकार बनाया। परिणाम यह हुआ कि कमला ने इस्लाम स्वीकार करके अपना नाम कमला सुरैया रख लिखा... तीनों बेटे अपनी माँ के इस कुकर्म से इतने आहत हुए कि उन्होंने अपनी इस माँ से तमाम सम्बन्ध तोड़ लिए... सबसे चौंकाने वाली खबर ये थी की उनके इस्लाम कुबूल करने पर सऊदी अरब के प्रिंस ने अपना दूत उनके घर भेजकर उन्हें गुलदस्ता भेजा था और भारत सरकार ने इसका विरोध नहीं किया... फिर 2009 में उन्हें कैंसर हुआ और केरल सरकार ने उन्हें पहले मुंबई फिर बाद में पुणे के एक अस्पताल में भर्ती करवा दिया... तीनों बेटों और सभी रिश्तेदारों ने पहले ही उनसे सम्बन्ध तोड़ लिए थे... और उनका मुस्लिम पति जिसकी वो तीसरी बीबी थी, वो एक बार भी उनका हालचाल लेने नहीं गया... मरने के पहले उन्होंने लिखा था 'काश मुझे किसी ने तभी गोली मार दी होती, जब मैं समदानी के जाल में फँस गयी थी... मुझे पता ही नहीं चला की मुझे सिर्फ राजनीतिक साजिश के तहत केरल की हिन्दू

महिलाओं को इस्लाम के प्रति आकर्षित करने के लिए ही फँसाया गया था और इसमें सऊदी अरब के कई लोग काफी हद तक शामिल हैं..., पूरे आठ महीने तक अस्पताल में तड़प-तड़प कर अपने बेटों और पोतों को याद करते-करते और श्रीकृष्ण एवं श्रीराम का नाम लेते हुए उन्होंने 31 मई 2009 को अपने प्राण त्याग दिए... फिर केरल सरकार ने उन्हें मालाबार की जामा मस्जिद की बगल वाले कब्रिस्तान में दफना दिया! इस अवसर पर राज्य के कई मंत्रियों सहित तकरीबन 1,000 लोग मौजूद थे। अंतिम संस्कार में प्रवासी मामलों के मंत्री वयलार रवि, केरल के राजस्व मंत्री के. पी. राजेंद्रन और जल संसाधन मंत्री एन. के. प्रेमचंद्रन शामिल हुए थे। तत्कालीन मुख्यमंत्री वी. एस. अच्युतानंदन सहित अनेक लोगों ने उनके अंतिम दर्शन किए और धर्मनिरपेक्ष लोगों ने लव जिहाद की शिकार हुई कमलादास की आत्मा की शांति के लिए दुआएँ माँगी, लेकिन यह किसी ने नहीं कहा कि वह लव जिहाद की शिकार हुई थी।

56

सना भी कमलादास और अमृता प्रीतम के पदचिन्हों पर ही चल रही थी। डिस्को पब में जाना और नाच-गाने में विलीन हो जाना सना की आदत बन चुकी थी। वह भी मेरी ऐसी सहेली थी, जो अपनी बात दोस्तों से शेयर करती रहती थी। वह क्या नाच-गाती थी, उसके विचारों को लेकर उसके लिए एक कविता कलमबद्ध की :

आहट दिल में प्यार की
चाहत एक यार की
बाहों के उसके हार की
में प्रेम दीवानी लाचार सी



सना

पाकिस्तान की बिगड़ी छोरी
में लाहौर की रंगीली गौरी
दिल्ली में दिल लुटाने आई
प्यासी होंठों की लार की
चाहत एक यार की...

जो दिल की बुझाए प्यास
उसकी माँ ही मेरी सास
बिन फेरे होंगे हम तेरे
तड़प दिल के बीमार की
चाहत एक यार की...

दिल की कोयल बोले कूह कूह
प्यार का पपीहा करे पीहू पीहू
रोए दिल अकेला कैसे जिऊँ जिऊँ
मैं रक्कासा गुलनार सी
चाहत एक यार की.....ऐसी थी सना की विचारधारा...

पब में सना अपने दोस्तों के साथ फुल एंज्वाय के साथ-साथ डांस करती थी और वहाँ पर ड्रिंक, हुक्का आदि का माहौल होता था।

57

पब में फुल एंज्वाय करने के बाद एक रात के समय सुनसान सड़क से सना गाड़ी दौड़ाती आ रही थी। अचानक ही झटके से उसने सड़क पर गाड़ी रोक दी थी, क्योंकि सामने से कुछ मनचले लड़के उसकी गाड़ी को ओवरटेक कर रहे थे और गाड़ी से उतरकर सना के पास आए और उसके साथ बदतमीजी करने लगे, “डार्लिंग इतनी रात में अकेले-अकेले।”

“...बास्टर्ड...” सना ने शराबी का प्रतिरोध किया।

“जानेमन आओ बैठो गाड़ी में, एंज्वाय करते हैं।” वे उसे उसकी गाड़ी से बाहर खींचने लगे थे।

“मुझे कहीं नहीं जाना।”

“कैसे नहीं जाओगी, सीधे चलोगी या...”

“मुझे छोड़ दो कमीनों...नहीं तो मैं चिल्लाऊँगी।”

“चिल्लाओ चिल्लाओ...यहाँ सुनसान जगह में तुम्हारी आवाज सुनने वाला कोई नहीं।” शराबी उसकी कमर में हाथ लगा बैठा था, तभी सना

ने उसको एक थप्पड़ जड़ दिया, वे लोग जबर्दस्ती करने लगे थे। स्टर्गल शुरू हुआ और वह चिल्लाई...तभी अचानक पंच आकर एक लड़के को लगा, क्योंकि ताज और चेतन मोटरसाइकिल पर आ पहुँचे थे, जिनके हस्तक्षेप के बाद शराबी सना को छोड़कर फरार हो गए।

“थैंक्स, तुम नहीं आते तो न जाने मेरा क्या होता?” सना ने ताज का धन्यवाद अदा किया।

“तुम्हें मालूम नहीं कि रात में चलना ठीक नहीं। ये क्या पहन रखा है, इससे तो ऐसा होगा ही और लगता है तुमने ड्रिंक्स भी ली है।”

“सॉरी।”

“भैं तुम्हारे विषय में बहुत कुछ जानता हूँ...” ताज ने सना से कहा, “तुम हो तो हीरा, लेकिन फिर भी कीचड़ में पड़ी हो। चलो तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ देता हूँ।”

ताज ने सना को उसकी कार में बैठाया और घर लेकर चल दिया। थोड़ी ही देर में गाड़ी आकर एक घर के बाहर रुकी थी और सना ने मासूमियत से बताया, “एक्सक्यूज मी मेरा घर...” गाड़ी से दोनों उतरे, “आइ एम केजुअल थैंक्स फार लिविंग मी।”

“कोई बात नहीं...” ताज ने कहा, “अब आप अंदर जाइए...मुझे भी जाना है बहुत देर हो गई।”

सना लड़खड़ाते हुए ड्रिंक्स मूड में अंदर चली गई और ताज भी अपने रास्ते हो लिया, पीछे से चेतन की आ रही मोटरसाइकिल पर बैठकर।

58

अगले दिन सना अंदर से आ रही थी, उसके हाथ में फाइल थी...किसी बिजनेस मीटिंग में जाना था उसे...कार का गेट खोलकर उसमें बैठी, तो उसकी नजर गाड़ी में रखे ताज के छोड़े गए नूरे हकीकत यानी सत्यार्थ प्रकाश पर पड़ी और वह बड़बड़ा उठी...“ओह बुक्स...लगता है रात ताज इसी में भूल गया...चलो कहीं मिलेगा तो दे दूँगी...” उसने कार स्टार्ट की और चली गई।

वह घर के हाल में थी और हाथ में सत्यार्थ प्रकाश था, जिसे लेकर अंदर आई, और किताब को ड्राइंग टेबल पर रख दिया। फिर एक रिलेक्स के रियेक्शन के साथ अंदर गई, तभी नौकरानी आ गई, माथे पर बड़ी बिंदी लगी थी जिसके...., “मैम आज तो बहुत देर कर दी, मुझे घर भी जाना है, खाना लगा दूँ क्या?”

पहले से किसी बात को लेकर परेशान थी वह, इसलिए सना ने गुस्से में कहा, “आउट...गेटआउट...जाओ घर...अगर तुम्हें कुछ समय ज़्यादा हो गया तो क्या आसमान टूट पड़ा...तुम्हें सैलरी नहीं देती क्या?”

“नहीं मैम ऐसी बात नहीं, लेकिन बच्चे...”

“तो तू ही बच्चे वाली है क्या? हमेशा बच्चे-बच्चे करती रहती है।” तभी सना की नजर उसकी बड़ी बिंदी पर गई, फिर उसकी दृष्टि टेबल पर पड़े सत्यार्थ प्रकाश पर पड़ी, जिस पर स्वामी दयानंद का चित्र भी अंकित था और फिर अचानक उसे ताज की बात याद हो आई, ‘तुम हो तो हीरा लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।’

“ओह सॉरी,” सना का मूड अचानक ही बदल गया था और वह नौकरानी से बोली, “मैं बाद में खा लूँगी, तुम जाओ बच्चे इंतजार कर रहे होंगे।” नौकरानी मुस्कराती हुई चली गई और सना उठकर बेडरूम की तरफ जा पहुँची। टेबल पर शराब की बोतल रखी थी। सना बेडरूम से कपड़े चेंज करके हॉल में आई और शराब की बोतल के पास आकर पैग बनाया और एक पैग का शिप लेने के बाद पैग वाला गिलास लेकर ड्राइंग टेबल पर आकर बैठ गई, सिगरेट को लाइटर से जलाने के बाद एक कश लिया, तभी टेबल पर रखी किताब सत्यार्थ प्रकाश पर नजर पड़ते ही उसे पुनः ताज की बात याद आ गई, उसकी अंतर आत्मा ने पुकारा, ‘यह तुम क्या कर रही हो....तुम हो तो हीरा, लेकिन फिर भी कीचड़ में पड़ी हो।’ उसने चौंकते हुए सिगरेट को बुझा दिया और गिलास को फेंक दिया...और सत्यार्थ प्रकाश को लेकर अंदर चली गई। सना किताब लेकर कमरे में आई, किताब को बेड की बगल की टेबल पर रखते हुए सोचने लगी थी, ‘...आज तो मूड खराब हो गया....एक तो नौकरानी और ऊपर से ये...’

उसकी दृष्टि सत्यार्थ प्रकाश पर फोकस हो गई थी, 'लगता है नींद की गोली लेनी पड़ेगी...' पास की ड्रेसिंग टेबल की दराज से नींद की कुछ गोलियाँ निकाली और छोटी सी टेबल पर रखे पानी के गिलास को उठाया, गोलियाँ लेने के लिए, जैसे ही गोली लेने को हुई तो उसकी दृष्टि सत्यार्थ प्रकाश पर फिर पड़ी और उसके कानों में फिर से जैसे ताज की वही आवाज गूँज उठी थी, 'तुम हो तो हीरा, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो।'

सना भ्रम से उत्पन्न वाणी को सुनकर मुस्कराई और गोली डस्टबीन में डाल दी थी उसने और सत्यार्थ प्रकाश उठाकर लेटकर पढ़ने लगी और पढ़ते-पढ़ते कब नींद आ गई, उसे पता ही नहीं चला।

60

सुबह हो चुकी थी। दूर कहीं मंदिर से भजन की प्रिय आवाज आ रही थी, उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

सना के बेडरूम पर खिड़की से धूप पड़ रही थी, चिड़ियाओं के चहचहाने की आवाज आ रही थी, तभी घंटी बजने की आवाज पर सना बैठ उठी, "हूँ...तुम हो तो हीरा, लेकिन कीचड़ में पड़ी हो..." खुद ही बड़बड़ाई और फिर सत्यार्थ प्रकाश को देखकर मुस्करा उठी थी, "थैंक्स गॉड!" नाइटी में ही किताब को हाथ में लेकर कमरे से बाहर निकली और दरवाजे की चिटकनी खोली, तो सामने सनी को पाया, "गुड मोर्निंग!"

"वैरी गुड मोर्निंग, चमत्कार!" सना ने कहा, "आज ईद का चाँद सुबह-सुबह निकल आया। वैंलकम! आइए!"

"आपके लिए बहुत बड़ा ऑफर लेकर आया हूँ।" पीछे-पीछे चलता हुआ गेस्टरूम में चेयर पर बैठ गया था, उसके पीछे-पीछे ही काम करने वाली बाई भी प्रवेश कर गई थी। तो सना ने आते ही नौकरानी को हुक्म सुना दिया, "शांता पहले साहब के लिए चाय लेकर आओ।"

"जी मैम सा'ब।" कहकर शांता किचिन में चली गई।

"हॉलीवुड के मशहूर डायरेक्टर टॉम अपनी नई फिल्म में फैशन

डिजाइनिंग के काम का जिम्मा आपको सौंपना चाहते हैं।” सनी ने अपनी बात रखी थी।

“Thanx Suny...But वैरी वैरी सॉरी।”

“Why.”

“अपने तरह की जिंदगी बहुत जी ली, अब अपने आपको एक अलग दुनिया में जीना चाहती हूँ।”

“आपकी तबियत तो ठीक है?” सनी ने पूछ लिया, तभी नौकरानी चाय लेकर आई और टेबल पर रख दी थी, फिर सनी और सना दोनों चाय की चुस्की लेते हुए बातें आगे बढ़ाने लगे थे।

“क्यों मेरी तबियत को क्या हुआ!” सना ने जवाब दिया।

“यह अचानक क्या भूत सवार हो गया...लोग सुनेंगे तो जानती हो क्या कहेंगे?”

“कहने दो मैंने रातभर ‘सत्यार्थ प्रकाश’ पढ़ा है, जिसने मेरी आँखें खोल दी...हम क्या थे और क्या हो गये...मुझे पता चल गया कि जीवन की सचाई क्या है? हम सब अंधेरे में भटक रहे हैं, पर अब अंधेरा नहीं सहा जाता, अब उजाले की ओर जाना होगा।”

61

“ठीक है माँ मैं घर जरूर आऊँगा।” ताज ने फोन पर बात करते हुए सुबह-सुबह ही जवाब दिया था। तभी चाय लेकर मैं उनके निकट आ पहुँची थी, “किसका फोन है...किससे बात कर रहे हो? जब देखो तब फोन पर ही लग जाते हो...यह लो चाय पिओ..” मैंने चाय रख दी थी।

“घर से माँ का फोन था।” ताज ने जवाब दिया।

“क्या कह रही हैं मेरी सास!”

“मुझे गाँव बुलाया है।”

“नहीं तुम गाँव नहीं जाओगे।” मैंने आदेश सुना दिया।

“क्यों?” मिया जी की प्रतिक्रिया आई।

“अगर तुम गए और वापस न आए तो...”

“लेकिन माँ बहुत बीमार है।”

“तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।”

“यह संभव नहीं है।”

“क्यों?”

“मेरे घर वाले मुस्लिम कौम से नफरत करते हैं।”

“तो मैं हिन्दू नाम रखकर चल पड़ूँगी जैसे तुम मेरे घर वालों को धोखा दे रहे हो वैसे ही मैं भी धोखा दूँगी...हिसाब-किताब बराबर हो जाएगा, है ना।”

“अच्छा तो फिर तो मुझे तुम्हारा नाम बदलना होगा।”

“चलो यह अधिकार भी तुम्हें ही देती हूँ, तुम दुनिया के पहले मर्द होंगे जिसने अपनी औरत का नामकरण किया हो।”

“तुम बहुत अच्छी हो...इतना सब होने पर भी तुम्हारी बातें बहुत मीठी होती हैं, कम बोलती हो, इसलिए तुम्हारा नाम मधु रख दूँ तो कैसा रहेगा।”

“मुझे मंजूर है,... लेकिन संभलकर रहना मधु मक्खी का डंक बहुत दर्दनाक होता है।”

“अच्छा तो यह बात है, मधुमक्खी के छत्ते में हाथ डालने से पहले मुझे धुँआ उठाना आता है।” और यह कहते हुए ताज मुझको हग कर बैठा, मैंने छुड़ाने की कोशिश की।

62

हम आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस से दिल्ली पहुँचे और वहाँ से टैक्सी किराए पर ली, ताज के घर जाने के लिए...घर के बाहर ताज यानी जिसका घर में बचपन का नाम नील था, अब मैं आगे उन्हें इसी नाम से लिखूँगी, हमारी टैक्सी आकर घर रुकी, उसमें से नील और मैं उतरे और खड़े हो गए। ताज यानी नील का पिता लोगों के साथ हुक्का पी रहा था, माँ आँगन में पशुओं को चारा डाल रही थी। बड़ा भाई मशीन से चारा काट रहा था ...सभी लोगों ने टैक्सी को देखकर उसकी तरफ देखा...माँ...भाई सब टैक्सी के पास आए...नील और मैंने आगे बढ़कर पिताजी के पैर छूए, पिताजी ने हमें आशीर्वाद दिया, “खुश रहो....बेटा अचानक...”

“हाँ...” नील ने जवाब दिया।

सासू माँ बात काटते हुए बीच में बोली, “आते ही शुरू हो गए.. सारी बातें बाहर ही करोगे क्या?... चल बेटा अंदर चल बहुत दूर से आया है, थका हारा होगा।” और हम दोनों को लेकर अंदर चली गई।

माँ नील और मुझको लेकर बाहर से आँगन में आई और आवाज देते हुए कहा, “पारो...देख तेरा देवर आया है शहर से बहू लेकर...कुछ मीठा व पानी ला और बेटी...” यह कहते हुए हमें चारपाई पर बैठाया, लेकिन मैं बाजू में खड़ी रही और माँ खुद भी बैठ गई, तभी ननंद दौड़ते हुए आई, “भाई...बहुत दिनों बाद और साथ में चाँद भी...” उसके हाथ में पीढा था और उसे रखते हुए मुझको बैठा दिया। फिर मेरा घूँघट उठाते हुए बोली, “वाह क्या चाँद है...एकदम ईद का चाँद है मेरी भाभी।” यह कहते हुए मेरे करीब आई, तभी पारो अंदर से मीठा और पानी लेकर आ पहुँची। लोटे से पानी का गिलास भरकर देते हुए बोली, “सही कह रही हो मेरी प्यारी ननंद...लाखों में एक है मेरी देवरानी...क्या नाम है इस फूल का...”

“मधु।” मैंने अपना नाम खुद ही बता दिया था।

नील ने गुड़ खाकर पानी पी लिया था, मैं भी पानी की दो घूँट भर चुकी थी।

63

बचपन के सब साथी बिछुड़ गए थे। वसंता हिन्दू से मुस्लिम बनकर जावेद संग जा चुकी थी, मैं दिल्ली एनसीआर आ गई थी और सना एक प्रसिद्ध योग गुरु के आश्रम में हरिद्वार रहने लगी थी। जिस आश्रम में वह रह रही थी, उस आश्रम में नील भी एक दिन गए थे। सना योग मुद्रा में बैठी हुई थी, और उसकी अम्मी उसे समझा रही थी, “बेटा यह तुम्हें क्या हो गया है, घर-गृहस्थी बसाने की उम्र में दीन ईमान छोड़कर हिन्दू होने का डिजीजन।”

“अम्मी मैं तो सत्य को पाना चाहती हूँ।”

“सत्य को! But बेटा सत्य को पाने के लिए तो सत्यमय होना पड़ता है।”

“हाँ माँम में जानती हूँ, सत्यमय कैसे होना है यह मैंने स्वामी दयानंद के नूरे हकीकत से जान लिया है, कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में हमेशा उद्यत रहना चाहिए।”

“तेरे जो जी में आए कर, ला एक सत्यार्थ प्रकाश मुझे भी दे दे, मैं पढ़कर देखना चाहती हूँ कि इसमें ऐसा क्या सत्य छिपा है जो मेरी बच्ची काफिर हो गई... आज तुम इतनी बड़ी हो गई हो कि मुझे ही उपदेश दे रही हो। खुदा तुम्हारी जीवन यात्रा सफल करे, Journey's end with Lover's meeting.

64

एक दिन मैं गाँव के चूल्हे पर चाय छान रही थी और मेरी ननंद भी साथ में थी ही, तभी ननंद की नजर मेरे हाथ के नाखूनों पर पड़ी, जो मेहंदी से रचे हुए थे और ननंद एकदम चीख उठी, “अम्मा...जल्दी इधर आओ...देखो अनर्थ हो गया।”



मेरी ननंद और जेठानी पारो

मैं भौचक्क सी रह गई थी, तभी माँ आते हुए बोली, “क्या अनर्थ हो गया बेटी।”

“अपनी इस नई नवेली के हाथों के नाखून तो देखो..” मेरा हाथ पकड़कर दिखाने लगी थी ननंद, “मेहंदी लगी है...यह तो मुसलमानी है।”

“बहू क्या है ये...” सास ने पूछा, “बता तू कौन है?”

मैं कुछ नहीं बोली, तभी जेठानी भी आ गई और आते ही उसने तो और भी खुलासा कर दिया, “मुसलमानी है तू....हमारे यहाँ मुसलमानी के



मेरी सास, सबसे बड़ी ननंद, सबसे बड़ी जेठानी एवं जेठानी के बच्चे और सास की भतीजी

हाथ का छुआ तक पानी नहीं पीते, खाना तो दूर यह तो मेरा देवर था, तुझे पता नहीं कहाँ से उठा लाया। वरना मुसलमानों की तो यहाँ परछायी से भी दूर रहते हैं।”

“क्या मुसलमानी इनसान नहीं होती?” एक पराजित विजेता बनने के लिए बस यही हल्का सा प्रश्न पूछा था मैंने।

“नहीं...” सास ने कहा, यानी उनकी दृष्टि में मुस्लिम इनसान नहीं थे।

“तो क्या होती है?”

“म्लेच्छ।” अब जवाब ननंद ने दिया था।

मेरी आँखें नीर से भर गई और उनसे आँसू टपकने लगे थे। फिर सास ने पूछा, “सच-सच बता मधु तेरा सही नाम क्या है?”

आँखों में आँसू के साथ सहमी हुई धीरे से मैं बोली, “फर्रु... और पूरा नाम फरहाना ताज।”

65

नील छत के ऊपर बैठा हुआ ‘सत्यार्थ प्रकाश’ पढ़ रहा था, तभी पारो आई और नील से बोली, “देवर....क्या तूझे मुसलमानी ही मिली थी, उठाकर

लाने के लिए, मुझे कह दिया होता, मैं अपने मामा की बेटी से तेरी शादी करा देती, इससे लाखों गुणा सुंदर है।”

नील सिर नीचे किए हुए था, फिर ऊपर करते हुए बोला, “फरू भी तो लाखों में एक है।”

“अब तो बोलोगे ही, गले में घंटी जो यह बांध ली...।”

“तो क्या तेरे को बांध देता।”

“मैंने मना कब किया था, मुझे ही बांध देता तो कम-से-कम घर की बात घर में ही रहती, अब तो खानदान की नाक कटा ही दी, जो इसे यहाँ लाया, वहीं रखता...देखना आगे-आगे अब होगा क्या?” चली गई और नील सिर नीचे किए हुए रहा।



उस दौरान मैं

66

एक दिन सासू माँ गोबर उठा रही थी और आवाज देते हुए मुझको कहा, “मधु...पलड़ा उठा ला?”

“किस लिए माँ जी!”

“गोबर उठाना है।”

अब पलड़ा क्या होता है, मैं नहीं जानती थी, और फिर पतीली देखकर सोची कि इसे ही पलड़ा कहते होंगे, इसलिए उसे उठा लाई और जब सास को देने लगी तो उसका पारा सातवें आसमान पर था, “कंचनी भैरोई इस पतीली को तेरे सिर में दे मारूँ क्या?” गुस्से से डाँटते हुए बोली, “जा भाग...सूरी सी कोई काम सलीके से करती नहीं...तेरी माँ राण्ड ने कुछ सिखाया है कि नहीं...जा भाग।” मैं रोती हुई अंदर चली गई।

67

रात का समय था...सर्दी शुरू हो गई थी। रिजाई में सिमटी हुई मैं चारपाई पर सोई हुई थी, नील आया और मुझे टच किया तो अचानक ही चीख

उठी...अचानक ही सास की आवाज आई, ‘...क्या हुआ बहू?’ फिर मैंने नील को देखा और नील ने चुप रहने का इशारा किया, फिर भी मैंने माँ के जबाब में कहा, “..कुछ नहीं माँ जी बुरा सपना था...”

“सो जा चुपचाप...अधिक सपने मत देख...”

नील ने मुझे अपनी बाहों में समेट लिया था, लेकिन मैंने अपने को छुड़ाते हुए पूछा, “सुनो जी! कंचनी भैरोई का क्या मतलब है?”

“ऐसा किसी ने कहा है क्या?” उन्होंने पूछा।

“हाँ माँ ने कहा है।”

“ओह! इसका मतलब है मेरी भोली बहू।” उस समय मुझे इस बात का सही अर्थ पता नहीं था, जो महीनों बाद चला, तब मुझे उस दिन की याद आई, क्योंकि नील ने जवाब देते हुए चेहरे को घुमाते हुए शायद मन ही मन यही सही अर्थ मंथन किया होगा, ‘इसको कैसे समझाऊँ कि इसका मतलब.... भाइयों की लाश पर रोने वाली नशेड़ी औरत होता है’...फिर अपने चेहरे को मेरी ओर टर्न करते हुए कहा था, “फरू तू बहुत भोली है...” और फिर...मैं उनके सीने से लिपटकर सो गई...लेकिन शारीरिक संबंध बनाने से दूर रही, क्योंकि उन्होंने इस्लाम नहीं कबूला था।

68

एक दिन ननंद और मेरी सासू माँ खाना खा रहे थे, जेठानी पारो परोस रही थी, मुझे भी भूख लगी थी, इसलिए मैं भी थाली लेकर ननंद के बाजू में बैठ गई और जेठानी से बोली, “दीदी मुझे भी खाना दे दो, बहुत भूख लगी है।”

“तेरी इतनी हिम्मत कि तू हमारे साथ बैठकर खाना खाएगी...” ननंद ने मेरी थाली उठाकर फेंक दी और कान पकड़कर ऐंठ दिया था, “चल उठ...उधर बैठ के खा...बेसूरी कहीं की!”

अब फूट-फूटकर रोने के सिवाय मेरे सामने चारा ही क्या था, मेरी तो किस्मत ही फूट गई थी...लेकिन फिर मैंने ईश्वर से मन ही मन यही प्रार्थना की कि या अल्लाह! मुझे धैर्य दो और अभी दो, क्योंकि धैर्यवान

व्यक्ति ही समय पर विजय पाता है और असंयमी आदमी अपने स्वभाव के कारण अपनी विरासत लुटा बैठता है। नील से ही सीखा था कि जिसने धैर्य रखना सीख लिया, उसने दुनिया जीत ली। वे मेरे से शत्रु की तरह व्यवहार करते थे, लेकिन मैं नम्रता से काम लेती। मेरी दृष्टि में नम्रता सर्वोत्तम गुण है, क्योंकि यही हमेशा कठोरता से बना रहता है और दूसरों को भी अपना बना सकता है।



मेरा चित्र

69

परंतु उस दिन तो मेरा धैर्य और नम्रता दोनों ही जवाब दे गए थे। मेरा ससुर खाट पर हुक्का पी रहा था, एक-दो आदमी और बारी बारी से हुक्के की घूंट भर रहे थे, मैं रोती हुई आई और उन बड़े लोगों के सामने पर पहली बार घूँघट उठाते हुए बोली, “पिताजी मुझे इंसाफ चाहिए?”

“कैसा इंसाफ बेटी।” एक बुजुर्ग ने पूछा।

“आपके बेटे ने जब मेरे साथ शादी की है,” मैंने कहा, “तो अब मैं मुसलमानी कहाँ से रह गई, मुझे यहाँ हिन्दू समाज में इतना भी हक नहीं कि मैं घर के लोगों के साथ बैठकर खाना खा सकूँ।”

“तो इसमें गलत क्या है?” एक तीसरे अधेड़ सज्जन ने कहा। मुझे वह व्यक्ति बिल्कुल नंग प्रतीत हुआ। वास्तव में जो कपड़े नहीं पहनता वह नंगा नहीं होता, वरन जो अपने विवेक और ज्ञान का परित्याग कर देता है वही नंगा होता है। नंगा होना केवल एक कपड़े के टुकड़े के लिए नहीं है, वरन् वह इंसान के गौरव, गर्व और प्रतिष्ठा की कमी है। इसके साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर में कमी है।

“आप भी उन्हीं का पक्ष ले रहे हो?” मैंने आरोप लगाया। वैसे आरोप लगाना आसान है, लेकिन सिद्ध करना बड़ा कठिन होता है।

“इसमें पक्ष की क्या बात है? म्लेच्छ औरत...तेरी औकात हमारे घर में एक नौकरानी कितनी भी नहीं...” उनमें से एक ने मुझे डाँट दिया। मुझे

डॉटना क्या उनकी कायरता की निशानी नहीं थी। एक औरत तो घर का हृदय होती है, औरतों के अस्तित्व के कारण ही सारी दुनिया में प्रेम और शांति स्थापित होती है, लेकिन यदि औरत अपनी पर उतर आए तो वह दुनिया के विनाश का कारण भी बन जाती है। रामायण महाभारत से लेकर मुगल काल तक भारत में आर्य सभ्यता के पतन के पीछे औरत ही तो थी। लेकिन पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होती, मेरे सगे ससुर ऐसे नहीं थे, जैसे उनके पास बैठे अन्य किसान थे। वे तो अब तक शांत से ही थे। बस पहले एक ही प्रश्न पूछा था कि क्या हुआ? मेरी आँखों से आँसू टपक रहे थे, उनमें से मेरे सगे ससुर ने ही केवल मेरा पक्ष लिया और बोले, “बेटी तुम्हें सम्मान के लिए जीना है तो अपने अधिकार की लड़ाई खुद लड़नी होगी? मनुष्य के साथ प्रेम करना ईश्वरीय आदेश है, घृणा करना तो पाप है, अस्पृश्यता तो मूर्ख लोगों का पागलपन है। उठो, जागो और अपने अधिकारों की लड़ाई खुद लड़ो, क्योंकि कोई भी क्रांति हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से नहीं आती।”

“वो कैसे?” मैंने पूछा।

“बेटी! तू तो जानती है कि ये सब गाँव के अनपढ़ गँवार हैं, यहाँ औरत मर्द सब के सब ढेड़ हैं, जब बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि लठ मार रहे हों और सदियों पुरानी छुआछूत, भेदभाव, जातिवाद, धर्म-मजहब के आडम्बरों में अभी तक जकड़े हुए हैं...जिसका परिणाम क्या हुआ इतिहास साक्षी है...इसी कारण न जाने कितने ही लोगों ने अपना धर्म परिवर्तन कर लिया।”

“क्या मतलब पिताजी?”

“बेटी जब-जब लोगों ने धर्म बदला है, तब-तब उनसे उनकी नागरिकता छिन गई है। सिंध में हिन्दू मुसलमान बने तो वहाँ पाकिस्तान बन गया और बंगाल में धर्म छोड़ विधर्मी बने तो वहाँ बंगलादेश बन गया ...वहाँ भारतीय नागरिकता रही कहाँ...अब तू बता तुझे भारतीय नागरिकता चाहिए या किसी दूसरे देश की...अब यह फैसला तुझे करना है...”

“जी पिताजी...” निरुत्तर होकर मैं चली गई। ससुर की बातों से मैं समझ चुकी थी कि अरुणोदय के पूर्व सदैव ही सघन अंधकार होता है और

एक नए दिन का उदय होता है। अपने जीवन में नया सवेरा स्वयं ही उदय करने के लिए मुझे ही अपने गृह के लोगों की गति और मति ठीक करनी होगी। अब मुझे ही सोचना था कैसे करना है, किस तरह सास, जेठानी और ननंद की छाती पर मूँग दलनी है।

70

रात का समय था। पटसन की खाट पर मैं अपनी सास के साथ बैठी थी, जो मुझे नसीहतें दे रही थी, “बहू! अगर तेरी जात भी हमारी होती तो ...तू सभी की आँखों का तारा होती, वैसे तुझे छोड़ दे तो मेरे बेटे की शादी तो हो ही जाएगी।”

“छुड़वा दीजिए,” मैं बोली थी, क्योंकि मैं जानती थी कि पुरुषों की त्रुटियों में उनकी स्वार्थपरता निहित रहती है, जबकि नारियों की त्रुटियों के मूल में मात्र उनकी भूल...मेरी सास भी यहाँ भूल कर रही थी, इसलिए मैंने आगे कहा, “बस रहने के लिए एक कमरा और जीने के लिए हर साल अनाज मुझे दीजिए, मैं तलाक के बाद कहीं नहीं जाने की... आपकी छाती पर ही मूँग दलती रहूँगी। मैं नहीं चाहती कि दुनिया के किसी पति-पत्नी में तलाक हो, संबंध विच्छेद हो, मैं तो हमेशा यही चाहती हूँ कि पति और पत्नी को एक परिवार के रूप में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि फूलों के बगीचे में एक ही रंग के पुष्प हों, तो उसकी सुंदरता में क्या धरा है, उसकी शोभा तो तभी है, जब वहाँ अनेक नस्ल के विविध रंग और रूप के फूल होंगे, कुछ कोमल डालियों पर खिले और कुछ काँटों संग महकते।” मेरा जवाब था।

“अपना दर्शन अपने पास रख, तेरा चूंडा पकड़ कै घर से निकाल दूँगी।” सास की आँखें भी लाल-पीली हो गई थी।

“सबको अदालत में घसीट दूँगी, क्योंकि यदि मैं तुम लोगों से न्याय करूँगी तो मेरे पास तुमसे प्रेम करने का समय नहीं होगा।” मैंने धमकी दी।

“तो तू कोर्ट-कचहरी में घसीटेगी हमें!”

“मैंने कहाँ कहा ऐसा...आपने कहा तो मैंने भी कह दिया।” मैं सहज

हो गई थी अब, क्योंकि बात आगे बढ़ाना मेरा मकसद था ही नहीं।

“अच्छा! मेरे बेटे ने जिस तरीके से विवाह किया था उसी से...”

“तेरे बेटे ने तो निकाह के अलावा आर्य समाज में सात फेरे भी लिए हैं....सारे रीति-रिवाज के साथ...सासू माँ...हिन्दू कोड बिल जानती हैं या मैं बता दूँ।” फिर मैं सहज हो गई और आगे कहा, “आपको लोगों से प्रेम करना चाहिए और प्रेम की शुरुआत घर से होती है, आप जब भी किसी से मिलें, तो मुस्करा दें वही ईश्वर की सच्ची उपासना होती है।”

“चुप बक-बक मत कर...आई रीति-रिवाज-प्रेम-व्रेम समझाने... कल करवाचौथ है।” पहली बार एक नया शब्द सुना था मैंने करवाचौथ।

“करवाचौथ क्या होता है माँ जी।” मैंने पूछ लिया था।

“तुझे एक दिन का रोजा रखना है।”

“वह किसलिए?”

“अपने पति की लंबी उम्र के लिए।”

“मेरे ऐसा करने से उनकी उम्र लंबी हो जाएगी क्या?”

“जबान मत लड़ा जैसा कहती हूँ वैसा करना...और हाँ टिककी बिंदी लगाया कर...माँग भी भरा कर...जैसे और औरतें रहती हैं..... बिन सिंदूर के तू ऐसे लगती है, जैसे विधवा....” उठकर सासू माँ चली गई थी और मुझे लगा कि अब ये लोग मुझे अवश्य ही अपना लेंगे। कुछ देर बाद नील घर आए तो मैंने उनसे करवाचौथ कैसे रखा जाता है उस पर चर्चा की, तो उन्होंने बताया कि दिन भर उपवास के बाद रात को चाँद देखकर उपवास पूरा किया जाता है।

“चाँद देखकर, यह तो एक दिन का इस्लामिक रोजा ही हुआ, इसमें तुम्हारी संस्कृति का अंश कहाँ है?” मैंने बेमतलब का तर्क किया।

“यह मुझे नहीं पता।”

“लेकिन मैं यहाँ चाँद देखकर करवाचौथ का व्रत नहीं खोलूँगी, मुझे तुम्हारी संस्कृति को सीखना है, अपनी वैदिक परम्परा बताओ कि व्रत रखना चाहिए या नहीं और रखना चाहिए तो कैसे और क्यों?”

“देखो हमारी संस्कृति राष्ट्र और वेदों से जुड़ी है, जिनमें इन सब बातों का स्थान नहीं।”

“यह बात माँ को क्यों नहीं समझाते और राष्ट्र, वेद व हिन्दू धर्म का आपस में क्या संबंध है?”

“वेद कहते हैं मनुर्भव यानी मनुष्य बनो, जबकि तुम्हारी कुरान कहती है मुस्लिम बनो, बाइबिल कहती है इसाई बनो, इसलिए हमारा धर्म मनुष्यता है, कोई पंथ या मजहब नहीं और वेदों में राष्ट्र के लिए बलिदान देने की नसीहत दी गई, क्योंकि जिस देश में हम रहते हैं, उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है, बस यही संबंध है इन सबमें।”

उन्होंने तो कुछ नहीं समझाया, लेकिन मैं समझ चुकी थी और तय कर चुकी थी कि मुझे अपना उपवास कैसे पूरा करना है। मेरी सुसराल के घर से कुछ ही दूर माठे नामक बनिया की टैक्सटाइल फैक्ट्री थी, जिस पर तिरंगा ध्वज लगा रहता था...मैंने चंद्रमा निकलने पर पहले तिरंगे ध्वज को देखा, जो उसी दिशा में था और बाद में चंद्रमा को छलनी से देखने हुए अपने सुहाग का चेहरा...और मैंने इस घटना को लेकर यह गीत लिखा:

जब तक तिरंगा निशानी रहे
सुहागन हम हिन्दुआनी रहें
सब हों सुखी कायनात में
खुशियों भरी जिंदगानी रहे

मैं सावित्री सत्यवान तेरी
मीरा हूं मैं श्याम तेरी
मैं ही सीता राम तेरी
अमर हमारी कहानी रहे
सुहागन हम हिन्दुआनी रहें

तुम ही मेरी मति हो
तुम ही मेरी गति हो
तुम ही मेरी आत्मा
तुम ही प्राणपति हो
तुमसे ही जीवन मेरा
तुमसे वतन रूहानी रहे
सुहागन हम हिन्दुआनी रहें

जब हो हमरी कोख हरी
तब राणा से हो गोद भरी
जन्में वीर शिवाजी नर ही
संग गार्गी सी ज्ञानी रहे
सुहागन हम हिन्दुआनी रहें

पन्ना बन पुत्र बलिदान करें
रणचंडी बन हैरान करें
शत्रु की भूमि श्मशान करें
मादरे वतन रूहानी रहे
सुहागन हम हिन्दुआनी रहें।

करवाचौथ का व्रत रखना गलत है या सही मैं नहीं जानती। इसका कोई शास्त्रीय प्रमाण भी मैंने नहीं पढ़ा, लेकिन प्रथम उपवास ने मेरी जिंदगी बदल दी और मुझे पहली बार अहसास दिलाया कि मैं किसी की पत्नी भी हूँ, जो मेरे लिए पूरी तरह समर्पित है, समाज से टक्कर ले रहा है, उसकी जंग में मुझे भी साथ देना चाहिए और मैं उस रात उनके प्रति स्वेच्छा से पूरी तरह समर्पित हो गई, जीवन में पहली बार ऐसा सुख प्राप्त किया, जिससे मैं अनजान थी। अब मेरी छोटी सी प्यारी सी गृहस्थी चहक-महक उठी थी। अब मुझे किसी के तानों या उलाहनों की कोई परवाह नहीं रही, मुझे अपने साजन की बेपनाह मुहब्बत मिल रही थी, इसलिए बस दिन ढलते ही उनका इंतजार करने लगती कि वे कब आएँगे ...ऐसे ही एक के बाद दूसरा फिर तीसरा इस तरह महीने दर महीने गुजरने लगे और उन्होंने वहीं गाँव के नजदीक एक बड़े शहर में नौकरी ज्वाइन कर ली। भूल गई मैं मायका, क्योंकि घर-गृहस्थी का समझ चुकी थी जायका, मैं समझ चुकी थी कि प्रेम का मतलब पाना नहीं, केवल देना ही होता है। प्यार हर मौसम में पकने वाला फल होता है और हर व्यक्ति की पहुँच के अंदर भी है। केवल वासना की भूख मिटाना ही प्रेम नहीं है, मीठी बातें करना, चेहरे पर मुस्कराहट लाना, समर्पण और दयाभाव दिखाना ही वास्तविक प्रेम होता है। प्रेम का फल शांति, एकता और समर्पण है।

हथोड़ा कभी-कभी अपना निशाना चूक भी जाता है, लेकिन फूलों का गुलदस्ता कभी नहीं चूकता...और अब प्रेम के पुष्पों की सुगंध से दिन कितनी तेजी से गुजर रहे थे, मुझे तो पता ही नहीं चल रहा था। रक्षा बंधन का दिन था, नील की बहन अपने दोनों भाई राम एव नील को राखी बांध रही थी।

“भाभी अगर तुम हिन्दू होती तो आज तुम भी अपने भाई को टीका लगाती...” ननंद ने कहा, राखी बांधी, और फिर कटाक्ष किया, “परंतु तुम्हें क्या पता रीत-भात का।” ननंद ताने मारती रहती थी, यह तो उसका स्वभाव था, लेकिन वह नहीं जानती थी कि आलोचना वृक्ष की शाखा से प्रायः फूल और काँटों दोनों को ही अलग कर देती है।

“मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो तुम लोग बात-बात पर मुझे नीचा दिखाने की कोशिश करते हो।”

“यह लो हमने कहाँ नीचा दिखाया?”

“फिर रीतभात का ताना क्यों? यदि मेरे भाई को पता होता कि मेरी ससुराल हिन्दुओं में है, तो वे रीतभात निभाने जरूर आ जाते।” मैंने उनसे कहा।

“हाँ...हाँ...उन दडियल मुल्लाओं को भी बुलाओ...हमारी नाक पूरी तरह कटवा दो...तुम्हें क्या फर्क पड़ता है।”

लेकिन किस्मत का खेल देखिए तभी मेरा छोटा भाई अली आ गया था। कुछ दिन पहले उसने फोन पर घर पता लिया था, मोहल्ला और मकान नंबर और गाँव... मैंने बता दिया था।

“अस्सलाम वालेकुम।” अली आते हुए बोला।

“वारेकुम अस्सलाम....” फिर ननंद की ओर मुखातिब होकर मैंने अपनी भड़ास निकाल ली, “...यह लो आ गया मेरा भाई...” ननंद के हाथ से थाली ले ली थी और अपने भाई को टीका लगाया और मिठाई खिलाकर राखी बांध दी।

“यह सब क्या है फर्रू...हिन्दुओं वाले रीति-रिवाज।” अली ने पूछा।

“भाई मेरे ससुराल वाले हिन्दू ही हैं...” मैंने सच-सच उगल दिया

था, अब छिपाने को बचा ही क्या था? फिर सचाई भला छिपती है क्या? सचाई को यदि पत्थरों की गुफा में भी बंद कर दो वह तो उसे भी तोड़कर स्वतः ही बाहर आ जाती है।

“ओह! तो ताज हिन्दू है!” उसको सदमा सा लगा था।

“हाँ...”

उसकी आँखें फटी की फटी रह गई और वह मोबाइल निकालकर नंबर मिलाकर अम्मी से बात करने लगा था,
“....हैलो अम्मी...”

“बोलो बेटा, पहुँच गए सही सलामत, सब खैरियत तो है?” उधर से अम्मी का जवाब आया।

“अम्मी...ताज हिन्दू है...अब्बू ने एक काफ़िर खानदान में अपनी बेटी दी है।”

“तुम क्या बोलते जी, क्या यह सही है...फोन फर्सू को दो।” अम्मी ने कहा और अली ने मुझे फोन दे दिया था, “...ले फर्सू अम्मी बात करना चाहती है।”

“फर्सू, अली ने जो कुछ कहा वह सही है।” अम्मी ने कड़क आवाज में मुझसे पूछा था।

“जी अम्मी....” मेरे इतना कहते ही अली ने मेरे हाथ से मोबाइल फोन ले लिया।

“अली, फर्सू को अभी के अभीच साथ लेकर आओ।” अम्मी ने फरमान जारी करते हुए फोन काट दिया था।

इसके बाद अली मुझसे बोला, “फर्सू तुझे अभी के अभीच साथ चलना है, अब इस घर में एक पल भी रहना कुफ़्र है।”

“मगर भैया?” परंतु अब वह मेरी बात कहाँ सुनने वाला था। अली ने अपना बैग उठाया और मेरा हाथ पकड़ा...“चल अभी...” मैं छुड़ाने की कोशिश करती रही, लेकिन वह बाहर की ओर खींचता रहा....नील उसे रोकने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन नील का भाई, भाभी, नील की माँ सभी



मेरी अम्मी

लोगों ने नील को पकड़ लिया और थाम से बांध दिया, जिससे नील बेबस हो गया। अब मैं समझी कि नील को छोड़कर घर के सभी लोग मुझसे छुटकारा ही पाना चाहते थे। अली मुझे ले चलने लगा....नील बेबस हो गया और मैं उसकी तरफ मुड़-मुड़कर देखती रही...मेरी छोटी सी गृहस्थी मजहबी कट्टरता के तूफान से तहस-नहस हो रही थी।

72

हम लोग दिल्ली आए और वहाँ जनरल का टिकट लिया। लेकिन आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस की आरक्षित बोगी में बैठे और पैनल्टी देकर हमने सीट हासिल की। 27 घंटे बाद मैं अपना सबकुछ लुटा-पिटाकर अपने अम्मी-अब्बू के सामने मुजरिम की भाँति हाजिर थी। अब्बू सफाई दे रहे थे, “मैंने ऐसा क्या कर दिया, जो खानदान की नाक कट गई।”

“अपनी सबसे लाड़ली बेटी की शादी एक काफ़िर के साथ कर दी।” युसूफ ने कहा।

“सईद, बाजार से सब्जी भी खरीदते हैं तो सौ बार देखते हैं, लेकिन तुमने तो बेटी का निकाह कर दिया और उसके घर तक जाकर देखा नहीं कि किस खानदान का है?” अम्मी भी अब्बू पर ही पिल रही थी।

“अली फोन दे...” अब्बू ने अली से फोन लेकर नंबर लगाया था।”

73

पीपल के पेड़ के नीचे उदास बैठा हुआ था नील, तभी उसका फोन बजा। उसने फोन उठाया उधर से आवाज आई थी अब्बू की, “मैं यह क्या सुन रहा हूँ...”

“...जो भी हूँ...हूँ आपका दामाद ही ना।”

“सुनो... किसी मौलवी को पकड़ो, कलमा पढ़ो, खतना करवाओ और इसलाम कबूल करके जल्दी यहाँ आ जाओ। हम आपको हैदराबाद में मकान दिला देंगे, और अपने माँ-बाप को छोड़ दो...समझे।” अब्बू ने पूरी तरह शरीयत का कानून सुना दिया था।

“जब आप अपने मजहब के लिए अपनी बेटी को नहीं छोड़ सकते, तो मैं अपने धर्म और माँ-बाप को आपकी बेटी के लिए कैसे छोड़ सकता हूँ।” नील ने फोन पर कहा। और बहुत सारी बातें हुई, अंत में लगा नील झुक गया है, उसने कहा, “आऊँगा...।”

“तो ठीक है जल्दी आओ...तुम्हारी नई जिंदगी का स्वागत होगा।” नील ने ऐसा क्यों कहा, क्या सोचा होगा मुझे नहीं पता।

74

और तीन दिन के अंदर ही नील मेरे घर में मेरी आँखों के सामने था, उसे देखते ही मेरे वीरान जीवन आँगन में फूल खिल उठे थे। अब उन्हें लहराने के लिए हवा के धीमे-धीमे झोकें की जरूरत थी, ताकि खुशबू सब ओर फैल सके। मैं आश्चर्यचकित थी। आश्चर्य ही उपासना का आधार है और ईश्वर को पाने की पहली सीढ़ी...मेरे ईश्वर तो अब मेरे सामने थे मेरे अपने ताज। परंतु मुझे तो झटका लगने वाला था। मुरझाने वाले थे पुष्प।

“तो तुम न मजहब कबूल करोगे और न ही खतना कराओगे?” अब्बू तेज आवाज में कह रहे थे, “मैं अपनी जमात को कैसे मुँह दिखाऊँगा कि मैंने अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ की है...मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी है।”

“नहीं...जब आपकी बेटी से शादी करके मेरी इज्जत नहीं गई, तो फिर आपकी कैसे जा सकती है?”

“इसका मतलब तुमने फैसला कर लिया है कि तुम्हें हमारा मजहब मंजूर नहीं।”

“हाँ...” वह अपनी बातों एवं सिद्धांतों का पक्का था, यह तो मैं भी जानती थी, इसलिए उसने तो ऐसा कहना ही था।

“...तुम जानते हो अगर मैं चाहूँ तो मेरे बेटे और सारी बस्ती वाले पत्थर मार-मारकर तुम्हारी जिंदगी फना कर सकते हैं...” यह बात सुनकर अम्मी और घर के सारे लोग और करीब आ गए थे, “लेकिन कान खोलकर सुन लो मैं तुम्हारे साथ ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि मेरी बेटी तुमसे बेइंताह मुहब्बत करती है। इन सबको अब पता चला है लेकिन मैं

उसी दिन जान गया था, जब मैंने बीमारी के बहाने फोन किया था....तभी तुम्हारी सारी बातें सुन ली थी कि तुम हिन्दू हो...”

“तो जानते हुए फिर क्यों आपने एक काफ़िर के साथ अपनी बेटी की शादी की।”

“क्योंकि मैं अपनी बेटी का दिल तोड़ना नहीं चाहता था।”

“लाखों लोग प्यार करते हैं इस दुनिया में, लेकिन क्या सभी का प्यार परवान चढ़ता है? इसका क्या मतलब है? किसी और से शादी कर देते ...प्यार तो अंधी वासना का छलावा मात्र है।”

“यह तुम कह रहे हो बेटा...क्या तुम पढ़े-लिखे होकर इतना भी नहीं जानते कि भारतीय नारी किसी को केवल एक बार ही चाहती है...फिर शादी हो या नहीं...वह हमेशा के लिए उसी की हो जाती है।”

“लेकिन आपके इसलाम में तो शायद ऐसी मान्यता नहीं है...यहाँ तो चार-चार शादियाँ कर लेते हैं।”

“करते होंगे, लेकिन हमारे खानदान में नहीं करते...हम भी 700 साल पहले हिन्दू ही थे। वैसे भी हिन्दुस्तान में ज़्यादातर लोग हिन्दू से ही इसलाम में कन्वर्ट हुए हैं...चाहे वे डर से या फिर किसी लालच में...”

“ओह तो यह बात है,” अम्मी बीच में बोली थी, “सईद तुम सब जानते थे और तुमने मुझसे भी सबकुछ छिपा लिया...।”

“हाँ बेगम, मैंने इसलिए छुपा लिया कि मुझे विश्वास था कि मेरी बेटी एक न एक दिन इसे इसलाम कबूल करवाकर अल्लाह का नेक बंदा बना ही लेगी...”

“अब्बू, मैं इसलाम नहीं कबूल कर सकता,” नील ने उनकी बात पर प्रतिक्रिया दी थी, “लेकिन एक वादा कर सकता हूँ...”

“वह क्या?”

“फरू के मजहब में मैं दखल कभी नहीं दूँगा, यह इसलाम को मान सकती है और मान भी रही है...इसे मैं हिन्दू बनने के लिए बाध्य कभी नहीं करूँगा, इसे अपने मजहब की पूरी आजादी है।”



युसूफ

“इस पर मैं अब यकीन कैसे करूँ? करवाचौथ, देवपूजा और न जाने इससे क्या-क्या कुफ़्र वाले कार्य तुम लोगों ने करवा डाले...”

“फरूँ!” उसने मुझे पुकार लिया था, “क्या मैंने आपको कोई भी रीति-रिवाज मानने के लिए तुम्हें बाध्य किया है...तुम भी कुछ बोलो...”

“वो क्या बोलेगी, अब तो फैसला अदालत में होगा,” फिर अब्बू ने मेरे भाइयों से कहा, “इस काफ़िर को घर से बाहर निकालो...”

मैं कुछ नहीं बोली, बस मुँह फेर लिया था। मेरे जीवन की पुष्प वाटिका तो उजड़ चुकी थी। यौवन के मद में व्यक्ति

अंधा हो जाता है, लेकिन यदि वह परोपकार के पथ पर चले तो दूर दृष्टि भी उसे मिल सकती है। अब ऐसी ही दूरदृष्टि की मुझे आवश्यकता थी।

अली और युसूफ नील की ओर बढ़े और उसे पकड़ लिया था, लेकिन मेरा रियेक्सन न होने पर वह बोला, “इस सबकी जरूरत नहीं मैं खुद ही चला जाता हूँ।” वह बाहर निकल गया था। मैं बेबस थी, मेरी तो दुनिया उजड़ चुकी थी। उन्होंने अपने संस्मरण में बाद में इस घटना को कविता में इस प्रकार व्यक्त किया :

निकलते सवेरा किया अंधेरा
तूने ठुकराया प्यार मेरा
जन्म-जन्म रहेगा इंतजार
याद आया इकरार तेरा

जात-पात मजहब के झगड़े
बिछुड़ गए जब इनमें जकड़े

मनुष्य बनना वेद हैं सिखाते
पर मनुर्भव पथ कौन पकड़े

जब आए तुम्हें याद मेरी
मत रोना नकाब में छिपा चेहरा
छिप-छिप देख लेना फोटो मेरा
जिसमें सिर पर बंधा है सेहरा
निकलते सवेरा....

आज भी याद वह करवाचौथ
चाँद देख पलकें झुकाना तेरा
होंठ खामोश, धड़कने तेज थी
फिर इशारों में मुझे रिखाना तेरा

जननी और जन्मभूमि के आगे
बहुत कम हूँ कर्जदार तेरा
तू माने या ना माने
मैं तो फिर भी हूँ प्यार तेरा
निकलते सवेरा....

75

इस घटनाक्रम से मेरी कमर पूरी तरह टूट चुकी थी। मेरे भाई मेरे पति को हर हाल में ठिकाने लगाना चाहते थे। यूसूफ, अली, जावेद, खलील और बस्ती वाले सब एक दिन मस्जिद में इकट्ठा हुए थे। यूसूफ साथियों के साथ बातें कर रहा था, “अब्बू तो बुढ़ापे में सठिया गए हैं, उस काफ़िर का हमें ही कुछ करना होगा, नहीं तो मजहब के लिए बहुत बड़ा तमाचा होगा।”

“करना क्या है? हुक्म करो साले की...” खलील बोल उठा था।

“यूसूफ भाई कुछ न कुछ तो करना ही होगा...नहीं तो..” जावेद ने भी जबान खोली थी।

“भाईजान इसमें देर करने की जरूरत नहीं है,” अली भी बीच में पड़े



मैं और मेरी भाभी, घर से निकलते हुए

थे, “कल अदालत में पेशी है...उससे पहले ही...काम तमाम...”

तभी मस्जिद में लड्डू भाई आ गया था, “किसका काम तमाम हो रहा है भाई...”

“उस काफ़िर का...उसके शरीर की बोटी-बोटी काटकर कुत्तों को खिला देंगे...” युसूफ ने कहा।

“अच्छा...सही जा रहे हो,” कहते हुए लड्डू भाई निकल पड़ा था।

76

नील कोर्ट परिसर में बैठा हुआ था, तभी लड्डू भाई आया और कहा, “ताज तुम्हारी जान को खतरा है...तुम्हें मारने के लिए तुम्हारे साले व बस्ती वाले इधर ही आ रहे हैं...”

“आने दो सालों को देख लूँगा।” नील बेधड़क था।

“मेरी सलाह है कि तुम कोर्ट कचहरी के चक्कर में मत पड़ो और

अभी जान बचाकर भाग जाओ...अगर जान रही तो लाखों फर्क मिल जाएँगी...नहीं भी मिली तो मेरी बड़ी बहन तलाकशुदा है..." और वह खुद जबरन नील को भगाने की कोशिश करने लगा था। लेकिन लड्डू भाई भी तो मुस्लिम ही था, उसका असली नाम जहाँगीर था, परंतु वह नील की सहायता क्यों कर रहा था, यह बात मेरी समझ से परे थी।

77

नील दिल्ली भाग आया था। दिल्ली आकर वह महान उपन्यासकार श्री गुरुदत्त के पौत्र पद्मेश दत्त जी से मिला, जो उन्हें लेकर एक हिन्दूवादी नेता के कार्यालय में गए।

“अच्छा किया जो हैदराबाद से भाग आए।” नेता ने कहा था।

“मैं भागना नहीं चाहता मुकदमा पूरा लड़ना चाहता हूँ और मुझे इसके लिए सहयोग चाहिए।”



“अरे गुगल पर मानव बम बनाने का तरीका खोज लो और फिर बना लो बम... बदला लेने के लिए...तुम उसे बांधकर जामा मस्जिद में विस्फोट कर दो...देश और धर्म के लिए शहीद हो जाओ...उसके बाद हम तुम्हारी जीवनी छाप देंगे और हमेशा के लिए तुम धर्म की बलिवेदी पर चढ़ने वाले क्रांतिकारियों की श्रेणी में गिने जाओगे।” वह बड़बोला नेता बोला था, जो बाद में राज्य सभा का सांसद भी बन गया था।

“देश के लिए एक बार क्या मैं तो हर जन्म में मरना पसंद करूँगा,” नील ने अपनी बात रखी थी, “लेकिन आतंकवादी नहीं बन सकता...यदि हिन्दू भी आतंकवादी बन गए तो फिर सीरिया, इराक के आतंकी और अफगान के तालिबान और भारत के हिन्दुओं में अंतर ही क्या रहेगा, धर्म की रक्षा के लिए लाखों धर्महंताओं से अकेला जंग कर सकता हूँ, लेकिन निर्दोष तो चींटी की भी हत्या नहीं कर सकता।”

“तो हम तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकते...अखंड भारत अखबार के संपादक पूर्व सांसद बीएल शर्मा प्रेम के पास चले जाओ...वे आजकल सरदार बन गए हैं...सवा लाख से एक को लड़ाते हैं...वे ही तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं। लक्ष्मीनगर के स्कूल ब्लाक में उनका कार्यालय है और जोरबाग लेन की बटुकेश्वर दत्त कालोनी में घर...”

“धन्यवाद...” नील उठकर चल दिया था।

78

नील अपने गाँव पहुँचा तो वहाँ उन्हें पिता देखते ही भड़क उठे थे, “तुम यहाँ क्यों आए हो? पुलिस ने हमारा जीना हराम कर दिया है...तुम्हें जमीन-जायदाद से बेदखल कर दिया गया है...क्योंकि तुमने समाज और रिश्तेदारों के बीच हमें जीने लायक नहीं छोड़ा...बस सिर्फ हुक्का-पानी बंद होना बाकी है...निकल जाओ यहाँ से...हमें कभी अपना मुँह मत दिखाना ...तुम हमारे लिए मर चुके हो...”

“मैंने ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया?”

“कौनसा गुनाह कर दिया...कान खोलकर सुन लो तुम निकल जाओ यहाँ से...तुमने सबका जीना दुश्वार कर दिया है।”

“पिताजी इस दुनिया और समाज की झूठी शानो-शौकत में मत जिएँ ...पिताजी जब दूसरे धर्म में कोई युवक पराए धर्म की लड़की से शादी करता है, तो वहाँ उसका सम्मान होता है और लोग उसे आँखों का तारा समझते हैं और यहाँ पर जहाँ छुआछूत, भेदभाव, जातिवाद का आडम्बर फैला हुआ है...सत्य सनातन वैदिक धर्म की प्राचीन संस्कृति होते हुए भी ऐसा करने वाले का तिरस्कार क्यों? ...वैदिक धर्म में इन्हीं कमियों के कारण मत-पंथों का जन्म हुआ...जैसे इसाई या इसलाम...जिससे हम अलग-अलग टुकड़ों और देश में बँटते चले गए।”

नील को थप्पड़ मारते हुए मेरे ससुर बोले थे, “नालायक नसीहत मत दे...ढाई आँखर पढ़कर...आज से तेरे लिए हमारे घर के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो गए और सारे रिश्ते-नाते खत्म...अब खड़ा क्यों है...अब मैं तेरा मुँह नहीं देखना चाहता।”

नील वहाँ से चलने को हुआ, तभी माँ ने नील के पिता को डाँटते हुए और नील को रोकते हुए कहा, “तुम्हें जवान बेटे पर हाथ उठाते हुए शर्म नहीं आती...कहाँ जाएगा ये...कहीं कुछ कर बैठा तो...” फिर नील से कहा था, “बेटा पिताजी की बातों का बुरा मत मान...तू कहीं मत जा” माँ रोने लगी थी। प्यार की एक विशेष शक्ति एक औरत में स्पष्ट रूप से तभी दिखाई पड़ती है, जब वह माँ बनती है और मेरी सास तो जवान बेटे की माँ थी, इसलिए वह जान चुकी थी कि ईर्ष्या या घृणा के विचार मन में प्रवेश होते ही खुशी गायब हो जाती है, प्रेम व शुभभावना युक्त विचारों से ही उदासी दूर होती है।

“माँ तू रो मत,” नील ने कहा था, “मेरी किस्मत में जो होगा, वह होगा ही...तेरे पास तो और भी बेटे हैं ना...मैं नहीं रहा तो क्या हुआ...उन्हीं के सहारे जी लेना...वैसे तुम्हारी जिंदगी पिताजी हैं और वे ही तुम्हारे सुहाग हैं और एक भारतीय नारी का पहले सुहाग होता है और फिर संतान...मालूम है ना....इतिहास साक्षी है...जब राजा दशरथ ने राम को वनवास दिया था तो क्या माँ के कहने से वे वन में जाने से रूक गए थे।” कहते हुए नील ने माँ के पैर छूए और सभी को हाथ जोड़कर वहाँ से निकल पड़ा था। माँ एकटक नील को देखती रही, सभी लोग वहाँ से निकल गए...एक भरा-पूरा परिवार था, लेकिन उसे हिम्मत देने वाला कोई नहीं था। सिवाय बीएल शर्मा प्रेम के...वे ही हिन्द के अकेले शेर निकले थे उनकी दृष्टि में तो...

79

सूर्य डूब रहा था, नील गाँव के जल्लावाले जोहड़ के किनारे बैठा सोच रहा था, ‘जब घर से भी गया और जान का भी खतरा...तो फिर क्यों न हम फरू के हाथों से ही...’ और वह उठकर रेलवे स्टेशन की ओर चल दिया था।

उधर, उसके घर में नील की माँ उदास बैठी थी, तभी पारो आई, “माँ जी आपने सुबह से अंजल पानी कुछ नहीं किया...चलिए कुछ खालीजिए।”

“नहीं मुझे भूख नहीं, तुम और तेरी ननंद जाकर खा लो...” वह चली गई, ससुर जी का प्रवेश हुआ था, “तूने यह क्या हाल बना रखा है... खाना-पानी छोड़कर...क्या तुम्हीं उससे प्यार करती हो, मैं नहीं करता...वो मेरा भी बेटा है, लेकिन क्या करता...यह समाज, यह दुनिया, यह धर्म और रिश्तेदार हमें यहाँ नहीं जीने देते, हमारे सामने यही एक रास्ता था...” मेरे ससुर की भी आँखों में आँसू आ गए थे।

“कहाँ होगा मेरा लाल?” तड़प उठी थी मेरी सास...

80

नील 32 घंटे बाद ही मेरे घर के सामने मस्जिद से लगे चौक पर था, उसे देखते हुए युसूफ, अली, जावेद, खलील सब आगबबूला हो उठे और ऐसे टूट पड़े थे, जैसे निर्दोष लोगों पर पाकिस्तानी घुसपैठिए पिल पड़ते हैं। लात-घूसों से नील की ठुकाई-पिट्टाई हो रही थी। नील को सभी लोग मिलकर मार रहे थे, नील के कंधे पर एक बैग था...लड़ाई के दौरान जो नीचे गिर पड़ा था...नील भी अपना बचाव तो कर ही रहा था, अंत में नील लहू-लुहान अधमरा होकर जमीन पर गिर पड़ा तो सभी लोग हँसने लगे थे और युसूफ ने कटाक्ष किया था, “नालायक काफिर....आया था शेरों के बीच में...” सब लोग फिर हँसे थे। नील लहूलुहान पड़ा था...युसूफ ने नील का बैग उठाकर हवा में उछाल दिया था। बैग जब हवा में गया तो, उसमें से डायरी, कुछ पेपर, कुछ दवाईयाँ एक किताब इधर-उधर बिखरने लगे...नील आँखें खोल चुका था और हिम्मत करते हुए उन्होंने वह किताब जमीन पर नहीं गिरने दी, उसे लपक लिया। वह उसकी सबसे प्यारी किताब थी सत्यार्थ प्रकाश....जैसे बिना पढ़े ही उसे कह रही थी, ‘... आर्यवर्त का लाल ...अपनी ही धरती पर लहूलुहान...आर्यों को कभी हराया नहीं जा सकता ...भारत के लाल इन सबका डटकर मुकाबला करो और खात्मा कर दो... वह झटके साथ लड़ने या यूँ कहें कि मरने के लिए तैयार था और चीख पड़ा था, ललकारने लगा था, तभी युसूफ ने उसे पकड़कर कहा, “या तो मजहब कबूल कर या जिंदगी खत्म...”

“खत्म नहीं... तुम लोग क्या समझे थे कि मेरी जिंदगी खत्म....नहीं

...मैं मरते दम तक बार-बार कहूँगा मैं जान गँवा सकता हूँ, अपना धर्म नहीं...सच्चा हिन्दूस्तानी हूँ हिन्दुस्तान जिंदाबाद...भारत माता की जय... सन आफ मदर इंडिया” और ये कहते हुए एक झटका देते हुए पागल शेर की तरह सब पर टूट पड़ने को तैयार था, लड्डू भाई भी आ पहुँचा था। मेरा घर भी तो सामने ही था, लेकिन मैं तो दुबककर कमरे में बैठी थी, तभी वसंता आ गई थी और इस मारपीट के बारे में बताया। मैं, अम्मी और अब्बू के साथ बाहर आई...अब्बू ने पुलिस को फोन कर दिया। अम्मी के हाथ में नुकीला लोहे का सरिया था, झट से आगे बढ़कर नील ने उसे छीन लिया और युसूफ के सिर पर दे मारा, जिसके कारण चक्कर खाते हुए चीखकर युसूफ जमीन पर गिर पड़ा था, मैंने युसूफ का सिर दबाया, अपनी चुन्नी उसके सिर पर बांध दी और नील पर बरस पड़ी, “तुम यहाँ से चले जाओ, कान खोलकर सुन लो, मैं तुमसे प्यार करती थी और निकाह इसलिए किया था कि तुम शादी के बाद मेरा मजहब कबूल कर लोगे, लेकिन तुम नहीं झुकने वाले....इसलिए अब तुम्हारा हमारा कोई संबंध नहीं, हम-तुम अलग-अलग...”

“जब रास्ते ही अलग हो गए, तो जीने से क्या फायदा...” नील ने वह सरिया मुझे दे दिया था, “मैं अब तो कहीं का नहीं रहा, न घर का न घाट का....इस सरिया से मेरी जान लेकर अपना प्रतिशोध ले ले।”

“तुम्हें छोड़ूँगी नहीं, प्रतिशोध तो जरूर लूँगी...” मैं बोल पड़ी थी और तभी पुलिस आने का सायरन बज उठा था, जो आकर नील को पकड़ कर ले गई...

81

सना सारी घटना से अवगत हो चुकी थी। नुमाइश मैदान में बाबा रामदेव का योगा कैंप लगा था, वह उसमें ही भाग लेने आई थी। इस दौरान वह मेरे घर आई, कभी तड़क-भड़क रहने वाली सना इस समय नॉर्मल ड्रेस में थी, उसके हाथ में एक बैग था, जिसमें कुछ सामान के साथ नूरे हकीकत यानी सत्यार्थ प्रकाश किताब थी, जिसे निकालते हुए उन्होंने कहा, “मैंने सुना है कि तुम और ताज...”

“सही सुना है...उसने मेरे साथ बहुत बड़ा धोखा किया है, वह काफ़िर है।”

“यानी हिन्दू...तो क्या हुआ...तेरा भी तो यही सपना था कि तू किसी काफ़िर से शादी करके नौ बार हज करने जैसा शबाब लूटेगी।”

“लेकिन वो तो वेदपरस्त है...तैयार नहीं कबूल करने को...”

“तो हज़्र क्या है...वेदपरस्त है...बुतपरस्त तो नहीं...तुम्हें प्यार तो करता है ना..तुम्हें अपनी जिंदगी से अलग तो नहीं किया और...तुम्हारे साथ कोई जबर्दस्ती भी नहीं करता, तो फिर उसके साथ जीवन करने में आपत्ति क्या है? रूढ़िवाद में कहाँ फँसी पड़ी है। सच्चा जीवन साथी मिलता ही कहाँ है?”

“तो तू क्या कहना चाहती है? तेरी जैसी मैं भी हो जाऊँ...नौ सो चूहे खाकर हज़ करूँ?” मैंने कहा।

“हज़ नहीं यज्ञ कर...तेरी आँखें खुल जाएँगी।” सत्यार्थ प्रकाश उसने मेरे हाथों में थमा दिया था, “इसे पढ़....तेरी सब गलतफहमियाँ दूर हो जाएँगी...मैं चलती हूँ...आगे तेरी मर्जी...” उठ खड़ी हुई और वह चल दी थी अपनी मंजिल की ओर...

82

अब्बू अम्मी ने मेरा घर से बाहर निकलना बंद कर दिया था। बड़ी बहन शहाना यद्यपि मुझसे सहानुभूति रखती थी। परंतु मैं घर के पिछले कमरे में अकेले पड़े-पड़े क्या करती, टाइम पास तो करना ही था, इसलिए मैंने स्वामी दयानंद का नूरे हकीकत ग्रंथ उर्दू में पढ़ना शुरू किया, जब सब मतांतरों का तर्कपूर्वक खंडन पढ़ा तो बहुत अच्छा लगा, लेकिन उसके बाद चौदहवाँ समुल्लास पढ़ने की बारी आई तो उसे शुरू करते ही मेरा पारा सातवें आसमान पर था, लेकिन जब कुरान की समीक्षा बार-बार पढ़ी तो मुझे लगा कि समीक्षा करने



शहाना

वाला पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं रहा होगा, उसका मकसद तो दुनिया को सत्य से अवगत कराना ही था, इसलिए क्रोध जाता रहा और बार-बार उसे पढ़कर समझने की कोशिश करने लगी। मूल कुरान शरीफ उठाई और तर्क की कसौटी एवं विज्ञान के सिद्धांतों पर उन्हें कसने का प्रयास करने लगी। नील का कुछ सामान और किताबें घर में भी थी, उनमें स्वामी दयानंद की जीवनी भी मुझे मिली, मैंने उसे भी बार-बार पढ़ा। कभी दयानंद स्वामी की जीवनी और कभी सत्यार्थ प्रकाश...बार-बार पढ़ने लगी और हर बार कुछ न कुछ नया मुझे मिल रहा था।

सत्यार्थ प्रकाश तो मेरे लिए ज्ञान का खजाना साबित हुआ। जैसे सारे कायनात का ज्ञान उसमें ही समाया हुआ हो, लेकिन उसे पढ़कर ही पता चला कि पवित्र वेद ही ईश्वरीय पुस्तकें हैं, तो एक दिन बुरकानशीं होकर जब डॉक्टर के पास गई, तो वहीं से निज़ाम लाइब्रेरी चली गई, जहाँ मुझे ऋग्वेद का मौलाना हाजी मौलवी अब्दुल रहमान साहिब द्वारा किया गया उर्दू अनुवाद मिल गया, जिन्होंने 1932 में इस्लाम से वैदिक धर्म अंगीकार किया था। मैंने उसका अध्ययन किया और मेरी दीवानगी इस हद तक बढ़ गई कि मैं समझने लगी कि मैं इस जमाने की औरत नहीं हूँ, गलती से जन्म ले लिया है, मैं तो कभी किसी जन्म में ईरान की रहने वाली थी, जहाँ अग्नि मंदिरों में ऐसे ही ग्रंथों की आयतें गूँजा करती थी। यह ग्रंथ तो संस्कृत के साथ-साथ उर्दू में अनुवादित था, लेकिन संस्कृत के अनेक शब्द अरबी में ज्यों के त्यों हैं, यह देखकर तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत ही है और सभी उसी से निकली हैं और वेद ही सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं। ईश्वर ने यदि इस दुनिया को अपनी किताब दी तो उन्होंने सृष्टि के आरम्भ में वेद ही दिए होंगे...ईश्वर का ज्ञान इतना अधूरा नहीं हो सकता कि वेदों के बाद भी बार-बार संशोधित संस्करण जमीन पर भेजे हों? यदि अल्लाह भी अपनी बातें संशोधित करने लगा तो फिर वह पूर्ण ज्ञानी नहीं माना जा सकता...वेदभाष्य पढ़ने बाद मुझे लगा कि मेरा दूसरा जन्म हुआ है। वास्तव में व्यक्ति का जन्म सुसंस्कार संपन्न होने के बाद ही होता है। इसी पर बाद में मैंने एक कविता लिखी, जो इस प्रकार है :

पुनरजन्म हुआ मेरा
 नूरे हकीकत पढ़ा पूरा
 रहबरे कौम दयानंद
 रह गया ख्वाब अधूरा
 वेदों की राह छोड़के
 बुतपरस्त समाज हुआ
 कब्रें पूजी जाने लगी
 पढ़के नमाज हुआ
 मेरा तो बस एक ओंकार
 सर्व अंतर्यामी तू निराकार
 उठ जाग आर्य मुसाफिर
 पेट में खाके छूरा
 रहबरे कौम दयानंद...

शिखा मेखला यज्ञोपवीत
 गायब हुई ये निशानी
 देश का नाम भूल गए
 बिछड़े हुए हिन्दुस्तानी
 संध्या-हवन कैसे करें
 पढ़ें जबूर पारा सूरा
 रहबरे कौम दयानंद...

अगर है वेदों से मुहब्बत
 करो जहाँ तक हो हिफाजत
 पियो खुशी से मये शहादत
 कटे गरदन या बरसे नूरा
 रहबरे कौम दयानंद....



महर्षि दयानंद की जीवनी पढ़ते हुए

ईश्वरीय किताब का ज्ञान होने के बाद बार-बार स्वामी दयानंद का जीवन चरित्र पढ़ने से मुझे ऐसा लगता था कि स्वामी दयानंद के जीवन की समाज सुधार की घटनाएँ मेरी आँखों के सामने चलचित्र की भाँति चल रही हैं। काशी शास्त्रार्थ, चाँदपुर मेला शास्त्रार्थ, विष देने वाले को माफ



आर्य निर्मात्री सभा के सत्र में भाग लेती हुई, हवन वाले चित्र में सामने एवं मंच के कोने पर हूँ मैं करना आदि भूतकाल के सीन मेरी आँखों के सामने दृष्टिगोचर होते प्रतीत हो रहे थे। सामने कुछ न होते हुए भी मैं परेशान हो उठी थी कि ओ मेरे देव दयानंद इस जमाने में यह मेरी बदनसीबी कि आज मैं हूँ तो तुम नहीं और यह उन लोगों की बदनसीबी जो आपके जमाने में थे और उन्होंने आपको बिना पहचाने ही जहर दे दिया। स्वामी दयानंद के उपकार जानकर बार-बार मेरी आँखों से आँसू झरने लगे थे, जबकि घर वाले सोचते थे कि मैं इसलिए रोती हूँ कि मेरी दुनिया उजड़ गई, उन्हें कहाँ पता था कि मैं इसलिए रो रही हूँ कि मुझे नई दुनिया मिल गई...एक नया घर मिल गया, एक नया संदेश मिल गया, जो सृष्टि के आदिकाल से है और नित नया ही रहता है : वेद ज्ञान, जो मुझे सत्यार्थ प्रकाश के कारण मिला और मैंने प्रतिज्ञा ली कि एक दिन मैं सत्यार्थ प्रकाश का दुनिया की कम से कम 50 भाषाओं में रूपांतरण करवाके प्रकाशित करूँगी, ताकि सारी दुनिया, हर देश और हर भाषा के लोग सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से वेद वृक्ष की छाया तले बैठने का आनंद उठा सकें। यह मेरे लिए गर्व की बात है आज जब इस संस्मरण का पुनर्लेखन कर रही हूँ, तब तक मैं सत्यार्थ प्रकाश देश की प्रमुख 11 भाषाओं में प्रकाशित कर चुकी हूँ, छपाई एवं कागज इतना सुंदर एवं अच्छा है कि आर्य समाज के किसी भी प्रकाशक ने शायद ही ऐसा प्रयास किया हो। आर्य निर्मात्री सभा के सत्र में बहुत बाद में जब भाग लिया तो, तब सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन का निश्चय और दृढ़ हुआ।

ओ मेरे देव दयानंद मैं तेरा उपकार, तेरा ऋण कैसे चुकाऊँगी, तुम नहीं जानते कि तुमने मुझे क्या दे दिया, आपको समर्पित मेरी यह कविता:

पीके जहर, सहके कहर

तुझपे ले आई ईमान

वेदों वाले देव दयानंद

तूने दे दिया ईश्वरीय ज्ञान

वेदस्य शरणं गच्छामि, दयानंदस्य चरणं नमामि

ज्ञानस्य वृद्धिम् करोमि, मूलस्य वचनम् अनुसरामि

वेदों की राह छोड़के

भटका था जमाना

बुतपरस्त बन गए सभी

कब्रों पे सिर झुकाना

समीक्षा सभी की कर डाली

लिख सत्यार्थ प्रकाश महान

वेदों वाले देव दयानंद

तूने दे दिया ईश्वरीय ज्ञान

वेदस्य शरणं गच्छामि, दयानंदस्य चरणं नमामि

ज्ञानस्य वृद्धिम् करोमि, मूलस्य वचनम् अनुसरामि

विज्ञान की बातें छोड़कर

आडम्बरो में फँसे थे लोग

नारी को समझ पैर की जूति

खेती समझ करते थे भोग

जहां में नारी की पूजा कर

वहाँ पे बना दिया देवस्थान

वेदों वाले देव दयानंद

तूने दे दिया ईश्वरीय ज्ञान

वेदस्य शरणं गच्छामि, दयानंदस्य चरणं नमामि

ज्ञानस्य वृद्धिम् करोमि, मूलस्य वचनम् अनुसरामि

महर्षि दयानंद सरस्वती की इतनी कर्जदार होने के बावजूद भी मैं अदालत के कघटे में खड़ी बयान देने के लिए असंमजस में पड़ गई थी कि मैं सत्य का साथ दूँ या धर्म एवं मजहब के नाम पर दंगा करने वाले लोगों का ...मेरी अंतर आत्मा कहती थी कि वेद ही सत्य हैं...मनुर्भव यानी मनुष्य बनना ही इंसानियत है...फिर कुरान की शिक्षा मुझे रोक रही थी और लेकिन साथ ही कह भी रही थी कि ..औरत इस्लाम की खेती है...फिर मनुस्मृति का मंत्र मुझे अपनी ओर खींच रहा था...जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं....मेरी हालत तो पागल जैसी हो रही थी। तभी अचानक चक्कर खाकर कटघरे में गिर पड़ी...। बस धुँधली सी याद है कि नील मेरी तरफ लपका था, शायद मुझे सहारा देने या उठाने, उसके बाद क्या हुआ मुझे नहीं पता, जब मुझे होश आया तो तब मैं कोर्ट रूम की बजाय हॉस्पिटल में थी। ग्लूकोज की बोतल लगी हुई थी, बैड पर लेटी हुई ने देखा कि नील मेरे पास बैठा रो रहा था...तभी नर्स रिपोर्ट लेकर आई...खुशी से कहा, “...मुबारक हो...आप माँ बनने वाली हैं।” नील और मेरे चेहरे पर खुशी झलक उठी थी। किसी भी नारी के लिए माँ बनना दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार होता है, नोबेल पुरस्कार भी इसके सामने तुच्छ है, और मैं इसीलिए प्रसन्न हो उठी थी कि यह पुरस्कार अब मुझे मिलने वाला था।

उधर, हॉस्पिटल के केबिन में डॉक्टर रिपोर्ट तैयार कर रहा था, तभी टीवी पर ब्रेकिंग न्यूज आई, तो डॉक्टर का ध्यान टीवी की ओर चला गया था ...टीवी पर नील और मेरी फोटो दिखाई जा रहा थी...‘न्यूज रीडर पढ़ रही थी...इस युवक ने अपने दोस्त जहाँगीर के साथ मिलकर अदालत से इस लड़की को अगवा किया है...पुलिस को इसकी तलाश है...’ तभी डॉक्टर ने फोन उठाया और नंबर डायल कर दिया...इधर नील ने मेरे पेट पर कान रखा तो मैंने उसे हटा दिया, हम मन ही मन या प्रत्यक्ष जो एक दूसरे से कह रहे थे बाद में हमने उसे एक गीत में लिख दिया, जो इस प्रकार है:

नील :

सनम रे क्यों हो दूर-दूर
लग जा गले जन्नत की हूर...

ना आँखों में काजल

ना कानों में बाली

नाक में नथनिया

होंठों पे ना लाली

फिर भी चेहरे पर नूर

सनम रे क्यों हो दूर-दूर

लग जा गले जन्नत की हूर

मैं :

दिल तेरा प्यार का दरिया

जिगर तेरा दया का सागर

रूह तेरी फरिश्तों जैसी

मन अमरत की गागर

चुंबन में तेरे सुख

सनम रे क्यों हो दूर-दूर

नील :

ना गजरे की लड़ी

ना सोने की घड़ी

ना मोतियों का हार

ना अँगूठी हीरे जड़ी

पैरों में खनकती नुपूर

सनम रे क्यों हो दूर-दूर

लग जा गले जन्नत की हूर

मैं :

मर्यादा से तुम राम

नीति में तुम श्याम

कर्ण जैसे तुम उदार



अपने पतिदेव के साथ मैं

लेखनी में तुम लेखराम
दिल पे लिख लिया हुजूर
सनम रे क्यों हो दूर-दूर

नील :

भोली सी तेरी सूरत
संगेमरमर की तू मूरत
कंचन सी काया कामिनी
तेरी श्वाँसों में महसूर
सनम रे क्यों हो दूर-दूर
लग जा गले जन्नत की हूर

मैं :

तेरे जैसा हर कोई रहना
सूती धोती का क्या कहना
यज्ञोपवीत तेरे बदन पे
सबसे सुंदर गहना
ना छल कपट ना गुरुर
सनम रे क्यों हो दूर-दूर



एक पुस्तक के कवर पर मेरा चित्र

थोड़ी ही देर में पुलिस आ धमकी थी और नील को अरेस्ट करके ले गई थी। युसूफ, अली और अब्बू आ पहुँचे थे और मुझे घर ले गए थे।

85

उधर मैं दिन में ही सपना देख रही थी, जो एकदम सत्य था...थाने में पुलिस नील की ठुकाई कर रही थी और वो चीख रहा था...तभी अचानक मैं भी चीख पड़ी और घर के अंदर उठ बैठी, अम्मी और जरीना दौड़कर आई, अम्मी ने पूछा, “क्या हुआ बेटी....”

“अम्मी, ताज को पुलिस...” मैं सुबक पड़ी थी।

“...फराभाजी क्या पुलिस...” जरीना बोली।

“...ताज को पता नहीं पुलिस ने किस हालत में रखा होगा...” मैंने कहा था।

“...इतनी चिंता कायकू,” अम्मी बोली थी, “पेट में पल रहे बच्चे की चिंता कर...ले पानी पी।” मेरे सिर पर हाथ रखा था, “कल कोर्ट उससे छुटकारा दिला देगी ...वह तेरी जिंदगी से दूर चला जाएगा और तेरी दूसरी निकाह हो जाएगी...”

“...हाँ दीदी।” जरीना ने सहमति जताई थी।

86

मैं जज के सामने अपना अंतिम बयान दर्ज करा रही थी, लेकिन अब कोई भय मेरे अंदर नहीं था। मैं जान चुकी थी कि ईश्वर दयालु और न्यायकारी है। दयालु इसलिए कि उसने हमें कर्म करने की आजादी दी है और न्यायकारी इसलिए कि हम जैसा कर्म करते हैं, वह हमें वैसा ही फल देता है, पूजा-पाठ तो लोग इसलिए करते हैं कि ताकि व्यक्ति सद्कर्म करे, गलत कार्य न करे, मंदिर में प्रसाद चढ़ाने या नमाज के बाद दुआ पढ़कर ईश्वर से कोई इच्छा पूरी करने के लिए कहना मूर्खताभरी बातें हैं, जितने के हम अधिकारी हैं, वह उससे एक तिनका भी अधिक नहीं देगा, नहीं तो उसकी न्याय व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा। इसलिए मैंने जज साहब से कहा, “जज साहब मैं अपने पति के साथ ही रहना चाहती हूँ। मुझे मजहब और धर्म नहीं चाहिए, मुझे तो मेरा पति चाहिए। एक कहावत है अनपढ़ जाट पढ़े जैसा और पढ़ा-लिखा जाट खुदा जैसा...मेरा पढ़ा-लिखा पति ही मेरा खुदा है, वही मेरा मजहब है। वे सही-सलामत रहेंगे तो धर्म फिर अपने आप ही बन जाएगा, क्योंकि मैंने इनसे ही सीखा है कि प्रेम सबसे अच्छा मजहब है। मैं जानती हूँ कि अब हमें न मुसलमान अपनाएँगे और न ही हिन्दू, लेकिन हम तो अपना पुराना धर्म अपना लेंगे। जो न हिन्दुओं का है, न मुसलमान का।”

“पुराना धर्म मतलब?” जज ने पूछ लिया था।

“जज साहब! इसलाम जहाँ कहता है मुस्लिम बनो, वहीं बाइबिल कहती है इसाई बनो....लेकिन दुनिया के सबसे पुराने ग्रंथ वेद ही कहते

हैं कि मनुर्भव यानी मनुष्य बनो...इसलिए मैं न हिन्दू बनना चाहती हूँ, न मुस्लिम...मैं तो मनुष्य यानी भारतीय बनकर जीवन गुजराना चाहती हूँ।”

“मनुर्भव यानी मनुष्य यानी भारतीय इसका क्या मतलब है?”

“जज साहब जब-जब धर्म बदला है, तब-तब राष्ट्रीयता भी बदल गई है। सिंध और पंजाब में धर्म बदला तो भारत माता का एक अंग टूटकर वहाँ की नागरिकता पाकिस्तानी हो गई, बंगाल में धर्म बदला तो फिर मेरी भारत माता का दूसरा अंग टूट गया और वहाँ की नागरिकता बांग्लादेशी हो गई...मेरी भारत माता के इतने टुकड़े हुए हैं कि कहीं पाकिस्तान, कहीं बांग्लादेश, कहीं अफगान और यहाँ तक कि बर्मा, इंडोनेशिया तक इसी से टूटकर नए-नए देश बने हुए हैं...लेकिन मजहब के नाम पर नया देश बनाने से किसे शांति मिली है, किसी को भी तो नहीं, यदि शांति मिली होती, जन्मत मिली होती तो इराक के आतंकी और अफगान के तालिबान अपने ही मुस्लिम भाइयों का खून-खराबा नहीं कर रहे होते। जैसे अन्य इस्लामिक देशों में हो रहा है इसलिए मैं चाहती हूँ मेरी होने वाली संतान की नागरिकता भारतीय रहे।”

“भारतीय नागरिकता,” जज साहब ने पूछा, “क्या कोई तुम्हें भारत से बाहर भेजने का षड्यंत्र रच रहा है?”

“नहीं जज साहब ऐसी बात नहीं, दरअसल मेरे बच्चों की नागरिकता भारतीय तभी रह सकती है, जब मेरे बच्चे वेद पढ़ें, राष्ट्रधर्म निभाने की शिक्षा वेदों के अलावा और कोई धर्मग्रंथ देता ही नहीं, यदि लोगों ने वेद पढ़े होते तो भारत माता के इतने टुकड़े नहीं होते।”

“लेकिन तुमने वेद पढ़े हैं, तो फिर ऐसे ख्यालात पहले क्यों नहीं आए?”

“जज साहब! यही तो मेरी बदनसीबी है कि मैंने वेद नहीं पढ़े, लेकिन मेरी खुशनसीबी है कि मुझे वेदपाठी पति मिल गया। कुछ ही दिन पहले मैंने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश नूरे हकीकत पढ़ा है, उसी में वेदों के संदर्भ पढ़े हैं, धर्म के नाम पर धंधा करने वाले मत-मतांतरों की खोली गई पोल पढ़ी है...उसे पढ़कर ही मेरी धारणाएँ बदल गई। मैं कर्जदार हो गई स्वामी

दयानंद सरस्वती की कि उनके अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' ने मेरी आँखें खोल दी..." मैं घर से नूरे हकीकत लेकर आई थी, जिसे जज की ओर बढ़ा दिया, जज साहब ने उसे देखकर रख लिया।

“भारत का संविधान किसी को भी कोई भी मत, मजहब या धर्म अपनाने से नहीं रोकता, इसीलिए तुम्हें वैदिक धर्म अंगीकार करने की अनुमति दी जाती है और तुम अपने पति के साथ जा सकती हो..." आगे भी जज ने फैसले में बहुत कुछ कहा, सब सुनते रहे और फिर मैं नील के कंधे पर हाथ रखकर कोर्ट परिसर से निकली...तो कोर्ट के बाहर लोगों के हाथों में हॉकी, डंडे देखे, लेकिन पुलिस को देखकर उन्होंने छिपा लिए, लड्डू भाई ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया और उन्होंने जो शब्द कहे, बाद में मेरे जीवन पर उपन्यास लिखने वाले बरेली निवासी मुस्लिम लेखक मोहम्मद इकराम ने उनके शब्दों को इस कविता में पुरो दिया :

ओ...धन्य बेटी
भारत की बेटी...
धन्य तेरी कहानी....
राष्ट्रधर्म तूने निभाया
सफल की जिंदगानी

सती सीता अनुसूया सम
अपाला गार्गी सी ब्रह्मज्ञानी
ओ...धन्य बेटी
भारत की बेटी...
धन्य तेरी कहानी....

जब हम अदालत से निकलकर सड़क पर आए तो मैं आश्चर्यचकित थी कि हमें देखने के लिए सैकड़ों लोग सड़कों पर थे। मस्जिद से मौलवी और मंदिर से पुजारी भी निकल-निकलकर सड़कों पर आ गए थे। दूकानों से उनके मालिक निकलकर हमें देख रहे थे, यहाँ तक कि फुटपाथ पर पटरीवालों और रेहड़ीवालों के लिए भी हम जिज्ञासा की वस्तु बन गए थे। मैं भी चारों ओर लोगों को देख रही थी, उनकी प्रतिक्रिया परख रही थी,

अब मुझे किसी का भय नहीं था। एक मोची जो किसी के जूते ठीक करने का कार्य छोड़कर ही उठ खड़ा हुआ था और साईं मंदिर की दीवार से सटकर पैर के पंजों पर खड़ा होकर हमें देख रहा था। तभी पुजारी की दृष्टि उस पर पड़ी और उसे दीवार के सहारे से धक्का दे दिया था। वह जमीन पर गिरते-गिरते बचा, यदि मैंने आगे बढ़कर उसे सहारा न दिया होता, उस समय मेरे मन में यही आया :

दलित को दिल में बसा लो आर्यो
वरना ये गैर हो जाएगा
अखंड राष्ट्र पर आएगी आँच
यदि अपनों से बैर हो जाएगा

अब हमारा हैदराबाद में कोई मकान नहीं था, पिता के घर नहीं जा सकती थी, इसलिए कोई ठिकाना होने तक आर्य समाज मंदिर में जाना उचित समझा। हम आर्य समाज मंदिर की ओर बढ़ चले, पुलिस की घर तक पहुँचाने की जिम्मेदारी थी, लेकिन घर तो था नहीं...कुछ लोग अभी भी हमारे पीछे थे, मेरा भाई युसूफ अभी भी प्रतिशोध लेना चाहता था शायद या फिर हमें मौत के घाट उतारने का उसका इरादा अभी तक पक्का ही था...सायंकाल हो चुका था और आर्य समाज में हवन चल रहा था। एक स्टूल पर कुछ धार्मिक पुस्तकें रखी थी, शायद हवन के बाद पढ़ने के लिए...सत्यार्थ प्रकाश...मेरे पवित्र वेद...मंदिर की दीवार पर वेदों की कुछ सूक्तियाँ भी लिखी थी, जिनमें से एक थी : मनुर्भव यानी मनुष्य बनो ...इन सबको युसूफ पढ़ रहा था, लेकिन अचानक ही उन्होंने अपना दाहिना हाथ कंधे के पीछे किया और छिपाया हुआ खंजर निकाल लिया था। अब मेरी और नील की हत्या तय थी, क्योंकि पुलिस वाले आर्य समाज मंदिर के द्वार से ही लौट गए थे। उनकी ड्यूटी पूरी हो गई थी...नील मुझे बचाता हुआ आगे बढ़ा तो मैंने उसे रोक दिया और बलिदान देने की इच्छा जताई, क्योंकि क्रांति लानी है तो बलिदान तो देना ही होगा, मेरी भी इच्छा हो गई थी वेदप्रचार की क्रांति आए, इसलिए मैंने सोचा कि पहली बलिदानी मैं ही बनूँ और मैंने मत्था स्टूल पर रखे वेदों पर रख दिया, सब लोग हक्के-बक्के रह गए, लेकिन कोई युसूफ को रोकने का साहस न कर



स्वामी आत्मानंद सरस्वती जी के साथ मैं

पाया, वह मेरे पास आया, लेकिन उसने खंजर वाले हाथ को ऊपर जरूर किया, परंतु वह खंजर तो कब का जमीन पर गिर पड़ा था, अब तो उसका हाथ मेरे सिर पर रखने के लिए उठा था, मुझे आशीर्वाद देने के लिए। अदालत में सही अर्थों में मेरे पक्ष में होते हुए भी मुझे न्याय नहीं मिला था, क्योंकि वहाँ हमारी पूर्ण सुरक्षा की जिम्मेदारी पुलिस को नहीं सौंपी गई, सही अर्थों में सच्चा न्याय तो मुझे आर्य समाज मंदिर में मिला, जहाँ जान के दुश्मन बने भाई से मुझे अंततः बदले में प्रेमभरा आशीर्वाद मिला, लेकिन यह भी मेरी जीत नहीं थी, यह तो मेरे देव दयानंद की ही जीत थी, यह उन वेदों की जीत थी, जिन्हें मैंने भले ही न पढ़ा हो, लेकिन समझने का प्रयास तो किया और उनके छूने मात्र ने ही मेरी जिंदगी बदल दी, मरने के बाद स्वर्ग मिलता है या नहीं... मैं नहीं जानती, लेकिन वेदों की शरण में जाने से निस्संदेह जीते जी ही स्वर्ग मिलता है, जीते जी ही पुनर्जन्म होता है, इसलिए इस पर मैंने एक कविता लिखी है :

मैं :

वेदों को छुआ तो मिट गए गम
जाग गए नींद से, बच गए हम
ऋषियों के पथ पर चलना धरम
देश पे मरे हम जनम जनम

नील :

दिल की गहराई से
प्यार की तनहाई से
डूबे थे पार लगे
ज्ञान के दरिया में पड़ते कदम

मैं :

वेदों को छुआ तो मिट गए गम
जाग गए नींद से, बच गए हम
ऋषियों के पथ पर चलना धरम
देश पे मरे हम जनम जनम

नील :

कर्म किया तो उठी घटाएँ
धर्म छुआ तो झुकी दिशाएँ
दयानंद जाना तो खिला चमन

मैं :

वेदों को छुआ तो मिट गए गम
जाग गए नींद से, बच गए हम
ऋषियों के पथ पर चलना धरम
देश पे मरे हम जनम जनम

मेरे साथ ही मेरा भाई एवं उनके साथी हवन में ही बैठ गए, जो पूर्ण



आशीर्वाद देते हुए स्वामी संपूर्णानंद सरस्वती जी

होने वाला था। अंतिम आहुति दी जा रही थी :

ओम् सर्व वै पूर्णं स्वाहा

हमने भी वह आहुति डाली और उसके बाद शांति पाठ करते हुए मन एवं हृदय को जो शांति मिली, ऐसी आज तक कभी महसूस नहीं की थी, पता नहीं शांतिपाठ के इन शब्दों में क्या रहस्य छिपा हुआ है, जिन्हें मैं नमाज के स्थान पर आज पाँच वक्त उच्चारण



करती हूँ, मेरी संध्या और मेरी नमाज यानी कि नमस (ईश्वर स्मरण) का स्थान परमेश्वर की इसी सबसे सुंदर वाणी शांति पाठ ने ले लिया है। आप भी मेरे साथ इस शांति पाठ को गुनगुनाएँगे, तो मुझे लगेगा कि आप भी हमारे मानव धर्म में शामिल हो गए हैं, क्योंकि एक बार फिर याद दिलाना चाहूँगी कि इस्लाम जहाँ कहता है गैर मुस्लिमों को मुसलमान बनाओ... और इसाई कहते हैं सारी दुनिया को ईसा के रास्ते पर चलाओ, वहाँ केवल

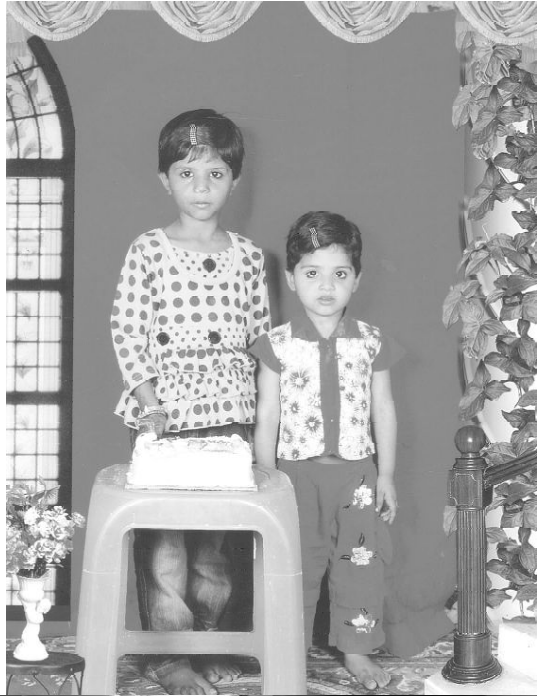
मेरे और सारी दुनिया के पवित्र वेद ही कहते हैं कि मुनर्भव अर्थात् मनुष्य बनो...तो आइए अब शांति पाठ करके हम सब शाश्वत शांति की ओर प्रस्थान करें :

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयेः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधिः
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।



मेरी बेटी निधि का चार साल
की आयु में लिया गया चित्र,
जिसका नानी ने निधा नाम
रखा था ।

मेरी बेटी निधि के साथ
 उसकी छोटी बहन तेजस,
 जिसने अपना नाम खुद
 मुस्कान और नानी ने
 फातिमा रखा। मुस्कान के
 जन्म का संयोग यह है कि
 इसका जन्म 07-07-2007
 को सुबह सात बजे
 हैदराबाद के सातवें निजाम
 की कोठी जो अब अस्पताल
 है, उसके सातवें नंबर के
 कमरे में हुआ था। इसके
 सारे नखरे राजकुमारियों
 जैसे होते हैं।



मेरी बेटी निधि के साथ उसकी मंझली बहन तेजस और फिर सबसे छोटी तमन्ना, जिसका
 उसकी नानी ने नाम बुशरा रखा था और हमने कोमल।



विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्टाल पर प्रदर्शित मेरी एक दर्जन पुस्तकें देखते हुए मेरे प्रेरक पाठक और मैं



मेरी आत्मकथा की पुस्तक एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान आयोजन स्थल के निकट बेचते हुए मेरे पतिदेव एवं मार्गदर्शक

यह एक ऐसी लड़की की कहानी है, जिसे पढ़कर लगा कि फरहाना तो न हिन्दु की है और न ही मुसलमान की, वरन यह तो बेटी है हिन्दुस्तान की।

- मौसमी उड़ेसी



मॉडल एवं फिल्म अभिनेत्री मौसमी उड़ेसी मेरी आत्मकथा की पुस्तक के साथ



राष्ट्रभक्ति से प्रेरित यह कहानी वास्तव में किसी हिन्दुस्तानी लड़की की ही हो सकती थी, क्योंकि ऐसे संस्कार भारतीय नारी में ही हो सकते हैं।

- सावन वर्मा

फिल्म डायरेक्टर सावन वर्मा को भारत माता का चित्र भेंट करती हुई, जिन्होंने मेरी कहानी पर फिल्म बनाने का निर्णय लिया।

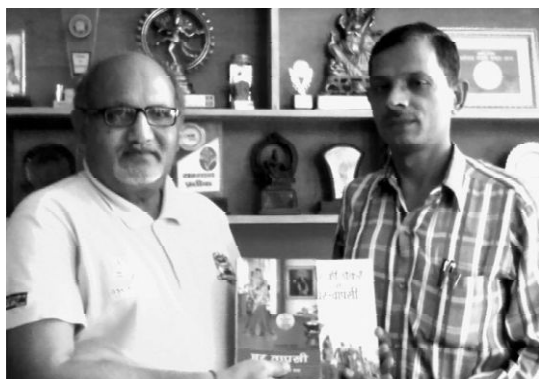


मेरे पतिदेव एवं मार्गदर्शक
मेरी आत्मकथा की पुस्तक
आचार्य जितेंद्र को भेंट
करते हुए

युग परिवर्तन के लिए आज के युग में ऐसी
ही नारी की आवश्यकता है।

- आचार्य जितेंद्र

मेरे पतिदेव एवं
मार्गदर्शक मेरी आत्मकथा
की पुस्तक प्रसिद्ध लेखक
मदनलाल वर्मा 'क्रांत' को
भेंट करते हुए



यह किसी साधारण नारी की कहानी नहीं, यह
तो जीता-जागता प्रेरक इतिहास है।

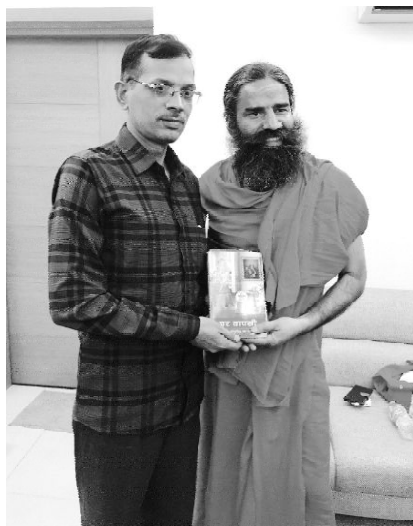
-एमएल वर्मा 'क्रांत'

वाह ताज! फरहाना ताज तुम्हारी
आत्मकथा पढ़कर गर्व और गौरव
से रोमांचित हो उठी।

- साध्वी विभानंद गिरि



प्रख्यात साध्वी विभानंद गिरि को अपनी पुस्तक
'वेदों में विज्ञान', भेंट करती हुई



फरहाना ताज का आदर्श
एवं संघर्षपूर्ण जीवन हर
किसी के लिए प्रेरणादायक
हो सकता है।

- बाबा रामदेव

मेरे पतिदेव एवं मार्गदर्शक मेरी आत्मकथा की पुस्तक
बाबा रामदेव को भेंट करते हुए